इअ'नश्रेय'व्यम्य

सेतुनासुस्रभा



अह्र द्रायाया

अभा क्रेंन'न्यॅब'ळॅब'गी'न्नब्यन। ननेय'न। क्रुय'ळन'न्न'अ'नेब'ळेब।

ग्रुसम्मावयात्रुसर्दिन्तुरस्यान्त्रिस्यः	1
न्द्रे (क्रं स्थित स्थित स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था	
५८:मू. (क्र्याम्बेशक्षाम्यादेशमा)याम्ब्रेश	
<u> </u>	
বাইসামা(র্বাশাস্ক্রশান্ধ্রীবারা)নাবাধ্রমা	
न्दःसॅ (नाबन्य:बु:नाक्केश:स्य:)यनासुस्य	
न्द्रमें (म्ब्रियः चुःस्ट्रम्ब्युयः द्रम्बार्यः)त्यः मृद्धेश	
५८.स्. (योध्रेश.लाच.स.मंग्री.संट.याश्रीका.रेयाया.स.)	3
মৃষ্ট্রিশ্বাস্থা (ব্যক্টিশ্বাস্থা ব্যক্তি প্রের্মান্ ব্যক্তি ব	4
মৃষ্ট্ৰিশ্ব (নাৰ্থ সুনাষ্ট্ৰণ শ্ৰী ই ই ৰ্ম না স্ত্ৰ হ'ন ') অ'মৃষ্ট্ৰিশা	8
न्दःसॅ (बर्न् _{र प्रभूवः})याजिश	
५८:मू. (वाबका श्रेका श्री अस्त्र हिन्द्र अवा श्रुट्य प्रिम्	
<u> </u>	
বাইপ্রমে (শ্রম্বর্থন্ত্র্র্ন্র্ন্ত্ব্র্ন্ত্ন্ত	
५८:सी (म्ब्रायदे नर्गे ५ प्रांदे प्रांदे प्रांच प्र	
• 1	

न्गारःळग

মৃদ্ধিপ্র-ম-প্র-)অ-মাধ্যুমা	21
	22
५८:मू. (वक्तान्त्र्म्प्तः)भी	22
यहिरामा (देवे स्वत्त्वानामा)दे।	22
	26
	26
Δ	27
~	27
	27
	30
गहिरान (अविवर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र प्रायम प्रेत्र विवर्ष प्रायम विवर्य प्रायम विवर्य प्र	31
55:र्से (_{5र्स्स}) दे	31
गहिरामा (देश श्रुव परि क्रां श्री	33
याशुक्षःसः(वर्ह्न-५:र्वे व्यक्-न्वावाःचः)द्री	36

বাই শম (ইন্শন নাৰ্ব শ্ৰী দ্বানান) ম বাই শা	40
५८.सू. (श्चे. अष्ट्ये. ८६ अ.स्.स्.सू.सू.स्.स्य.स्य.स्य.स्य.स.स्य.स.स्य.स.स्य.स.स्य.स.स्य.स.स.स्य.स.स.स.स	40
মৃষ্টিশ্বামা (প্রবাদ্রী ইশব্দাব্দাব্দাব্দাব্দাব্দা) অ'মন্ত্রী	
न्दःसि (म्रुव्यानःन्दःह्रुव्याम्द्रेगःन्दः मन्त्रामःव्यान्वानः)दे ।	
মৃত্তিশ্বামান্ত অনুষ্ঠান্ত ক্ষিত্র ক	
মার্থাস্থান্ (বই.জ.বর্ষুপ.য়ড়.ৼয়৸৽ড়ৢ৵.ৼয়৸য়.ড়ৢ৵.ৼয়৸য়.ড়	
नवि'न'(विकासायाप्यत्मनास्त्रस्थे खूदानवे ह्नाका ग्रीकान्नामा)दे।	
गहिरामा (रदासळव द्रिंश सं रामसून मा) वि	
মাধ্যমান (য়ৣ৽য়ড়৾৾য়ৢ৽য়ৢঢ়ঀৣ৽৸৴৸য়	
न्दः सॅ · (५ ब्रे ·न·५ क्ष.) ने ।	
নাষ্ট্ৰ শ'শ'((ইন্সুন্)ব্য	50
মাধ্যমান (মহামান্ত্ৰ দিন্দ্ৰ বাৰ্থ ন্ত্ৰমান্ৰ বিশ্ব বাৰ্থ নত্ত্ব বাৰ্থ নত্ত্ব বাৰ্থ নত্ত্ব বাৰ্থ বাৰ্	51
५८.सू (रट.शक्ष्यं वाड्या संवाविता संदानविता स	
বাই্ট্রসামা (ই অ স্ক্রিন্ স্থান স	
८८:इ. (बिरायवीयाः ह्रींटायः)	

गहिरामा (देनामान प्रत्यायान श्रम्य) है।
বাধ্যমান (র্লুব্যমার্ক্রমান্ধ্রুবাদের মান্ত্র্বানেধূবান) মাবাদ্ধি মা
55. र्स. (२६४) है।
বাইপ্রমা (ইন্সুনা) মাবাধ্যুমা
५८:द्री (हेशन्यमाळन्याक्षेत्रायामार्वेन्यामहे
गहिरापा(इरापाळ्पाळ्पाळ्पाचरावरावरावेदाप्वेचावा)द्या
সাধ্যমান (য়৾৽য়৾য়ৢয়ৢ৽য়ৼয়য়৽য়৽য়য়ৢয়ৢ৽য়৽)ঽ৾৾
বাইশ্বান (देर আইশার্য) প্রাবাইশা
5्रांसे (ब्रह्म स्वादेश क्षेत्र का विश्वे क्ष का विश्वे का का क्षेत्र का
रट हैं। परेश राम परिवर्ष कर राष्ट्र कर सामुद गार्श आ पी द राम
ह र्न् न्वी
हिन्यम्मे भेषाळन्यास्मात्रुयान् केन्यान्
र्नेव न र् न न न न न न न न न न न न न न न न न
ব্যষ্টিশ্বংশ্বর্জন্ন) অ'ব্যষ্টিশ্ব
५८:मू. (४८:श्वे. १८६ मायदे: क्वें. १८ १ मा शुक्राणीव १४ १ ५ १ मा शुक्राणीव १४ १ मा शुक्रा

५८दी (विद्वाला बानवे से ह्वाम हिंग्या सवे क्विं हे या द्या हु त्य क्ष्र या) या गुरा	78
<u> </u>	78
गहिरामा (वर्षे रार्च्य क्षा क्षा व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्य	
५८:स्. (श.६व.त.र्ट्शक्ष.भूट.२.व्य.व.क्ट.व.)	78
মৃষ্টিশ্বাস্থ্য (ইন্টান্ম্ব্র দ্বাবাস্থ্য) মৃষ্টিশা	79
5८:मॅ. (अर्द्र-प्रमुद्धः)चे।	79
মৃষ্ট্ৰ ম'ম'(কুম'নন্দ্ৰ,')অ'মাধ্যুমা	
५८:सॅ (श्रुवाह्याशायावहेदायदे हेशप्रयाप्य स्टासळ्दायावदे छ्वा)दे	
गहिरामा (न्याया प्रते हे सान्या प्रते वा प्रते	
५८:द्रा. (य.र्झ्याय.राष्ट्र.ध्याय.त्य.र्चा.)द्री	
गहिरामा (भूर भूर)दी	
गशुस्य (त्यायान् भ्रेया भारत्या भारता र्श्वे मानते । ध्याया महत्या भारता स्वाया । वि	92
ग्रुस्रायं (देर्यायी क्रुप्यळं ते) त्याय हिया	
५८:स्. (श्रुवःस्योशायाः वहेवः वादः हे शाद्यवाः द्रिशः वायाः वहेवः वादेः क्रुः शळवः)द्रे।	
गहिरामा (न्याया ह्या राज्य नहेदारा प्रचेता प्रचेता स्वेता मुंग्यळ दे)दे।	

বা্ধ্যুম'ন'(র্ন্ন্ন্ধু'ন')ব্য	6
गहिरापा(रवाशायदेः से ह्वायासर्देव सुसाळे दास्य हेवाशायर वसूत्र या श्रीसा 9	6
५८:में (प्रविकाक्की स्त्रां स्वास्त्र श्री सामी सामी सामी सामी सामी सामी सामी साम	6
বাই শ'ম'(য়ৢদ্র ই শদ্বন্দ্র শ্রাম শ্রাম শ্রাম শ্রাম প্রাম প্রম প্রাম প্রম প্রাম প্রম প্রাম প্রম প্রাম প্রম প্রম প্রম প্রম প্রম প্রম প্রম প্র	8
५८:मॅ.(इस.२म्म.म्स.व्यायःक्ष)च्री	8
	01
	02
বা্ধ্যম'শ'(ন্ৰের্দ্ন্ন্নিদ্ন্ন্ন্ন্ম')অ'বাইশা1	03
५८.स्. (यावय.म्. अ.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.	03
স্ট্রিশ্বাস্থ্র মূর্ণাব্ধুরা)বি	07
স্ট্রিস্মেম (গ্রেস্মেম ই ক্রিম গ্রি: ক্রিস্মে গ্রেম ব্যাধ্যম এর মান্বাবার প্রমা আরা 1	08
५८.इ. (बाबब.वर्ह्-१नबाबानः) है।	08
বাইশ্বস্থ (ক্রন্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স্থ স	11
স্থ্যসম্প্রেম্প্রিম্প্রা	11

गहिकासाअर्देव शुक्षास्टामी देश्वी त्याविषा सम्हिषा साद्यापा साव
সৃষ্ট্ৰা
५८:मू.(यह्व.श्यायक्टाय.)य.याहेश
५८:मॅ (बर्स्व:शुक्ष:ग्रीक:वक्ष्व:क्षेत्र)त्य:पाहिका
५८:मू.(अर्ट्ब:श्रंशह्माज्ञय:५:वश्चुवःयः)पःगशुम्रा
५८:र्से (भ्रुवाबेदादर्गेदाया) त्यापा है आ
५८:द्री.(शर्ट्य:श्रेश:श्
ग्हेश्राम् (हेशम्यामी श्वुन द्वाया) या
५८:द्री.(२४८:५४:६ूबा:ब्रय:५.५३८ूब्य:४.)द्री
বাইশ্যাবিশার্টিকার বিশ্বিকার
५८:द्रॅ. (अर्बेट:हॅ्या:पांडेया:पु:बोद:पांदे:क्रु:अळव्:)देे
নান্ধ্যমে (র্মিন্ট্রম) নানান্ধ্যা
५८:द्री (५वट वेश सुवा वा कट केट वहुवा चर प्रवा वा श्वर
বাই শ'ম'(ইই'অর'ন্নানাম')অ'বাই শা
55:में (र्ह्न प्रमण प्राप्त) है।

বাইশ্বাব্যব্য)ই।	. 125
স্ট্রিশ্স'শ'(এম:গ্রুম্পারর'গ্রী:শ্রুমার্রিস্পান্য')শে'স্ট্রিশা	. 126
५८.सू. (२२८.सू.कशः श्रेशः सद्धः स्वायः रवावाः सः)सू	. 126
गहिराम् (देशम्बर्याप्टावेग्रायः)है।	. 128
মার্কাম'(ব্দ্রেলী শ্লুব শ্লুব বিশ্ব বিশ্বর বিশ্ব	. 129
५८.५.(२२८.७) ४.५५.१ ब्री.५.१ व्याचाता. १८.१ व्याचाता.	. 129
५८:मू. (वियास स्थित स्था)	. 129
নাইশ্বাশন্ন্ন্ন্)ই।	. 130
ପାର୍ମ୍ବର.ମ.(ଞ୍ରିଧାନାଞ୍ଜନାଧ୍ୟକ୍ଷିଥାସ.) ପା.ପାର୍ମିକା	. 130
५८.सू. (श्वर व्यः स्वायः स्वायः स्वायः व्यायः व्यः व्यायः वयः व्यायः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः व	. 131
गहिरापा(दे:श्वरावायावर्ष्यद्राप्त्र्राप्त्रायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय	. 132
५८.सू.(व्ह्र्र.वर्.दर्.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.सू.	
নাইশ্বা(ইৠহ্বা)ই।	
ग्रुअ'र्'(हॅन्चेन्स्ननहॅन्चर्त्ननव्दःचेन्नन्नेभव्हन्नन्तेभव्हन्तःसेव्यन्तः	
५८.सू. (विर.क्र्.स.र्ट्र्य.विषयः स्ट्रेंट्र.क्र.सू.विर्यः स्ट्रेंट्र्यः)दी	

न्ग्राम:ळग्

गाँदेशमा (हिन्हें अर्देव नावव नर्गे अव से नाय उव साय ज उर प्रयान मध्य पा	138
ग्रुअ'म'(५१४ अ८-५८-वहतः अ८-वी छिर-वरः)ते	141
ग्रुअपः (देनाकर्न्द्रमान्द्रमेन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्स	ı 142
५८:में (५:सावा:भ्राम्डिमावह्मामवे:क्रुःसळ्दासर्भरःम)	142
মান্ত্র সামা (ক্রুশ্রম স্বর্পন্ন) আ সান্ত্রি আ	
55.我.(美之歌:) 身	144
गहेशन (भूदे निह्न स्थान विद्या) या या शुर्या	146
५८:मू. (अ.वर्र्र.सव.ब्र्यायास्त्रव.व्यूट.य.)	146
गुरु राम (वर्ष्ट्रम्बरे स्वाप्यान्या) है।	149
মার্মাম (শ্রুম নালব মিল নাই দ্দ্র্নিম নাই শ্রুম মক্তব) বি	151
ग्रुअप् प (र्विन्धु न)दे।	
गहिरामाञ्चाञ्चे राहेनामाधिरामान्यामानामानामाहिरा	153
८८.सू. (क.मु.च) व्यक्ति स्वह्ने व.स्व. वे का.सक. क्रूंट स्वते ह्माका ग्रीका द्याया सः) दे ।	153
স্ঠিশ্স'ম'(ইল্শ'ন্ন্ন্ন্ত্র্শুশ'ন্ন্ন্ন্ন্')বি	153

गहिरायासदिन शुर्साहेगायाधेवायायाचे दा हो दा द्वींदा	
रा.ज.चिष्ठेश	. 155
<u> </u>	155
५८:मू. (बाबुबायायहें वार्श्वेट्रासेट्रास्याया) है।	155
गहिकामः(वन्यामःइक्'मःश्चेन्ममःश्चामः)वे	157
可刻みで、(エエ:ぬばず、ぬぎて、なな、うれ、うれ、おか、ないない。) では、	
५८:स्. (वयानान्व्रिन्या)	161
गहिरामा (न्यर विकाद रहें वा या चाद द र र ज्ञाव या)दी	162
ग्रुअप्र'(देवेज्यक्रन्यायाप्यः)दे।	162
মৃষ্ট্র শ'ম'(র্ন্ব্ন্ধুন')আ	
गहिरायासळ्यानिवेदार्या हुर्य हो नायायली	
५८.स्. (२४८.स्य. अस्य. अस.)त्य.या श्रीसा	
न्दःसे (न्नरःक्ष्यःग्रे प्रास्त्रन् से त्यम् प्रास्त्र राष्ट्रम् राष्ट्रम् प्रास्त्र राष्ट्रम् र	
মান্ত্র সামে (ই্মান্তর বের বিন্ধের বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র	
५८:स्. (यर्ट्-२८:वर्षायान:श्रदःतः) दे ।	

স্ঠিশস (য়ৄর-দ্র্র্র-দ্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্	. 172
55.स्.(२६४)	. 172
নাষ্ট্ৰ শ'ন' (ক্রিয়ন) শ'নাষ্ট্ৰ শা	. 174
५८:मू. (हेबाबार्श्वाश्चर्यश्चरावश्चरावश्चरावश्चरावश्चरावश्चरा)	. 174
মান্ত্র শ্বাসাধ্য (শ্বাস্থ্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন্য ন	. 176
55.स्. (व्यान:र्म्ट्स) है।	. 176
স্ঠিশ্ব'(শ্বার্ক্তবা্ধাবাভিবা্দু:য়৾৽য়্র-স্বর্বাক্তব্ব্রা)শেস্ট্রিশা	
55. द्वा क्षु क्रिं वा अप्योद प्रशास्त्रा अप्यादे का से दावा के वा वी प्रत्वा के दाये दाया वा प्राप्त का से दाय	. 177
55. मुं (क्रिश्यम् प्रत्वत् प्राः) ने ।	. 180
गहिरान् (द्वानसूर्यात्वरान्वराने वाहेना सेन् नु गुनाया) दे।	. 182
বাধ্যম'ম'(য়ৼ৾য়ৼয়	. 183
५८:मूर्यं (बूर्यक्ष्र्रायक्षेर्युवाबुर्यं र्वायक्षेर्यं क्ष्र्यं क्ष्रेर्यं क्ष्र्यं क्ष्रेर्यं क्ष्रे	. 183
५८:4्रॅं. (₹५:४:)दें।	. 183
गहिशामात्यदायागिहिश।	. 184
८८.स्.(ब्रे.स्य.ब्रे.स्व.म्य.य.बर्थ.यव्यायायायहेव.य्याययायायाचे	184

55.द्व. (अर्द्र र.चक्रूब.च.)दे।	184
বাইশ্বন (য়ৢয়য়য়য়ঀঀয়৸)য়য়৾ঽয়ৢ	186
55.5.(ब्रे.स्य.र्ट्ब.चगावा.संवे.रेचर.रे.वेश.बेश.क्ष्य.बेश.क्ष्य.वेश.क्ष्य.वेश.क्ष्य.वेश.क्ष्य.	
শ্ৰুষা	187
५८:म् (श्वरः नः क्ष्ररः ५ : यदेव व : ५ गागा : से : वु शः राः) दे ।	187
মৃষ্টিপ্স'ম'(শ্বুদ'ন'৽ৼুদ'য়৾৽নदेद'য়৾ঽ৽য়য়৽য়৽)আ'মৃষ্টিপা	187
५८:द्रीं (श्रे:र्स्वःर्द्र्वःवःनर्वे, यःचवे मा बुदःवहें वः ह्यामा ब्ववः द्यामा परः)	188
महिरान्।(वरःक्रायायायहूँगायवेषात्र्वात्वहूँगायवेषात्र्वात्वहूँगायविष्ट्रा	188
বার্সমান (৻ব্শাল্লাবানার ব্রা	189
८८.सू.(यांध्रेशःक्षूटःज्रेशःसंद्रःयोष्ट्रश्चायशःशःचीयःसः)ता.या.यांध्रुशा	190
55:देर्र (क्षेषार्द् _व)दे	190
ন্ধিম'ন'(য়য়য়য়৸য়ৢয়৸য়য়৸য়	190
५८:मूर्अं (बुद्राक्षेट्रायाधेद्रायदेव्यदेव्यविक्षायाविक्षाच्याविक्षाया	190
万下・発・(***********************************	190
বাই শ'ন'(মॐব্'ভ্ৰই'দ্ৰ্ভ্ৰ'ন')ই।	191

गहिरामा (र्देव न्यायंत्रे यनेव याहे स्थर क्ष्या सु त्वर यते क्ष्या) दे।	195
गहिरामा (महिराक्ष्यास्य म्युनामा)दे ।	195
ग्रुअ'रा'(ग्रुरप्देवःह्रअः मन्द्रणेः स्टर्निक्षेत्रः मुक्षः महत्रक्षेत्रः महेवः महेव	ो ५ -धरः
नभूत्रसंदे सर्दे दे दे दे तु नु नु न र) दे ।	197
गहिराप (विद्वापया सुरया प्रेति प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स्वापत	198
বার্সমন (ৼূন্রন) মাবার্স	199
५८:म्. (विश्वताक्ष्रमःक्षेत्रे चाक्का स्रोत्तर स्थान क्ष्रमान)	199
गहिरामा (दिवाद्यानदेवायात्रायायायायात्रामा स्वापन स	
মৃষ্ট্র শেশ (খ্রি: ইলাক্রী: ইরাদমাস্ত্রমেশনটো নুনন্দ্র ভারমান্তর শান্তর	
5८:म्.(२६४)	203
गहेशमा(५७६८ वया माञ्चरामा)दे।	
गहिरा (((व व व व व व व व व व व व व व व व	ব্ৰব্ধুব্ৰব
শৃঙ্খুমা	207
५८:में (नःबरादेः व्यवादः स्वादराष्ट्रवादरास्त्रे वहें वादरास्वयातः)	207
মাপ্তিমানে (ইনা.হম.ই.ম.বেছ্রেম.মান্মান্ম.হর.মূ).ধৌমাশনোলেনমান্মন্ম,)প্র	

न्गरःळग

.1
.2
.3
.3
.5
.6
.6
.7
.7
.9
.9
.9
20
23

५८.स्. (वयाचन्दरसंदेश्ववः)स्	223
মৃদ্ধিশ্বাস্থান্ত্র শাহাই ব্যার্)ই।	
মার্মেমে (दे.क. ৻ ইন্নে য়ৄন্ন) মে মার্মা	
न्द्रें (धुलादेशस्त्रेन्प्रहें व्यव्यानः श्रुट्नः	
गहिराम् (देवे म्ब्रुम् स्थान् नम् सर्वे द्वाद्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्थान स्था	
ग्रुअ'रा'(दे'प्यम्'त्याबुद्रायद्देव'स्रे'प्यम्'र्यः भेद्री	
यश्रिम् स्टर्भिया सर्दिन श्रुम् त्या यहिना	229
「「(***********************************	229
মান্ত্ৰ সাম (মান্ত্ৰ মান্ত্ৰ মান্ত মান্ত্ৰ মান্ত্ৰ মান্ত্ৰ মান্ত্ৰ মান্ত্ৰ মান্ত মান্ত্ৰ মান্ত	230
५८.स्. (यदे.श्र्योश्वरःमी.वृष्ठाःस्ट्रेंट्रसःट्योवाःसः)त्यःमहिष्ठा	230
५८:मू. (व्हूर्यक्टूर्य)	
মৃষ্ট্র শ্বান্ত্র প্রা	231
५८.मू. (२४८.७) स.त्व्र. की. कू. १८.४ व. १८.५ व. १८.५ व. १९४१ की. क्षेत्र. की. १९४१ की. की. व. १८.५ व. व. १८.४ व. व. १८.४ व. व. १८.४ व.	231
८८.स्. (श्चेर.लेश.सर.श्चेय.स.)स्	231
বাইশ্বা(ইড্রেন্ট্রন্ল্রর্ট্র্র্র্র্র্ন্ন্র্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ন্	

५८.सू. (म्. १. स. १ वे वे १ १ ४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	234
५८.मू. (यरे.शूबेश.स्ट.क्षेत्र.कुषे.कुष्य.संदु.स्वर.कुष्य.मुक्ष.भूष्य.मुक्ष.भूष्य.भूष	234
স্ট্রিস'ম'(য়ৢয়য়ৢয়য়৾য়৸য়ৢয়য়ৢয়য়ৢয়য়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়	235
সাধ্যুম'ম'(देवे खब 'द्याया'य') प' पवि	
५८.सू. (२४८.७) ४.मू.४.५५८.४५) १.४.मू.५४.मू.५४.मू.४.५६५४.४५५४.५५५)	236
गहिरापा(हेना'डर'वहें त'यांसे'वबर्'या) दे।	238
म्रुस्प (वर्ने व मुर्प्य वहें व व से से प्यत्र प्राप्त के प्यत्र प्राप्त के प्रम्	239
न्ते'न'(र्द्द्वाव्हेवायुःव्हेंद्वादान्ने नाव्हेंद्वाय्यावायान)	240
স্ট্রশ্ন (ইন্ড্ন্র্ন্র্ন্র্ন্র্ন্র্ন্র্ন্র্ন্ন্র্ন্ন্র্ন্	240
55.मू. (२.२८.धका.च.)मू	240
সৃষ্ট্ৰ শ্ব (৫ই दे : ব্যব্দ শ্ব	241
মান্ত্ৰ সামা (খ্ৰি ই ব ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক ক	
८८.स्. (यरे.श्र्याया.सं.)ता.या.सं.	
८८.स्. (इयाश्वास्याक्राश्वायायाः)	
স্ট্রিশ্বাশ্বালাব্র শ্রীশাব্দানার স্থানার শ্রীশাব্দানার স্থানার শ্রীশাব্দানার স্থানার শ্রীশাব্দানার স্থানার শ্রীশাব্দানার স্থানার শ্রীশাব্দানার শ্রীশাবদ্দানার শ্রীশাবদানার শ্রীশাবদ্দানার শ্রীশাবদ্দানার শ্রীশাবদ্দানার শ্রীশাবদ্দানার শ্	

न्ग्राम:ळग्

५८.स्. (ध्यायाः क्रीयाः न्यायाः न्यायाः क्री	245
महिरामा (देवे व्यव द्याया चा)त्या	. 247
বাইশ্বিষ্ণ শ্রী বিশ্ব বাইণ বিশ্ব বাই বা	249
५८.मू. (श्रेश्वश्रःश्वाचायदे:र्देव्यव्यू:चः)	. 249
বাইশ্বার্ (ই'অ'৻ইন্মাগ্র্নমা)অ'বাধ্যুমা	250
८८.स्.(ष्ट्र्भावाद्यः)स्	250
गहिरामा (इसम्मन्द्रस्य सम्मासम्बेद्रम्य से स्वतः द्वावासः) दे।	252
गशुस'म'(शेस्रशंस्रशं मुह्त्यासर्ह्र्ह्र्स्यम् सुह्त्वः)दे	253
निव न इया वर्ते मा अर्दे व सुसाया गिरेश	258
न्नः सिं (क्वेवेन्द्रं) ম' বা ধ্যু মা	. 258
५८.स्. (सळ्ब.क्रेट.) ड्री	. 258
স্ট্রিশ্ব'(মळंब'শ্ৰিটি'ন্ট্ৰ'ন')বী	. 259
মাঝুম'ম'(মর্জর'নাল্লি'শ্রুন'ম')বী	
বাই শ'ন' (য়লইব র্ম র্মন্বপ্রদ্বান্য) আ'বা ব্যুঝা	
५८:में (क्यापर्श्रें रासर्दिन शुक्षाश्ची सक्ते मानि)री	

न्गारःळग

ব্যন্তিশ্ব'(শল্পর্ন'ন্ট্র্ন')অ'ব্যন্তিশা	260
८८.स्. (क्र्बाज्यकी.स्ब.)ज.चाहेश	260
55.स्. (क्रिश्चर्च्चवर्चः)	
गहिरामः(र्वानश्चानः)दे।	
বা্ধ্যুম'ম'(ৠলুমান্ত্ৰীৰ্শ্বনান্ত্ৰনপদ্মা)ম'বাই্ধা	
हेंग'रा'र्देश'ग्राड्डर'रा'दे।	264
দুনা,খন,শু, পুৰা, শুনা,	264
55. मु. (अवतः प्राप्तः) दे।	264
মান্ট্র শ'শ'(ঞ্জিলার্ন্র)ব্রি।	
गिरेश'रा'सर्दिन'शुस'सूर'सूर'त्य'गिरेश	
५८:द्रा. (क्रें. क्रें. क्रें. के. के. के.	
বাই শ'ম'(ঐ বই দ্র্লিশম') শ'বাই শা	
५८.मू.(१०१० अर्च अंशके के क	
万二式・(***(********************************	
মৃষ্ট্র শ'ম'(ক্রুশ'নপ্র')বি	

273
273
275
র্ঘি-শন্ত
276
276
279
.ब्रब.2.
281
282
282
283
283
284
289

५८:स्. (क्र्यंत्रम्भःक्रमःचन्त्रमः)त्यःयष्ट्रिश	290
_	290
	290
	291
	291
	293
	293
	298
	298
	300
নাপ্রমান্ (ইন্ন্স্ন্ন)বী	306
गहिरामान्य में किंद्र विश्वराय महिरा	308
5८:मू. (२वावा:य:र्ट्स.)	308
गहेरा'त'(ब्रे:र्वाव्हर-ब्रूट-वर्गवाय-वर्श्वट-वर)व्यायायुवा	313

५८.स्. (वाबर वह बाह का बार्ट र प्राची वार्ट) त्या या शुरु।	313
५८.सू. (ब्रि.स्व.सूथ.वर्षेश.सपु.वाबिट.पहूब.ह्य.घ.२२.२वावी.स.)सू	
गहिरामा (हेरामाने व्याप्तेयाविमाविमाविमाविमाविमाविमाविमाविमाविमाविम	314
ग्रुसम्(देख्यव्यव्यक्ष्यः भूतः वर्ष	315
गहिरापा (देर बूर वहुवा केश सुन क्ष्र रा) दे।	317
মাধ্যুমামা (ম্চাইলা থের্মার্মার্মার্র ব্রা	
गहेशपः(धुःर्वायायायार्वेर्ध्याचेन्छ्यायात्र्वेत्राच्यायार्वेर्	319
५८:स्. (ब्रे.स्यार्यम्यस्यास्यस्यः विष्ट्रायः)	319
মৃষ্টিশ্বাম (খ্রি:ইঅ:ই্র:অাম্রইন্মের:ह্বাশন্ব্রিন্ম) অাম্টিশা	
55. मूर्त (क्ष्म क्ष्म) दे	
মৃষ্টিশ্ব (নাদ্র ক্রেনাখ ক্রম্নান্ন নীশ বেশ্রব না নাদ্র শিল্প নাম	
न्दः सॅ (ह्ना यः न्वॅ न् प्तः) ने	322
মৃষ্টিশ্বাস্থ্র্বামা)ব্র	322
মাধ্যম'ম'(देशमुन'দ্বেই)বি	
বাঝুম'ন'(ৣর্ব'বর্শনাধ্রশন্)থ'বাধ্বমা	

<u>५७</u>४:ळग

५८:में (क्ष्यं व्यव्यव्यः क्षे : क्ष्यं वाववाः) त्यः याद्वे रा	326
८८:सू. (श्रुव्ह्यं)यायाश्या	326
८८.सू. (बट.जब.पड्सूब.स.)	327
गहेशप(हेक्रप्तिक्ष्य)त्री	
শ্রম্মান (মন্দ্রন্দ্র্ন্ত্র্ন্ন)	
८८:इ. (प्यक्षःयःकःप्रद्यतःकः)द्गे।	
বাই শ'শ'(অন্ত্ৰশ্শ শ্ৰির)ব্য	329
বাই শ'ম'(খ্ৰি:ইঅ'শ্ৰি:ইব'য়৾৲'শ্ৰম'নাৰ্না'ই'য়ৢ৲'শ্ৰম'মা ্ম'বা শ্ৰুমা	
५८:सॅ.(व्यक्ष:वी:वश्चैव:वा.)स्री	
বাইশ্বার্ ব্যার্ ব্যার্থ বা	
५८:सॅ (व्हेंब्क्स संस्था संदास स्थापा ना सूरा ना)दे।	
ব্যষ্টিশ্বাস্থা (য়৸৽য়য়৽৻য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়	
সা্ধ্যুম'শ'(২৮:ইল্বেশ্ব্ৰশ্ব্ৰশ্ব্ৰশ্বইৰ্ন্বন্পদ্শ')বী	
ম্ব্রমান (ন্র্র্ণান্গ্র্নান্র্র্না)ব্র	
মৃত্তিকাশে (ইণ্ট্রিশ্বক্রিকাল্যক্রাল্যন্ত্র্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্বাল্যন্ত্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্	

५८:द्री (ळं ५:वज्ञ थ:ग्री:क्य मावना:हे:क्ष्र र खूट च मवेव प्येव पर)दे ।	. 340
८८:मू. (२वाबान्य:र्वेश)	. 343
মৃদ্ধিসামা (ৼূর্নাশ্বনা)বী	. 344
স্কুষ্ণ (য়য়ৼ৾ঀৢ৽য়৾ঀৢ৽য়৾ঀ৽য়৾ঀ৽য়য়ৢঀ৽য়ৼ৽য়য়য়য়য়ৢঀ৽য়৽)ঽ	. 346
गहेशपाळंद्रप्रश्राणीः इसमाविषाः दे प्रवाप्यवद्रास्यः	
নশ্বুন'ম'শে'নাইশা	. 349
५८.मू. (म्. क्ष्यापिष्ठभःभ्रुवायवेःदेवाभायः)यः पाष्ठिश	. 350
५८:में (सुवाक्षेत्रादे स्थे क्षेत्रायाधित्रा ब्षेत्रायवे देवात्रायत्रायसूत्रायः)या व्या	. 350
८८.मू. (१५.४०.४८४४४४४४४५) त्य. यहिया	. 350
५८.स्. (ब्रियोश.प्यट.मु.योथिट.क.यष्ट्रेये.स्योश.स.)ज.याश्वेश	. 350
५८.सू. (ब्रियोश.शिरायीयीथिर.ज.यहेथ.वंश्वरायकर.यह.वंड्य.)ज.य.यहेश	
५८:में (म्बुट:र्नेव:रट:अळव:८ट:थ्व:पवे:लेशप:यानहेव:वशाळ्यामहेशनश्चुन:या)वे।	
মান্ত্রী শ'ম'(ই'দ্দ'য় 'শুর'য়য় 'ঀ৾য়	
万二発で(元本で) 奇[
ব্দ্ধিস্ম্ম্ (ৼূন্খ্র্ম্)অ'বাধ্যুমা	

५८:द्राः (इवःचश्रः देवाश्रः देवः वालवः व्यद्देवः यः द्वावाः यः)द्री	353
महिरामा (व्यवः सेवः वर् चेरः वहेवः यः द्यायाः यः)दे	354
স্কুষ্ম'ম'(গ্রি:ইঅ:২১:অক্র'শ্রুড়ের্র্ড্র'ড়গ্রুড়্র্ড্র্ড্র্ণ্ড্র্ড্র্ড্র্ড্র্ড্র্ড্র্ড্র	354
गहेश्यः(ई क्षूर पळ ५ पते क्षूता) या गुरा	358
55. द्वा. (क्वा. प्रवर्ग प्रवर्ग प्रवर्ग प्रवर्ग प्रवर्ग प्रविष्	358
गहिशामा (इसासेन् से प्यम् पा) दे।	
ग्रुअ'म'(र्व'नशु'न')दे।	363
ग्रुअपः (सुरदेः वः नहेत्त्र व वः इसः वर्षे वः सहं र प्रवः देवा वः यः वावतः न सूतः सः) यः ग्रुसः .	364
८८:द्री (क्वें खंबा महिका पाठव ५५ खूव छेना ५ सेना वादेश ग्री वादक्षुव पार)दे।	364
বাষ্ট্র শ'ম'(৻ৼৄ৴৸য়৸৸)ব্যবাষ্ট্রপা	
५८:मू. (ब्रेट्स प्रतः क्षुवः ब्रेट्स वावायः) यः प्रति मा	
५८: दें (क्षेत्रार्देव:)दें।	366
মৃষ্টিশ্ব'(র্ম'ইল্মইল্মইল্ম্র্মাইশল্র্ন')বি	367
মৃষ্টিশ্বাম (য়ঀয়য়৾ঀয়৾ঀয়ৢঀয়য়য়য়)য়	
5८.सू.(^{क्क.} .पर्यश्र.प्रबट.स.श्रट.य.)ध्री	

गहित्रामा (व्यक्ष ह्वाका स्वाका स्वाक्ष प्राप्त व्यक्ष प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र	. 371
নাপ্তাপ্তামান (ইর্ন্স্পূর্ন) বী	. 375
गहेशमा इस वर्षेया सहर पार्र हिर्गी शरी ग्रामा ग्राव्य	
নমূর্দ্রে নাষ্ট্রমা	. 376
५८:में (५न८:वेशसायह्नयानायानहेनानशक्तें रहेवानहेशस्यानहेनान्।	. 376
गहिरामा (व्यक्तियामायामहेदाद्याम्यामहेदाद्याम्यामा)दी	. 378
गहिरायाधीःर्रेयावरायाञ्चररायराळ्यामहिरासुनायदेः	
ইন্সান্থানাগ্ৰুমা	. 382
55. मू. (देवायायाया वर्डे राया) है।	. 382
মৃষ্ট্র শ্বাস্থান্র বিশ্বনান্র প্রমা	. 382
५८:द्री. (लीकार्चरःचरःकी:बैराचकु:बिरासरःकी:लब्धर्येष्ये रेवायासः)द्री	. 383
স্ট্রিস'ম'(শ্বুদ্বেরাশ্বর্ধারাশ্বর্ধার্শ্রীপের্ব্বেশ্বাশ্বর্ণ)ব্রি	. 383
ग्रुस्पः (वर्षः द्वरःवः वहेदः वदेः वदः द्वावः वः)दे।	. 387
নাধ্যমান (ই্র্ন্স্খূন) বী	. 389
गशुस्रासः र्ह्नवामित्रः श्रुवासितः रेग्रासः ग्वितः वसूतः	
ম'ম'বাইশা	. 390

५८.स्. (इयायान्ट्र्य)	390
বাইশ্বাস্থ্য (ব্ৰাস্ক্র্র্ন্স্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্র্ব্র্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্ব্ব্যুক্ত্ব্ব্যুক্ত্ব্যুক্ত্ব্ব্য	
गिर्देशस्य स्टार्समा श्रुच संदे से ग्रामा स्थापिर्देश	395
५८.स्. (इवाश्वर्यक्ष्यश्चावर्यः)	396
মান্ত্র মান্ত্র বিশ্ব মান্ত্র ক্রি মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত	
५८.मू. (ब्रिट्डिट्ड्रेट्ड्र्याववर्डीश.ब्रिट्याच्यायाः)यात्रेश	
५८.मू. (ब्रॅ. शह्र के कि के	397
५८.मू. (ब्र्.क.ब्र.क.च.च्याच.च.)ज.च.कुगा	397
५८.स्. (श्रूरायाविष्याचा १६)	397
মৃত্তিশ্বের দ্বাবাবে) থ সৃত্তি শা	
८८.स्. (र्ट्स्य क्षे क्ष्रॅट वर म्बय वर)	
বাইশ্ব (ইই অব হ্ৰাৰা হা) থে বা শ্ব শ্বা	
५८.सू. (र्ट्रेब.२८.४२.२.९४)र्ट्रेब.५४०.५४५.क्. अष्ट्रेब.२५.४७.४४८.४८.४५.४०.४५	
মান্ত শ'ম'(বহ'ন'ছিদ্'বন'ডব'ল্লু'মঊব'দ্'ম্ম'বন্ধদ্'ম)বী	
याशुस्राम् (वर् वहिन्वहिन्रायान्यामायः)द्री	

বাইসমে (ব্যাম র্য়্যার্য বার্য	404
५८:सु. (यश्वायंत्रं रूवं यहेवायः)	404
বাইশ্বান বেইনাশ বে বাবাৰে) অ বাইশা	405
५८:मूर् (योशवा कुरे वाशक क्ष्या वाष्ट्र का योष्ट्र का योष्ट्र का वाष्ट्र का व	
५८:मू. (सिवास्त्राच्याचराच्याचर)मू	405
गहिराम (ध्याकेशमध्याविष्ट्रमाम उत्तुन् स्थाय विषयम)या गहिरा	
५८:द्वा. (वयः यः प्वीप् यः)दी	
महिराम (देवे व्यव द्याया या)दी	
महिरामा (वार्यका ब्रेन्स्स्वी वन्वाकिन्धिव व स्र स्वा ब्रुव स्य)वि	
ग्रुअ'रा'(रदःदेग्रायायेद्वर्वर्वर्वर्वर्वर्वः)याग्रुया	
५८.स्. (इयोश्यान् रेयोश्यायोष्ट्रात्वयोश्यायोष्ट्री	
गहिराम (यदे र्श्वाश त्य प्रतः देवा यश्चुव यः)दे।	
মার্মেমে (প্রশন ইশনাপর শ্রীশ র্মু নের দের নের সামার কা	
55.स्. (२.८८.धका.च.२६४)	
মৃষ্টিশ্বাস্থ্য (ব্ৰিশ্বের ব্ৰাশ্বাস্থ্য) প্ৰামৃষ্টিশা	

८८ दे (वर्षे र बेर प्रेर प्रेर प्रेर प्र र विष्ट प्र प्र र विष्ट प्र प्र र विष्ट प्र प्र र विष्ट प्र	414
गाँदेशःसः(इत्यर्द्ध्रसःसर्द्द्रश्रुस्ययःदःइत्ययःतः)द्दे।	416
স্ট্রিশ্ব (হল ব্লিন্স্লিল স্তুম দ্বের্দির দেশ দ্বাবাদেশ) মে স্ট্রেশ্ব	
५८.सू. (४८.धू. ६वाश्वाश्वर ह्वाश्वर वर्ष्य श्वर वर्ष श्वर प्रक्ष वर्ष १९	
महिराम (दे वर्दे न व के वन्न न के वन	
५८.मू.(४८.कैर.ज.सू.सैव.सह.स्वाय.स्वाय.स्वाय.स.क्य.त्य.व्या.स.)ता.वारीया	
५८.सू. (२२८.शूचीश.जंश.चीविष्ट.धेवीश.श्री.शु.शु.शु.श्री.न्ट.च.)	
বাইশ্বিমার্থ (ব্ৰহার্থ বাশ ইব্দেশ্য শ্বার্থ শ্বিহার বাশ শ্বিশা	
55.5. (2山山は、左京が、)	
महिरामा (देवे व्यव द्याया यः) दे ।	
ग्रुअ'र्ग (रूट:ब्रॅवे:कॅशह्न्यश्रु:ब्रे:कुट:वर)य'ग्रेश	
८८.सू.(धुषु.इश.श.बीर.सषु.धुषु.कूश.ध्यात्रात्रा.श्र.भ्र.थ.री.री.	
महिराम्वन ह्वाराश्चर हेवा विष्ट हैवा हैवा विष्ट हैवा वि	
মান্ত্ৰ শাংমা (মন স্ক্ৰাৰ্শ্লিশা দু: শ্বুমান বেৰ্থ পাৰাই শান্ত্ৰ স্থান কৰি সামা বিশ্বস্থা পাৰ্য স্থা	
५८.५. (व्येषायादेशाचेराची क्रि.	

স্ঠিশ্স'শ'(বিষ্ণেব্যক্ষালাৰ্ব্যক্তুব্যক্ত)ক্লি'আহান্ত্রীক্ষান্ত্র্যান্ত্রী
ম্পুষ্ম ম (র্ন্ন হ্রম নাল্ব শ্রীম র্ম্তু ম নাম নার্নি ম নাল্ব ম নান্নি ম নাল্ব ম নান্নি ম নাল্ব ম নান্নি ম নাল্ব ম না
५५:द्रॅ.(ब्रॅ.क्.ब्रे.च्राच्याचायाचे८.२.क्र.च्यर.च.)द्री
বাষ্ট্র শ'শ'(दे'অ'ইব্'শর্মুব্'ন')বী
न्युअप्राप्तः(देशव्याप्तरः देवाप्तेशप्यमः विश्वायोव प्तर्वेशप्यः) दे।
गहिरामा प्रति स्वारा श्रीराम्य मित्रामा स्वारामा स्वारामा स्वारामा स्वारामा स्वारामा स्वारामा स्वारामा स्वाराम
55:दें (यर्देर प्रकृतः)दे।
বাষ্ট্রমান (ক্রমানপ্র) মাব্রিমা
55. में (रत्येवासेन्वासेन्वासेवोचेर्या केवास्य विषय विषय स्थिते विषय स्थिते स्थित स्थत स्थित स्थत स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थि
55:दें (व्यान प्वेत्पा) दे ।
বাই শ'ম'(ইই'অৱ'ন্নানান')অ'বাই শা
५८:द्रीं (भे ने देर वेदे क मुद्द के अन्तर के अन्
55. द्व. (क.र्ब.भ.स.दी.भरदे.चर.रे.वोष्यंत्रः रे.चोष्यंत्रः रे.चेष्यं
ग्हें रापा (क्रंदे द्वा केवा कर क्षे प्राया प्यार के राधा दे प्यादा के राधा दे प्रादा के राधा दे प्यादा के राधा दे राध
মৃষ্টিশ্বাসা(ব্যুম্মগন্ধবার্ক্লাব্যুম্বামান্ধবাশান্ধবাশান্ধা)আমৃষ্টিশা 441

५८.मू. (र्स्व वहंब वहंब रिंहें न्दः क्वें ने क्वें ने हिंद होने हैं का नोवद रें या हो का क्वें का ने का निवास के निवास के का न	441
५८.सू. (श्रूर.वेर.इश.यावध.स.झैल.चर.भ्रै.च.स.तबर.स.)	
गहिराम (क्षेत्राव्यक्षःक्षुः नःक्षेत्वक्षम्)यः गहिरा	
५८:सॅ (बयान न्वॅर्पा)दे।	
স্ট্রশ্ন (देवे অব দ্বাবাবা) প্র স্বা	444
५८.स.(२२८.७) श.मीश.सळ्सश.मी. १८४८.स.)	444
স্ট্রিস'ম'(৸ৢৢৢ৸য়য়য়য়য়য়য়ৢৄয়য়য়য়য়য়ৢৢয়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়	
म्रुसम्(महेशम्यद्शद्शस्येद्रम्सं विष्ट्रम्	
८८.स्. (बर्बर-बेर-स्व्रेर-स्व्रेर-स्वर्)स्	
गहिरामा (देशम्बद्धाः प्रतिवाशःमः)दी	451
মৃত্তিশ'ম'(ইন্'ড্র-জুলু'ন'ন্নান্'ম')অ'মৃত্তিমা	453
५८.स्. (वर्षः धर्मः २८.स्योषः स.स्टार्याकः नः)	
ग्रियापा (श्रिम् श्रेन् स्थापाव्य मेश श्री शाय श्रुम् पायम हेश साने वश्रुम पर प्रमुद्दारा)	
महिरापा (देक्षेद्राक्षी मानुद्रायह मार्था सम्माने देश मार्थी महिरासी मार्थी महिरासी मार्थी महिरासी मेर्थी मार्थी महिरासी मेर्थी मार्थी महिरासी मेर्थी मार्थी महिरासी महिरासी मेर्थी मार्थी महिरासी महि	
ষ্পান) প্র'বাইশা	457

५८.मू.(ब्रे.स्व.क्रे.लेव.व.ध्यु.च्यू.च.ब्रु.च्यू.च.ब्रु.चर.ववाच.क्र्य.चर.चलर.च.)ता.च्यूया	457
५८:मू. (व्याय प्रमूप्त प्राप्त)	457
महिराम (देवे विवास वर्षे वर्षः) है।	458
म्श्रिस्त्र (देवे त्यव द्याया रा.) त्या या श्रुसा	461
५८.मू. (ब्रि.स्व.स्व.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व	461
न्दःसः (न्यायाः क्रायः व्यवन्यः) यहिष्यः या	
५८.मू.(धू.कं.कथ.बु.क.चक्रुरे.स.इ.बेक.स.चर.वेक.प्ट्यू.च.रेचीच.स.)ज.च.कुंश	461
५८.स्. (वक्त.च.र्मूर.च.)स्	461
নাই শ'ম'(463
55.51. (ald.255.81.)	
নাই শ'শ'(ই'অ'ৰ্ক্ছ্র্ন্ছ্র্ন্ন)ই।	465
স্ট্রিশ্ব (ক্রু-ড়র-ড়র-ড়র-ড়র-য়	468
「「「「「「「「「「「「「「「「」」」」」「「「「「」」」「「「」」」「「」」「「」」「「」」「「」」「「」」「」「	468
महिराम (देवे व्यव प्रवापाय)दे।	469
गहिश्रामः(१५ व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	473
गहिरामा (देवार्यामान्य निष्ठ निष्ठ मान्य निष्ठ न	476

त्र मृत्यस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्ष्यस्य क्षयस्य क्यवस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्यवस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्षयस्य क्ष

शेर-श्रून-न्यर-व्रह्य-न्वुह्य-नर्शेन्-न्यय-ग्रीश

हे न इंद न तु अ स्यश्राय मुना पळेया वें।।

गशुस्राधानाविषान्त्रास्त्रस्त्र शुर्द्धान्त्र । स्त्रियाधान्या स्त्रियाधान्य स्तर्य स्त्रियाधान्य स

गावया गुरगहे या भी राळ दायदा यहिया।

ळॅन् अपिक्षेत्र शुर्मान्य ने अपिक्ष ने प्राविध ने प्रियान्य ने अपिक्ष ने प्राविध ने प्रियान्य ने अपिक्ष ने प्राविध ने प्

यावयः चुःयः व्यव्याः च्यत्याः मान्यः म्याः स्वान्यः स्वान्य

देशः श्रुवः द्वीयः ग्रीः देशः देशः धरः ठेवाः विश्वः श्रेः देशः धवेः श्रेरः देश । हवायः वर्देदे सुंग्राय कें यादे यादेव सुया ग्रीया ग्राया से वे यायाया या ग्राया स्वारा प्राया न चुर्यासदे क्षेत्र्वराक्षेत्रे पर्देवार्या वार्यस्त्र पार्वेद्राया द्वारा वार्यया वार्या वार्या वार्या वार्या धुवार्, नुषारविः क्वें त्रवार्षे वर्षे वर्षे वर्षे वाक्षा वाक्षरः र्, वार्वे र पाविकार र र रेवाः यर्देव शुया श्रीया है गया शी हो त्यया गविव प्पेंद व सर से गायर्देव शुया ॻॖऀॳॱॸ॔ऄॻऻॳॱॸ॔ॺॊ॔ॳॱय़ॱख़ॱय़ॱॸ॔ऄॻऻॳॱय़ढ़ॆॱॺॖऀॸऻ ॻऀॳॱॸ॔ऄॻऻॳॱॸ॔ॺॊ॔ॳॱय़ॱख़ॱय़ॱॸ॔ऄॻऻॳॱय़ढ़॓ॱॺॖऀॸऻ ॱ ग्रम्भरोश्याम् व्याप्ति विष्याम् विष्याम्य विष्याम्य विष्याम्य विष्याम्य विष्याम्य विषया विषया विषया विषया विषय नर्गेर्प्यार्देव्येर्प्यरप्रमुस्र देवा क्रिव्येर्प्ते देवा हेर्प्त क्षाया ग्राबुदःधुयः दुः ग्रुरुः दुर्या अस्य असः दुः ग्रुर्वेदः सः द्वाः विद्युदे दिश्येः तुसारागा बुराधुया नु ग्रुसात्र सर्भे पर्देग्या यासर नु गर्देन या वेसार र रेगाः अर्देवः शुअः ग्रीशः श्वाशः वः हेग्रशः पदेः हग्रशः ग्रीः इयः ग्रद्धाः स्वारशः क्षेत्रः यः ड्यालियाची। नेयायाचीयायदान्त्र्यायाचीयाच्यायायाचीयाचीयायाचीयाची न्वीं शन्तः श्रुन् श्रुनः स्वतः विवाः तः त्यूनः र्हे।

गहेशःसः(ब्र्ग्यक्ष्यन्य्युनःमः)यःगशुर्या

न्यान्यः चुःनाहेशःशुःदेशः यः न्दा नेते न्वरः नीशः स्वरः याहेशःशुः वेशः यान्यः नित्रः न्यः नित्रः न्यः नित्रः व

५८.मू. (याविता चि.याहेश श्राहेश रा.) यम् श्रम

माब्या ग्रास्ट्रमाशुस्रान्यामा प्राप्तमा माब्या ग्रामिश्रा ग्री स्ट्रमाशुस्रान्याम् याब्या ग्रामिश्रा माब्या माव्या माब्या माब्या माब्या माब्या माव्या माव्या

নৰ্ক্য ।

न्दः में (मनया ग्रास्त्रम्य माहेश्वर्या माहेश्वर्या माहेश्वर्या स्वान्य माहेश्वर्या स्वान्य स

५८: में (महेसक्षेत्रक्षेत्रक्ष्यत्मास्य) ने । मालाय ज्ञास्तर सळत् ५८ ही सळत् महिसासु रेसाहे। रेत जे ५ द्वार प्राप्त स्थापित स्थापित

वर् निरंशे वर् केन भेर निरं।

> क्रुं अळव मावव वे 'र्थे न मावा । क्रें वे 'र्थे न न न से न से न से न

र्टा नी मा बुट खुया यश्च क्षेत्र मालव निर्मा के स्वार्थ के स्व

স্ট্রিশ্বর্ম (নাইশ্বর্ম অর্থের শ্রী প্রব্রে নার্থ ম ব্রানা না)বি

न्तरं लेश या श्रूरं निर्मु लितः या श्री निर्मा है विष्मु या श्री स्वतः से विष्मु निर्मा स्वतः से विष्मु निर्मा से विष्मु स्वर् से विष्मु स्वर् से विष्मु से

शुः १९ १ वा श्री वा श्री देश हो । वि श्

र्यास्ता छ्वा श्वरायि श्वा विष्या श्वराया हिंदा है न स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

र्दे त्र क्ष्म स्थापाद धित वि त्व क्षम स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य बुगानदे अन्तर्भे अर्धे गर्भाग्री । पर्ने गादि व नदे नदरे दि अर्दे व शुर्भा ळन्याक्षानुः धेवर्ते विषाने नात्रे । । ळन्या उद्या ळन्य साम्या सुन्या त गर्वेद्रायाचे प्याना दे प्राप्तायाचे अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे अर्थे विष्या है अर्थे <u> नम्याः क्षन्यः भ्रेतः भ्रेतः भ्रेत्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्यः भ्रम्य</u> वहें व प्रवे प्रवर्धि अरें व शुक्ष कर्ष अर्के श उवा र्शे शें भें भें पें प्रवर्ष रेंदि'सरेंद्र'सुस'र्क्षद्र'स'पेद'सर्म्या द्वर'रेंदि'सरेंद्र'सुस'र्क्षद्रासान्र विगा तयग्रभारादे न्वर रेदि सर्दे सुमार्स न सामारी व स्वर्थ हो स्वर्थ । गुव वया सर्हरया ही विंद्र ग्रेया तसरया परि वया तस्य में ग्रेया है हैं व ग्रेन् त्र रेहें र र् प्रया ग्रेन् ग्रुन रेन् ग्रेन् त्र र र सेन् प्रेन् हिन् ह्राया वियावराञ्चरमा वर्देराचा वयारवारे राष्ट्रेरार्केयायार्वे या दुरावराग्रहा भे भेरायर प्रमुस्रें । । यर्सेयार्से अरळदा अरळदा अप्येव के विकामहेंदा यदे श्वरे ज्ञान यदे इसायर हिंद शे क्वर ने स शे स हैं सा समा स हैं सा दर र्रे भूरता दे ने अर्थेर प्रया दर्भ र्रे ग्राट विग रेगा प्र केत प्रेर वियायान्दराह्यायास्यापयास्त्रद्या वर्देन्त्या क्रन्याक्रन्यास्रीयाया विश्वराति वर्ष्मियासदे वर्रात्र्यं अर्द्धर्यार्श्व । श्रुरे व्यवासर रया सर्ध्यार्थः लेखा श्चानायस्त्रस्त्रम् विश्वास्त्रस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्

नेश्व म्यान्य नेश्व स्थान श्रुव स्थान स्य

शेयानाम्मा देखेदार्वे हेशम्यमार्थेम् संयानवे रहम्यान्वेशमीः <u> चे</u>द्रायमादे सम्बद्धमाळद्रासमाधेदमासु पार्केद तुमायमासेयाहे। दे क्ष्यास्त्रित्राचर्याविदा देः धेत्रामदेः हे साद्याणे प्राप्ता क्ष्या स्त्रा नर्यापपा न्न्रिं सम्बर्धियाक्ष्याक्ष्यास्त्रिं याप्तियाशुः वर्षिन् सी त्राया गिहेशसाधेत्रमुःसुरागशुराखेंदासरावगुरामु। सर्देताहेशागराधरा बेव'मदे'ळद्'स'धेव'मधेद'मश्चादेशसाधेव'ग्री'स्टार्से'गशुस'मर्गा यात्युम् न्मेर्न् श्रूर्रे अत्रथाह्यायान्यावी अश्रुवाळन् अश्रिवाया ग्रम्। भ्रेम्पायम्प्रियासुम्बर्गित्रासुम्बर्गित्रायम् लुव.मी.सीर.वाश्वात्रात्रात्रात्र्यं व.ट्यू य.तर.वर्में र.च.चवुव.सू । श्वातह्रव. यर्देव-शुयाने यर्देव-शुयाळन् यर्पेद्याशु नवन् यार्वयाग्रीयाहेया न्यमाः क्रन्ः संभित्रः सम्भान्य स्थानिम्यास्य मान्त्रेया माध्येतः सदिः स्र गशुस्राक्षेत्रात्वे । क्रदासरादेकात्रका हेकाद्यमाळदासाधेतास्या नठन्यानेग्रयादिः भूनर्या ग्रीया सर्देन सुसाळन्यर पेर्स्य सुपाईन रामहेशसेत् मु:स्टाम्सुस्र सेवानदे स्वाप: द्वार सेवास स्टास्य स्वाप: स्वाप: स्वाप: स्वाप: स्वाप: स्वाप: स्वाप: स त्रुयात्रया करायाहेयाग्रीम्यरयारेयाग्रुयात्। यर्देवाशुयाकरायाकरा सर्पियाचेत्रे, व्यानिया देप्य सुर्यास्य स्थान्य स्थानिया स्था र्शेग्रार्थायते वित्राहित्राह्म्यराय सुराया धित ही । दे प्रवित रुप्त दित्र वित्र ह्यारा यशर् खूर्यायाया से प्पेरायरा वासर र् हें वासाय दे हैं र रे साया विरा न बुद द्या दे र क्षेत्र स से द र से त्या न दे र से द र से द से दे से दे र से द र से द

মর্ন্ ন শ্বর দে। ক্রু শ ন প্র দি। ব্দ শি (শর্ন ন শ্বর) শ নাই শ।

ग्रवियान्त्राम्हेशान्त्री अळद् हेर्देशम् नुद्राम् रेषा हेर्या हेर्या हेर्या

५८:में (वालवा ग्रांवाहेश ग्री सळत् हेर्स्श वाहर वर) या वाहेश केवा देव ५८ । समय ५ ग्री । ५८:में (क्षेवाईवः) दे।

र्देश-द्रश्यस्य देश चित्र व्याप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

বাই শ'ন' (য়য়য়ৢঀয়ৢঢ়য়ৢঢ়য়ৢয়ৢয়ৢ

म्बुर वर्षे नर्गे न्यं रेष्ठे प्राचिष्ठ मान्य मान्य प्राचिष्ठ मान्य प्राचिष्ठ

५८:द्री. (मल्ट्यदे नर्गेट्यदे नर्गे श्वामान्ये द्रामा)द्री

श्चेर्र्स् ने हिन् से न्या स्थ्रा न न्या न्या न्या ने स्था ने न्या ने स्था ने

सर्विक्षुसन्दरवायाया न्दर्सिक्ष्रन्त्र देवन्त्रस्य स्विन्सिक्षेत्रस्य येग्रथं स्त्राच्या देखाग्रवहें न हुः धेंद्र संवेश संवेशे स्वत्र्याया श्रेराक्षेत्र ग्रुक्ष ग्रुटा गुका क्षेत्र फुर्ले दासर श्रेष्य ग्रुट्स के अपदे दार्दे । दि र्ने हिन् सेन सम्भू नया न्तु सम्म कुन सम्म सम्म हो न्रे सम्म सम्म रदानी अळव हेदा ग्री अ ग्रुवाया धीव प्यदा विश्वाया मोर्वेदा सेदा या सूदा निश बेर्यस्ग्गुवः ह्रेन फुर्पेर् श्री देवर्वस्य स्थेर्यस्य वेर्या द्वुःस वयादगुराना ह्रस्य राजे। दन्न सानु न स्त्रे न प्रते न दे सामे पर स्ता साम साम स्रायेष्यराप्रस्युवाग्राम्। स्रायी सक्ष्यं हेर्ग्री सायुवासंदे के साम्या उयापर गुनाय से दायर प्रवेद या स्नाय स्वर्म स्वी खुनाय द्रार्म दे वर्गेगि हिर्। क्विंगर्में व्युप्तर्में हिर्में वित्राक्ष्में व्युप्तराम् सुरामा न्याया ग्रुदे वार्डे में हिन्दु सहन्दें। । ने स्व ने न्या वसूव पदे हिन्दु र्स्चित्र में अप्याल्ट विदेश्रिया स्वाप्य प्रवित्तर में गृयाया भी वा वै। १६४१ शुः देव १५४१ स्वः यदि सुः यर्षे व्यः यद्वा से व्यः यः इस्यः देस ग्रीयः गुनःसः अः नग्या दिरः श्रुनः सदेः इअः ज्ञावयाः अह्रः सरः नवे दः दै। गहिरा (यदेव महिरा है राष्ट्री सक्त है न न न सक्त मानि मान क्रूँव मा)दे।

ननेव'गहेरा'ग्री'सळव'हेर'र्झ्व'म'म'श्चु र'व'णर'रु'र'न'र्डस'र्षेर'

श्री निक्षा निक्षा स्था त्रि स्था त्री स्था त

মার্মেমা (শ্রুবামরবাবার শির্বার নুমারা)বী

वर्तरागहत्रायान्यान्त्रियार्डः र्वाति सूरायत्वरायात्रम् प्रदेशस्य स्ट्रियात्रम् स्ट्रम् स्ट्रियात्रम् स्ट्रम् स्ट्रम्

गहेशपा(देलाईद्याश्वराया)याग्रुया

र्नेत्रप्तानुः प्रिन्यते अळव् गावि से प्ययन् प्राञ्चना गुव हेन गीः अळव् गावि प्राचे प्राच प्राचे प्

नायाने वस्या उदानु सासे दावा

यायाने देवा हो दा तुषाया देवा देवा देवा या स्थाप स्थित स्थित सक्त या विकास स्थाप देवा हो दाया स्थाप देवा स्थाप स्थाप देवा स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थ

स्रोत् श्री ने ने स्वया नि स्वया ने स्वया स्वया

यः र्वेदः र्येवायः देः श्रुवाः र्येवायः या।

तुरासर्वेट

यः त्र्वायः श्रेष्वायः त्रेष्वायः श्रेष्वायः य्रेष्वायः यः य्रेष्वयः यः य्र

र्णायायाने ने गुन हिंचा

वर्रेन्ज ।

यात्राने सार्चे के श्री स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

स्वार्थः भेर्द्रश्चर्याः वर्षः भ्रात्ते भ्रात्त

गयाने गुनायाने खेंनाना

श्ची 'धी' अळव'हे नः हे अ' त्रे में मा । श्ची 'धी' अळव'हे नः श्ची हिंगा।

र्देन होन हुन स्वर्थ हुन स्वर्थ हुन स्वर्थ मुन्देन हिन स्वर्थ स्वर्थ हुन स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

श्रेमान्द्रमञ्जूमश्राश्चिमशङ्कीं मिलेवर्दि।

श्रेण'द्र'णेड्गेष्ठ्र'श्रेप्रेप्र'श्र

> नेश्व निम्द्रियान्य स्था । वर्षा निष्य प्या हेश प्रह्मा श्वेरा । व्यापाय नेपाय प्रमाहिश प्रद्मा श्वेरा । व्यापाय नेपाय प्रमाहिश प्रमाशिया । व्यापाय नेपाय स्था श्वेर ।

 लब्दा हिंद्रायसम्बद्धायम् वित्राक्ष्यम् । हिंद्रायसम्बद्धायम् । हिंद्रायसम्बद्धायसम्यसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धायस

না প্রসামা (শ্রু-পদ্র ক্রামার্থ্র) মাক্রবার্ন্তর নিক্রানার্থন না প্রসামার্থন না প্রমার্থন না প্রসামার্থন না প্র

「子がてて」 ぎてきてだり

ちて・発・(5年×1)子

शुःनिन्श्वायाने श्चिः सेन्ति।

र्यारेयां उर्व विष्यं श्रूरं यदे श्रूपं विष्यं विषयं विषयं विषयं श्रूपं विषयं श्रूपं विषयं विषय

নান্ত্র শ'ন'(ईন্খ্রন্ন)বী

र्श्वराविद्यास्य स्थित्र स्थित स्थित

हेशप्राप्त्याः हुः चयाः से व्याप्ता

न्देशस्त्रोन्द्राञ्चेष्ठाश्चार्यः स्वाधार्यः स्वाधारः स्वाधार्यः स्वाधार्यः स्वाधार्यः स्वाधार्यः स्वाधार्यः स्वाधारः स्वधारः स्वाधारः स्वाधारः स्वाधारः स्वाधारः स्वाधारः स्वधारः स्वाधार

नियायदेन्त्रं वित्रं वि

शुः १८ वां राषा नमः श्रूट निते हें सं भी दे नित्र में ते राषि हरा

ग्री-दें-देंदि-देंद-धोद-धोद-धोद्र

श्च-श्च-द्रिवास्त्र विश्व विष्य विश्व विष

यायाने श्रु वे अन्य स्त्रि ।

वायाहे : श्रु : श्रें वाश्वाशयाश्वयः वरः श्वरः वाश्वरः देवे देवे : धेवः वाश्वरः श्रें वाश्वरः वाश्वरः

ने भूर पर्ने न ही र हुँ न प्पेन भेवा।

तुस्रश्चेते ह्या पार्के शंउव। यह स्वर्धं तु स्वर्धं तु स्वर्धं ह्या प्रविद्वा विद्वा स्वर्धं तु स्वर्धं स्वरं स्वर्धं स्वर्धं स्वर्धं स्वरं स्वरं स्वरं स्वर्धं स्वरं स्वरं

र्नेवाश्चार्स्सिक्ष्मित्र्याः श्री । गुवायार्स्सिक्ष्मित्र्याः श्री साम्यान्त्रः स्त्री साम्यान्यान्त्री साम्यान्त्रः स्त्री साम्यान्त्रः स्त्री साम्यान्त्रः स्त

মাই শমে (বাৰ্থ গ্ৰান্ট্ৰাট্ৰাই মিনাৰুদ্বে ক্ৰুমান্মন্ব্ৰদ্বা) মানাৰ্য

श्ची अळव प्री प्रें प्रेंच प्

५८:म्.(श्वे.अळ्य.२६्श.स.ल्यं.ल्यं.य.२वावा.)ता.याश्वा

म्बर् श्रीश्वर्यायाया देव प्रश्नीयायाय स्थित स्थायायाया स्थायायाया स्थायायाया स्थायायाया स्थायायाया स्थायायाया

५८.स्. (र्र्य.स्य.संस्कृत.यर्र्स्.संस्याचायात्रत्यंस्त्याचायाः)त्यायास्य

न्द्रभः सं 'र्न्न्न्य'यर श्रुवे 'यर्ह्न्' श्रुवे 'यर्ह्न्' श्रुवे 'यर्ह्न्' श्रुवे 'यर्ह्न्' श्रुवे 'यह्न्' यह्न् द्राय्य प्रम्' यह्न् द्राय्य प्रम्' यह्न् प्रम् प्रम्' यह्न् प्रम्

न्तः से (५६० सं ६४ ५० म् १५० में १५०

८८.स्.(वयवायान्स्या)यायाश्रुमा

ग्रयान्यस्य क्रिन्यस्य स्थान्यस्थितं वर्षेत् वर्येत् वर्षेत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत् वर्येत्

नईन्छक्ष्रिः हीराने प्रदेश क्षेत्र।

न्नरःश्रेषायायत्वयानस्यात्वेत्रःश्रेन् ध्रिनःस्।

म्बन्धान्द्रेश्वर्ष्ण विश्वर्ष्ण क्षेत्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द हिन्द्र हिन्द्

বাইশ্ব।(व्याधिव।वर्षेव

नमून'म'न्र'। नभून'मर्दे।

८८:मुं (वक्ष्वन्यः)वि

वे वन हु इन र्रेन्य यन दे।

श्रेटःश्रेयाशःनाईट्रतः ।।

पळ ५ से ५५॥

हत्रसंनिईन् ग्रुःहेरायशेषाउत्।

श्रीदाश्चायायां सेदाया अदा

বাইশ্বন(ক্র্মানন্দ্র) মাবাধ্যমা

र्बे किं तर्दर वर्षेयाया वर्हे दाया द्याया या

वर्त्रेषासे दाने हिंदा

न्वावाःचा नेतःन्दःवज्ञेषःचःचर्हिःचःन्वावाःचर्ते।

न्दःसः (ज्ञांकं बःन्दःवज्ञेषःचःचर्हिन्चःन्वावाः)वः वाहिश्रा

वयः चः नर्वो नः चः न्दा नेतिः व्यवः न्वावाःचर्ते।।

न्दःसः (वयः चः न्वानःचर्ते।

र्नेवायायम्बायम् से विश्वम् स्री।

श्री स्वाप्त स्वाप्त

महिरामा (देवे व्यव द्यामा मा)दे।

गयाने देवाया द्वाया वदायशा

दिश्चित्र, दर्भा दिश्चर, द्याः ।

लियायायधियासुर

> श्चे श्चे त्र त्या । अर्द्ध न राज्ये त्र त्या विकास स्था न स्था न स्था । अर्द्ध न राज्ये ।

क्रीं निरंति के सामाया क्रूट निरंति क्रीं सामाया क्रिया में प्राप्त हैं निरंति के सामाया क्रिया में स्वाप्त हैं सामाया क्रिया में सामाय क्रिय में सामाय क्रिया में सामाय क्रिय में सामाय क्रिया

शःर्वावन्यः ने से नः ने । श्रे में यः ने नः नः से । । श्रे ने प्रमायोग से नः से नः श्रे नः ने । ।

याववराग्ची स्वायाया ने त्या से निष्ठी है। में त्या में विष्ठी है स्वाया से निष्ठी है। से त्या से निष्ठी है। स

स्थायोत्। व्याप्य स्थायः विश्वायः विश्

श्री प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र भेत्।

नेशग्रुवर्देवः ध्वाधिरः नेवा।

नेश्रारागुत्राम्बुदार्देवारदास्रळवाद्दाः स्वास्ति स्वासि स्वास्ति स्वासि स्वा

বা

यवर से वा श्रास्त्र से वा श्र

र्वेग्रासेन्धिर्द्धर्सेग्रासिक्।

हिंद्र त्यः श्रूद्र निवेश्वेर्धः श्रीम् श्रादेश्वेर स्वर्धः स्वरं स्वरं

इत्यायाम् स्यायास्याः स्वित्याः । स्ट हित्ये स्वित्या स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः । देशक्षेत्रः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः ।

देशक्षेत्रं स्टाश्चरायावत् श्रीः भेशास्त्रं व्यवादित् श्रीः स्टाश्चरायावत् श्रीः स्टाश्चरायावतः स्टाश्चरयावतः स्टाश्चरायावतः स्टाश्चरयावतः स्टाश्चरयावतः स्टाश्चरायावतः स्टाश्चरयावतः स्टाश्चरायावतः स्टाश्चर्यायावतः स्टाश्चर्यावतः स्टाश्चर्यः स्टा

श्रेवायःश्रेवाश्वयः स्टेन्द्रः स्ट्रिन्स। । ने छेन ने विश्वयान योश यरेन्। । वाय हे ने विश्वयान स्ट्रिन्स। ।

न्त्रित् क्षुः अळ्वः नाटः मी अः प्टेन् नायः हे 'हें व क्षु अः इसः सं नाहनः प्रेटे सं ने विकः स्वादः स्वादः स्व

वर्षायव पर्देग्रायायवे वुर्याया सर्वे दावे ही र पर्दे द दें वे वा

गावन पर्नेन सेन उन्नेन प्रमुन्।

न्नरः नेश्वायश्याव्य प्राधितः विश्वायदे विश्व

महिरामा (वर्त्रवासेन् निर्मान्यामाना) दे।

वज्ञेषासे नुष्य न्या

.....द्याश्चर्या

गाया हे हैं व दर एको या थुव वा ।

णयाने देवास्यास्य विषया वार्या क्ष्या विषया विष

वन्यान्दायार्वेद्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यात्त्र्यान्त्र्यात्त्र्यान्त्र्यात्त्र्यान्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त् त्रिन्द्रान्त्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्

न्या स्थान प्राप्त स्थान स्था

श्रुणिशःश्रु ते निह्न प्रते सुन्।

गवाने वयानर से वर्दे दाना

ह्नेन् श्रु श्री अपन्रेन्य स्त्रि स्त्र स्त्रि स्ति स्त्रि स्ति स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्र स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्रि स्त्र स्ति स्त्रि स्ति स्त्र स्त्र स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्ति स्ति स्त्र स्ति स्त

ने 'क्षेत्र श्चे 'ते 'प्यत 'या र 'या । यह प्रस्त स्थित स्थित स्थित स्थित स्थान स्थान । यह प्रस्त स्थान स्था

বাইশ্বান (গ্রহর দেবার)বী

भी त्याम्य क्षेत्र स्वाप्त । विश्व स्वाप्त ।

ने अर्द्धन्य सेन न्द्रम्य स्थान सेन्।

श्चे 'दे 'के र्रा 'ठवा वार्यया विष्यं प्रकेष्ट्र र्या स्थित स्था वार्यया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्यया वार्यया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया वार्ययया

नेश्वन्त्रवान्त्रप्रश्चराने।।

हिंद्र ग्राया विष्या विषया विषया

च्या हे थर।

ग्रयायमासर्वित्रसुसायाग्रयाधित्।

नायाने 'प्यतानाययानयानाययानर नुयानायया हुँ 'यदिन सुया यानाययानर सूरान पीत्राययानहीं यासे नाययाने हैं 'वे'ता

नन्गात्यः नेश्वासः श्रेन्यः मा

वुरुष्यान्द्रिन्द्रुरुष्ट्रिन्।

स्त्रभात्रान्यात्मात्मेत्रम् त्रिमा ह्याः प्रते स्त्रभात्मेत् स्त्रम् व्यक्षः प्रते स्त्रम् स्त्रम्

मायाने प्रमायाने के नुसासे दाना ।

मायाने प्रमायाने के नुसासे दाना ।

देन भी के त्रमासे के नुसासे दाना ।

देन भी के त्रमासे के नुसासे दाना ।

देन भी के त्रमासे के नुसासे दाना ।

देन भी के निस्ता के निस्ता के निस्ता ।

देन भी के निस्ता के निस्ता के निस्ता ।

देन भी के निस्ता के निस्ता के निस्ता ।

देन भी के निस्ता के निस्ता के निस्ता ।

देन भी के निस्ता के निस्त के निस्ता क

> दे'धेश'तुश्र'यद्य'तुश्र'येद्य।। दे'ते'हेद'ग्रेश'याद्य'तुश्र'याद्य।। ह्या'ग्रेर'यर्थ्य'य्यद्य'य्यद्यात्।। दे'वद्य'ग्रेर'य्य्य'य्यद्यात्।।

श्ची में भी स्वाय स्वाय

ह्र भारत्रेयार्श्व द्रासीयार्थिया

इयामदेखंदे क्यं देयामा

ने ने ने त्यामान मी या श्रुवा।

गयाने अर्देव शुर्या ने या देव हिन्।

धिरवर्तरस्रिंद्वः सेद्रासेद्वा

णयाहे निर्मा के त्र श्रुष्या निर्मा के त्र श्रुष्या निर्मा के त्र श्रुष्या के त्र श्रुष्या के त्र श्रुष्या निर्मा निर्मा के त्र श्रुष्य निर्मा के त्र श्रुष्य निर्मा के त्र श्रुष्य निर्मा के त्र श्रुष्य निर्मा निर्मा के त्र श्रुष्य निर्मा निर्मा

ने निर्देश वाडिया द्वीर श्रु श्री वाश यथा।

वर्त्रक्षरः र्ह्मेर वार त्यका धीवा।

गहिरापा (ब्रुवे निर्म् नुम् निर्माय सम्मे किन्द्र मानव पुर निर्मा से किया

「「大利」では、一大利」の「大利」では、一大利」(「大利」) 「「大利」(「大利」)。 「大利」(「大利」)。

> रेगाश्च्यः रेगाश्च्यः यात्रः यो श्चित्र। । गश्चः नेदः रें र्गाव्यः हेवः येत्। । गत्यः हेः शत्तुनः छेः व। ।

रेग्रभारे देग्रभाश्वर्ग्याश्वर्ग्याश्वर्ग्याश्वर्ग्याश्वर्ग्याश्वर्ग्य यादः मि श्वर्म्य याश्वर्ष्य याश्वर्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्य याश्वर्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्ष्य याश्वर्य याश्वर्य

> कूँशःमुरःवज्ञशःगुरुदःमुर्ग। रदःगीःमुःवज्ञशःगुरुदःमुर्ग।

द्यभार्यःस्थात्यभास्रेन्द्रम्।

श्ची ने क्षिम् अवस्थान विषय प्रत्ये प

त्र्वात्रः क्रिंश्वात्रः व्याप्तः व्यापतः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वय

देशवःश्लें नः दर्शनः श्लें न्यः स्याः श्लें न्यः स्याः श्लें न्यः श्लें न्यः स्याः श्लें न्यः स्यः श्लें न्यः स्यः श्लें न्यः स्यः

त्र्यश्रास्त्रेन्द्रः स्ट्रिन्द्रः स्ट्रः स्ट्रिन्द्रः स्ट्रः स्ट्रिन्द्रः स्ट्रिन

सेन्यः रेग्राश्राष्ट्रयास्यास्यास्या

ने त्या हें या या यो ना यो ने त्या है या ।

यानक्ष्रियानास्त्रीत्र्यान्यस्त्रीत्वयुत्रान्यस्त्रया सेन्यान्ययान्ति

বাইশ্ব।(देशः শ্বরণ বর ইবः) दे।

दे: धेर: दें स्थानहेत : त्रा । दे: वें : से दें : से वा साम जिल्ला ।

श्च-स्यराने वायह्याने वाउद्या ।

रेग्रास्त्राप्तिन्त्र्वास्त्रेहिंग्। मित्रायि मात्रुद्दा स्त्रेस्त्र स्वाया स्त्रे स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स

ने त्यार्ट केंद्र स्थूट न्यत्या । ने त्यार्ट केंद्र प्रत्ये विषया । नि त्र त्यार्थ केंद्र स्था ।

नुसाउदासर्वेदार्गीस्थारीसास्थारीया

देःशः भिद्रासाधिवं त्यस्य स्वाप्तां प्रदेश्चे स्वाप्तस्य देवे स्वीद्यास्य स्वाप्त स्वापत स

र्नेत्रह्मश्राणेते श्री माराधिता। मालवायश्राणेत्रामित्रस्मह्मित्। श्राप्ते प्रमाणेश्रामाराम्हे प्रमा। रेप्यार्ट्टा श्री प्रमाणेश्री प्रमाणेश्री ।

र्देन भिरामाश्रया इस्र ग्री ही गाराधित या गावत भिरासाधित यश स्वाप्त स

र्देश्चेत्र्वश्चेश्चित्रः वित्रः वित

र्रेन्स् हुर् बर् ग्रारं से र प्राप्त भी र प्राप्त के र प्राप्त हु स्वर् के र प्राप्त हु स्वर के र प्राप्त हु स्वर् के र प्राप्त हु स्वर् के र प्राप्त हु

यदे 'प्यत् क्वन' श्रुवे 'वर्डे न् चु 'र्ने त्या यम् वर्डे न् 'र्नु 'यम 'वर्ड्ड न् चु या वर्ष्ठ न् वर्षेत् 'या ने वर्ष्ठ वर्ष्ठ ने वर्षेत् 'या ने वर्ष्ठ वर्षेत् 'या वर्ष्ठ वर्षेत् 'या वर्ष्ठ वर्षेत् 'या वर्ष्ठ वर्षेत् 'या वर्षेत 'य

म्रुअपः (नर्देन्-न्यंन्-न्यंने-त्यंन्-न्यायानः)ने।

मायाने महिंद्र हु त्याय विमायशा

यायाने तुम्रायि श्री म्हानी याम्यायायमा स्माने हिन्द्रायावन तुः विद्याय विद्य

गर्हेन् श्रुस्य अस्ति । गर्हेन् श्रुस्य अस्ति । हेर्य अस्ति श्रुस्य अस्ति । गर्हेन् स्वर्य अस्ति स्वर्य अस्ति । गर्हेन् स्वर्य श्रुस्य अस्ति ।

त्रअःश्चे के अंग्डिम हे प्ष्रमः प्यान्त्र अंगः ने कि न्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्य व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र व्

> यन्यान्द्रन्ते सार्वेद्याः सदी। र्देवः ययदः श्चेः यो श्चेः उवः श्चे।। यदवः पाद्याः वेः यह्याः यशुरः व।।

र्धेन्यसेन् कें राहे सुरावशुरा

गायाने हेराननगरायराने वर्तेन।

वायाने श्चे ने प्यन्यायां विष्यायी क्ष्यायी श्चे यात्राय विषयायी व्यव्यायी व्यव्यायी

यादः वियाः श्रुसः श्रीयात्राः यादः वियाः श्रुसः यादः वियाः श्रुसः यादः विषाः विराधः विराधः विषाः विराधः वि

> र्त्त्री त्रियायायाया । ह्या पुर्देश प्रदेश या ।

श्रेम्यो न्या ने त्रित्य वित्य वित्य

न्द्रभः भेटः न्दः चह्ना भः भेटः श्चे रः चः त्यः श्चितः र्के शः न्द्रितः चाव्रवः श्वरः चः न्दः भेरः भेरः स्वरः । व्या

र्नेत्येन्द्रप्यन्त्र्याः न्याः व्याप्त्रः व्याप्त्यः व्याप्त्रः व्यापत्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्रः व्यापत्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्

विष्यः ह्रिया उदायावदा सया साधिदा।

श्ची में निष्या क्षेत्र में निष्या माया महमा स्था से माया से

हे 'क्रूर'दर्देश'र्से 'जुश'र्स' वृश्वा । बेद' डे दश'हें पा'र्स' हे 'पविद्या । बुश'यदर' पार्टें 'र्से 'श्रेष्मश्राप्ते। । अहत'रा'श्रे 'र्से श'र्मुश'र्स थिता ।

স্টিশ্ন (देवाश्यः नाववः क्रीः न्वावाः यः) यः प्रिश्

श्ची : अळत् 'द्रिंश'र्से 'धेत'रा'धुव्य'ठत 'ग्ची'र्देश'त्र श'तह्रवाश'व्य'द्रवाता' स'द्रद्रा' धुव्य'ग्ची'र्देश'त्र श'तह्रवाश'व्य'द्रवावा'र्स्त्रा ।

५८.स.(हैं) अक्ष्यं र्ट्स स्मार्थ लीव सालीया क्ष्य ही हूर मायमा सम्माया निर्माण क्ष्य हो हिमा सम्माया निर्माण क्ष

वियात्यः श्रुष्ययः र्ह्वः हे त्य ।

श्रूम्याने त्रम्या विवा त्यत्मा।

याविषार्यात्राष्ट्रराचेदेःतुयारायाः हेषार्यदेः ह्रें केषाउदा द्रें यार्थः

इन्यायाः श्रीवाश्वास्य स्थाप्य स्थित। । देवार्थित् उवायाने प्रवासिता।

म्वात्यःश्रीम् श्राप्तः स्वाप्त्यः स्वेशः स्वाप्तः स्वापतः स्वा

श्चे 'ठम'वहेत'यर' ग्रेन्'ये खेरा । भेसम'गहेम'न्या'ते 'सर्ख्नम'रा'धेता ।

श्ची प्यवन्त्राम्यान्य स्थान श्चान्य स्थान स्था

रे प्रयय विया ते प्रहेत हो प्रया । स्रम्भित स्थायमा यहिंग हो ता हो ता हो ।

ख्यतः विगाम बुर देव दु छो ने संस्था ने स्था ने स्था ने स्था से स्था स

यःश्रमः इसः यमः नर्ह्णे वाः वेदः यदेः ध्रेम

বার্ট্র শম্ম (অ্রাক্তির্ম ব্রম ব্রম বদ্বাম রে ব্রামান) ম বর্

यात्रयात्र प्रत्याक्षेत्र प्रत्य प्रत्याक्षेत्र प्रत्य प्रत्याक्षेत्र प्रत्याक्षेत्र प्रत्याक्षेत्र प्रत्य प्र

५८:द्री.(योशकायः २८:इशायोडेयोः २८:इ.२८:यध्योशकाः नेयोयाः)द्री

यवःकुंवः छिनः यमः उवः इस्यशः वै।।

ह्यन्थेन्द्रं में हे क्ष्रम् क्ष्यूम्।

यव्यक्ष्व । हिन् प्रमायव्यक्ष मार्थ । ह्याय्यक्ष मार्थ । ह्याय्यक्ष मार्थ । ह्याय्यक्ष मार्थ । ह्याय्य । ह्याय । ह्याय्य । ह्याय । ह्याय्य । ह्याय । ह्याय्य । ह्याय । ह्याय । ह्याय । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय्य । ह्याय ।

र्रेन्द्रिन्यहेशर्यिन्द्रणम्।

ने निर्देश या है या हु है । क्षेत्र विद्युत्।

नायाने ने न्या सर्द्ध स्यायाधी।

न्देशने ने न्या यश्यावन हेन्।

नाय हे नार्यय न ने न्ना नी सर्हर राज्य थे न्देश में ही हे न्ना नार्य न ने न्ना य्यर इस नावद हे न ने विष्

ने न्यायी लेखाय होता से न त्या ना

याश्वान्त्रान्त्रीत्वान्त्रीः विश्वान्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्रात्वेत्वाः स्त्रीत्त्वेत्वाः स्त्रीत्वाः स्त्रीत्व

र्ष्ट्रेमायायावे श्वाप्त प्रमान स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था

व्यान्यःश्चान्यः विष्यान्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः विषयः

ने प्रत्र राज्य रा

श्चे ने मार्ययानि तर्वारा नु प्येत त्रा प्रेत्र प्राचित्र नि त्र

त्रिमायश्चराने प्यत्यत्ति। यहमायन्त्रिमार्थन्ति अस्ति। यहमायन्त्रिमार्थन्ति अस्ति। हेश्यत्रोयाश्चरान्ति अस्ति।

रेग्राम्स्रयायन्त्रयानुःस्रेत्रःस्रिरःत्।।

देग्राम्बर्धान्द्र्यान्त्राधित प्यट्ग्याय्यान्ते व्यव्यान् स्वर्धः भ्रम्भः म्यायान्त्राक्षेत्राच्यान्त्राक्षेत्र प्रत्यायान्त्र विष्

यायनेयानप्रम्दियायेन्यम्

देशक्षण्यात्रकष्

गशुस्राया (वहायावर्ष्ट्रस्याया के सामाया के निकासीय के सम्याय के

श्ची त्या स्वाप्त विष्ठ मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य

न्द्रभागहेभासईनायाः क्षेत्। नद्रभागहेभासईनायायाः सेन। हेभाशुप्यह्यायायानः सेन्।। न्द्रभागहेभान्यायाया

यायराची पर्टेश में जिल्लेश सर्वेर प्रायाय विवाहेश शुप्द वापायारा या प्राया स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य

ध्वेयः नः यश्या श्रुः न्वाव्यः श्रुः श्रुः याव्यः याव्यः

दन्य उद्या अत्र भेषा अत्र भेषा भाष्य ।

देश्वराहे द्येराव्य श्रियायी श्रियायी

यारायीयात्रस्यायराष्ट्रीयाधिया।

नःयरःमीःग्रेययःनःह्रस्यःह्रस्यः ह्रीःन्य्याव्यःसेन्यः ह्रीः स्रायह्वायिः क्रुःन्यायः ग्रारःह्रस्यः स्राय्यः ह्रीःविदः स्रायः स्

न्ते ना (विकासात्वाप्यदानामानमा के मूनानिक मुनानिक के मिनानिक प्रतिक प्र

श्ची दिन प्रावित से दारी व्याप्त स्टाय है से निया प्राया निर्देश से दा

लियायान्। यहारे पहें याचे या स्थायायाये क्षेत्र व्यायात् । यहारे वह वा स्थायायाये क्षेत्र व्यायायाये क्षेत्र व

घर्ट्र हैं से सूर वर्ष सेट्र पर सुवाता सेवा वर्षे वार्ष संप्र सेट्र पर पर पर से के

याञ्चयात्राञ्चराधेत्र श्री ।
यात्राक्षेत्र श्री ।
ते श्रित्र श्री त्र श्री ।
ते श्री त्र श्री त्र श्री व्याप्त श्री ।
या श्री त्र श्री त्र श्री त्र श्री व्याप्त श्री व्यापत श्री व्यापत

यान्यः स्वाधान्यः स्वाधानः स्वाधान्यः स्वाधानः स्वाधानः

ग्रयायदिव के वत्र ने भूत्र ।

नेश्वान्य निवास्त्र निवास्त्र स्वान्त स्वान्त

मशुस्र महिन्म सुप्त निष्ठ निष

श्ची अळवं ने वि र्वे के अपन्त ने स्टायहें वं ने अपन में श्चेन स्वी ने स्वार्ण के नि स्वार्ण के स्वर्ण के स्वार्ण के स्वर

यात्र वायाने गुनायाने प्यान विश्वास्त्र मा विश्वास्त्र विश्वास्त्र के निष्ट न

यान्याग्यमा श्रेनान्येवाञ्चन्यम् श्रेति रख्येयायायाञ्च मान्याच्या श्रेना

गहिरामा (स्टायळव प्रस्थास्य प्रमुव पा) दे।

हे अन् न्या व्यक्ष निष्ठ विष्ठ । विष्

নার্ম'ম'(য়ৣয়ळয়য়য়ৢ৸য়ৢয়য়)য়য়য়য়ৢয়

「きってぞれて「新った」」 「きった」

८८.स्. (२३:यन्द्रभः)दी

न्देशन्दर्देशसेन्याहेशगाया।

नहेन धेर हैं नेवर ह्या पाया श्रमा

श्ची सळव ने वंद रें के रें के

यायाने पर्देशायहेत पर्देशायहेया ध्रिम् । पर्देशासी स्थापने साम स्थापने स्थापने

यायाने निर्देश में या निहेत माते हिंगा माने देश में पिन से निर्देश में पिन से मिन से मिन

यव निर्मा विव निर्मा सेवा । सेवा । सेवा । सेवा । सेवा । सेवा निर्मा विव निर्मा सेवा । सेवा ।

न्र्स्थार्थः त्यान्ते त्यान्ते त्यान्त्र त्यान्त्य त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्य त्यान्त्र त्यान्त्र त्यान्त्य त्यान्त्र त्यान्त्य त्यान्त्य त्यान्त्य त्यान्त्य त्यान्त्य त्यान्त्य त्यान्त्र त्यान्त्य त्यान्य त्यान्त्य त्यान्य त्याच्य त्याच्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्याच्य त्या

गयाने निर्देशकेंशने निष्या व

ग्याके निर्देश में या निहेत मिर्देश में मिर्देश से निष्या निर्देश में स्थान में स्थान

न्देशस्य प्रदेश प्रदेश

न्देशर्थिः या नहेन्न स्वते हेना मार्केश रुन्न हिंद् श्री खुर्य दिश्व स्वते हिंदा श्री खुर्य दिश्व स्वते हिंदा स्वते स्व

म्रुस्पः (र्यास्त्रम् व्यावयः चर्यवया प्रति प्रति व्याक्रिया र्यास्त्रस्त्रम् विष्यः चर्यात्रम् प्रति प्रति

५५:१ (रटा अळव पाडिया सु यावाय सुर रवावया प्रते रवीं शरा)दे।

स्टामी'अळ्ब'हेट्र'म्डिम्'म्बिश'ग्री । ऑट्र'सेट्र'हेट्र'ट्रॉट्ट्रॉट्र'क्स्स्र'ग्रीस्।।

र्देव ग्रुप्ते त्यम ग्रुप्त भ्री म

र्स्नेन न्येन स्वाप्त निया हिन्य हिन र्यापावयात्यावेशान्हेरामधे कुः सळवार्येराने। हेपाय्वरार्देशारे र्योप् बेद्रान् श्रुद्धित्रयाह्मस्रस्य श्री श्रुद्धित्रयद्य हित्रस्य स्त्रम् श्रुपाय दित्र श्रुप्त श्रुद्धित स्त्रीय र्दासळ्याद्वात्रात्रस्य स्वाता स्थाने स्थान निष्या स्थान र्दासळ्याधेयास्याधियासायाब्दायदेशायश्रवास्यर्देरासावी वेयाहा यानहरायायाः है। ने सुन्यान्त्रात्री हैन ग्री हिर्मायान्य न्याय स्वाया नरत्युरित्रे। नर्विनगयायास्रीम्यासदेत्व्यसानुर्देवाम्हेराग्रीयाद्यसा नुनि पर्देन पर्वे भ्रीस्तुने प्येन सेन्द्र न भ्रीत पर्वेन पर्वा ने भ्रस्त भ्रम वर्षामानि वनार से ८ 'दे 'से ८ 'सर 'दे रा पादे 'कं ५ 'सदे 'मानय ' गु 'दर्दे रा से र ' इस्रायात्रस्य राज्य द्वारा हो स्वायात्र स्वाया स्वायात्र विस् यदे हे अन्यमामी अन्यम्मा गुःवहत्य यस वर्षेत्र यादी के अन्वेत पुरस्मा अ है। ह्याराने त्यानहेत्र पदे हेरान्ययान्त हैं तर्ने यारायहेरा दिन सूर्या अर्द्धरशासरायर्देरासये भ्रेम अराहेशन्यमानेशन्यमामाने वहत्यासरा वर्देन्याधराह्यायायायुयाची ह्रयान् चे से से स्थान्य प्रमून से ।

देशक् नविं नगाया देव गावे रात्रे त्या हेरा न्या हेरा ने हिंदा निंदी ना निर्मा निर्मा

ध्रम्भ स्थान्य स्वास्त्र स्वास्य वित्र स्वास्य स्वा

ने त्यायने त्यने त्या क्ष्याय व्यायक्ष्य व्यायक्षय व्यायक्ष्य व्यायक्ष्य व्यायक्ष्य व्यायक्षय व्यायक्ष्य व्यायक्य व्यायक्षय व्यायक्ययक्ययक्ययक्षय व्यायक्ययक्षय व्यायक्षय व्यायक्ययक्ययक्ययक्ययक्षय व्यायक्यय

द्ये अप्रस्ता अप्याह्माया इसाय राय उत्तर के अप्याह्मा विद्या क्ष्रिय प्रमाह्माया क्ष्रिय विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या क्ष्रिय विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या क्ष्रिय विद्या व

यान्य स्थित् स्था श्रुष्य स्वाप्य स्य स्वाप्य स्वाप्य

स्यास्याविष्यः च्यां स्वास्य स्वास्य

श्चित्रसेन्ते। ने त्या श्चित्त्य स्वास्त्र स्

यहिश्यः (देःवः ईत्यः श्वरः या श्वरः या हिश्यः सुरः तयायः श्वेरः यः प्रदायः या श्वरः यदि । प्रदः तयायः श्वरः या श्वरः यदि । प्रदः तयायः श्वरः या श्वरः यदि ।

ने'ने'र्रायावन'र्रे'र्ने'धेश। हेंग्रथ'दीर'ग्रावय'त्रु'ग्रेश'शु'त्रवेत।।

स्टायळवाने वे स्वर्त्वानु श्रुस्य दे के मान्य दि स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्व

ह्रेन्यः संदेश्यक्ष्यः प्राची श्रीः अळ्वः चावयः श्रुमः प्राचीयः प्रमा स्थाः स्याः स्थाः स

वहवार्द्धवार्शीः र्र्भे व्याधियार्थे वियान १५ दि।

वह्याकुयाची न्वरायमाभेत्रत्। ग्वयाचा ग्रिमाची स्वराया गहिशा विश्वासंदेर्देव प्यटाळदाया हिश्वा ग्री नश्या देव रळदा सर सेटा श र्दासळ्य द्रा ही सळ्य से से राहे सामदे द्राह्म में साळहासा मुक्रेस ही । ग्रम्थादेशः श्रुवः धरः द्युरः त्या देः क्षुः वः हे शः द्यावाः कदः सशः स्टः सक्वः वह्यान भे भेरामभाग्वर वर्ते केर ग्रे दें तर्र विषय न न हरा अनि भे ह्वारार्सेवासर्से र्से से हें ने सर्हेवासराम् ग्रुम्से द्रास्य स्ट्रिस सम्ब मिंत्ररादेशायवे पात्राचित्राय द्वायाय प्रमार प्रमार्थे । वित्य सदित सुसार्भेषा हु शुरायायम् । विभायायावया ग्रामिष्ठे भाष्ठी राष्ठे भाषि रे दिन स्थायाये । वयानेवा धेवार्सेन् ग्रीक्ष्मास्य स्थान स्थान स्थान स्थान स्थाने स्थान स् नश्चनाया देशायरार्ध्रेत्रातु । यह्या द्वाया देशा ग्री ग्राह्म श्वाया न्वें अर्थ्य ने ग्रुन्य व अर्देन भ्रें ना निहे अर्थ ग्रुन्य स्थान प्राप्त नि त्र्या हु त्यु न में त्यु मार्च मार् सक्त गडिग हु सूर् तर इंडर बया वे । विरेर रे ते लेश या सर्व शुस ग्रीशाम्वयानवे रूटा सळ्वादे हिटा हे शाद्यमा मी शायह्यान राह्नेता स शेव दें।।

महिरापा (देवाकासान्दरविवादानाः श्रुद्रान) दे

शुअ:५,'दशुर:नश'अ'दिश्वानर'दशुर:र्रे'वे'द्य

म् निविव सर्विव विव स्रोव स्रोत स्रोत स्रोत ।

यायाने यावव शी में में भावी।

हैंग्रायान्यविषायाः कंत्रायां सेत्।

नगमायाने नहीं मेरिति

विष्यामाधीवाष्यमाळम् सान्निम्।

इस्राम्बद्धिरागुराहेंग्रारासर्वेदा।

श्रुः भे द्वा के र्यो है का द्वा के द्वा के राष्ट्र के के किया के स्वा के स्व के स्व

स्राधित्वे क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्राच्या व्याव्याचा क्षेत्राच्या कष्णा क्षेत्राच्या कष्णा क्षेत्राच्या कष्णा कष्णा क्षेत्राच्या कष्णा कष्णा

हुँ निश्चार प्राचित प

नेश्वन्ध्वन्धिनः स्रोत्वन्धिनः स्थान्ति । विद्युत्यः स्थानि । विद्युत्यः । विद्युत्यः स्थानि । विद्युत्यः स्थानि । विद्युत्यः ।

र्वे सः तुः श्चे वा स्रोतः श्वे वा स्रोतः श्चे वा

तिरःश्चित्रं विक्रां विक्रां

र्श्वन्द्र्यत् भूणः र्श्वेश वित्रः व

महिरामानेविन्नम्मीरास्न सामहिरासुरिरास्य महिरास्य

याद्याद्वास्त्राच्या । हेश्यत्वीस्त्रियाः याद्यत्वी हिं। देश्यत्वीस्त्रियाः याद्यत्वा ।

यादायां बुदार्देव श्री वुष्णायायां हे श्री श्री विष्णा श्री द्वा श्री विष्णा श्री द्वा श्री विष्णा विष्णा श्री विष्णा श्री वि

ग्याने न् व्यंत्रायायाये न सुनामे ने ते के न् नामें ने ने के न् नामें ने ने के नि नि के नि क

दे के में हो दाहे अ दर्शे न। हो 'भे दें में हो दाहे मार्था। दे अ दार्श्विम हो दाहे के प्रमाण के प्रमाण हो स्थाप के प्रमाण हो हो स्थाप के प्रमाण हो स्थाप हो स्याप हो स्थाप हो

हिन्यम् नु ने हिंग्या से विद्युम्।

स्त्रेयायायाय व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

यालया गुःर्भूया गुर्रा श्री भूया गुर्रा ह्या श्री या गुर्रा ह्या श्री या गुर्रा श्री या गुर्रा ह्या श्री या गुर्रा ह्या श्री या गुर्रा ह्या श्री या ग्री या ग

पश्चिम्यः हिंग्यः हिंग्यः हिंग्यः विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

५८:सॅ (५६०)दे।

यावयः शुर्याव्यतं ते : भेरायाया ।

सद्धःश्रुसः द्वाराष्ट्रित्रः याद्यः भ्रुत्रः भ्रुत्यः भ्रुत्यः भ्रुत्रः भ्रुत्यः भ्रुत्रः भ्रुत्यः भ्रित्यः भ्रित्यः भ्रित्यः भ्रित्यः भ्रित्यः भ्रित्यः भ्

ने से रामावया ग्रामाहे या हे रामे श्री

ळन्याष्ट्रेयासुरमिष्ट्रा

ग्वयान्त्रामिक्षास्य निवयान्त्र व्याप्त क्षेत्र स्थापिक्ष स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

ग्वयानुग्विक्षान्यम् अर्थेन्य विष्णुम्।

गशुस्राम्डिमाम्मरस्रिन्।

ळ्ट्रस्यस्ट्रिंग्रुस्रम्थेन्। यावयःश्वातिक्रस्यः सेर्यः याद्यः स्ट्रस्य स्

गहेअःमः(हिन्धिः)यःगशुआ

हेशन्यगळन्याक्षेत्रयायावित्यायावित्यायह्रव्यान्ता हेशन्यवा क्षित्यातेश्वयाक्षित्यायेव्यवित्यायावित्यायायावित्यायायाय्येव वित्या

याडियाहित्र डे.य

न्द्रभः संद्रः सेन् प्राचाविषः च साथि स्वित् चित्रं चित्रं चित्रं चित्रं प्राचिषः स्वरः स्वाः प्राचिषः स्वरः स्वाः स्वरः स्वर

ने स्टायळव्या हे वा स्ट्राय्य स्ट्रिया हो स्ट्राय्य हो स्ट्रायळव्य स्ट्रिया विष्ण हो स्ट्रायळव्य स्ट्रिया विष्ण हो स्ट्रायळव्य स्ट्रिया विष्ण हो स्ट्रिया हो स्ट्रिया विष्ण हो स्ट्रिया हो स्ट्

भेन्यदरातेशास्त्रित्यावयात्त्राति॥ भेन्यस्यात्रात्रेशसात्रीत्रात्रम्॥

ने ने शक्त स्यामिक समिति ।

र्देशसें र से द जांबय होते से त प्राह्म ने स्थान होते । या से साम होते से साम होते । या से साम होते हो साम हो साम होते हो हो हो हो हो हो हो है साम हो हो हो है साम हो हो है साम हो हो है साम हो हो हो है साम हो साम हो है साम है साम हो है साम है साम हो है साम है साम हो है साम है साम हो है साम हो है साम हो है साम हो है साम है साम है साम है साम है साम है साम हो है साम है स

न्यामी सूर्याक्ष्यामित्र स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स

येन्यन्नरः भुष्यः र्र्त्तः येवः ने।।

र्नेवारी केंच्यायया केंग्रायवे सेना

ची खे. श्रु. श्रु. श्रु. श्रु. श्रु. श्रु. श्रु. यह वा हे वा हे वा स्वा श्रु. श्रु.

शेव हो रट मी म्बर देव मी केंच्या माया की या निवासी मा

यातः विगाः हुं वेशः य निर्मायाः निर्मायः अदि । या बुरः देवा या श्री श्रायाः या या विष्णः या विष

र्नेत्र श्री त्र श्र

न्नरःश्चेशःश्चेःश्वेर्यः व्यव्यव्यः व्यक्तिः व्यः व्यव्यः व्यः श्चेरः व्यव्यः व्यव्यः

यायाने सर्देव शुराकेत वे वा ।

यायाने के सूं भ्री से प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थित से से स्थान स्थाने स्थाने

धेव र्वे विवा

नेति र्ने ति ने रिश्वे के रूप दी से नि में प्रिंग नि से प्रिंग स्थित के स्था के स्था

वयायानवसाने हेन हें या मान्या।

हेशायमें उदामी ह्यायाधीय दें।।

दश्यी स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ

ग्वित्र सेस्य प्राचि हैं ग्रम ही र प्यटा।

कर्न्यानिहें स्वार्ध्यानि स्वार्ध्यानि स्वार्ध्यानि स्वार्ध्य स्वार्थ्य स्वार्ध्य स्वार्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्ध्य स्वार्य स

वें क्रुं न के व रें जिल्ला स्टाया न से न स्वाया स्वया स्वाया स्

गायाने यायान्यान्ति।

वह्नयाष्ट्रीराधिनामह्रवासेनाचे वा।

गुन्दिव्यास्र स्रीत्युन सर वया

ह्याश्चांयाः सर्वेरः श्चेरः देः देः दश्च

ह्याशः स्यायः त्यायः वियाः अर्थेटः त्रशः ह्याशः श्रधशः उतः तेः त्रः त्रः तरः वितः यः उधः धोतः यदेः श्रेरा

सरावी कुत्रसार्दे कें त्रिन्या। सेरायर देव के सेरासे का ।

सेशः र्ह्रेट प्रदेशित्र द्या श्री स्त्रीत विट सेट प्रस्था द्या श्री द्या सेट प्रस्था क्षेत्र क्षेत्र प्रस्था क्षेत्र क्षेत्र

> स्र-र-द्वान्त्रः विषया। न-र-कुः अर्थेनः नविः कुः नाल्वः न्ना। व्यन्न-स्र-स्र-निः केन्द्वः निः। ने-न-स्रवः स्वन्तः केन्द्रनः विना।

निरमिश्रं र्हें र पंते मिन्ने र निर्दे प्रतः प्रें प्रतः स्वे प्रतः है स्वरः स्वरः

र्देव.यर्रेश.यी ध्याश.लट.ट्या.श्.लट.यर्शेय.येषु.क्ष्र्रश.का.विधेत.स.

भ्रेश्वर्ष्य व्यक्ष्य व्यक्षय व्यक्ष्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्षय व्यवक्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्य

शुं प्रतित्या भी ते ते किंदा या ये वित्या वित्या दा दा भी ते त्या प्रति ये वित्या के प्रत्या के प्

रुषःगान्वरः रु: दे:हिंग्यरः भे:वा। रुषःगान्वरः रु:दे:हिंग्यरः भे:वा।

म्यश्री भी मार्च र ने निया निया मार्च र मार्च र प्रायालक र निया मार्च र मार्च

न्यरक्षेत्रक्ष्यं क्षेत्रक्ष्यं व्याप्त

हैंग्रश्या द्वराधा द्वराधा व्याच्या व्याच्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्य

शेन्यः हिंग्यायः यथितः वः वे।।
शेन्यः शेन्यः शेन्यः व्यानः।।

> त्रशहेंगाओर'राहेर्ग्णेश्वा। रूर्गांशळवंहेर्ण्याओर्व्हव्हेंब्राओ । त्रशहेंगाओर'रार्थाहेश्वा। रे.होर्रोंग्याहेश्रार्थाहेंद्र्।।

यर्देवःश्रुंयःकें याच्या स्टानी याच्ये हिन् त्यां यर्देवःश्रुंया येवः श्रे याच्ये वित्र श्रे याच्ये व

ने त्या श्री न स्वर्त्त श्रु शास्त्र न स्वर्त्त श्रु श्राण्य न स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्व

गहिरामा (देरासारे या सूर्ता) या गहिरा

म्बर्भासारेशास्त्री हिंदामाद्या देख्याद्युरावर्षे ।

५८.स्.(बरशक्षड्यत्वे.क्ट्रिंस.)यात्रश्रम

रटा श्रु विदेश सम्विद्देश स्वे राज्ये राज्ये राज्य स्वार्म स्वित्र स्वित्र स्वे

यानयः श्वःते अवायः देवाः वे। । क्षेः हवाः के दः दः हिंगावाः स्थः दशुरा। । देः क्षें रळ दः स्थानन्त्रः वे। ये दशुरः हे। । हवावाः से दः स्थः वान्य स्थः दशुरः हे। ।

मायाने मालया ग्रामिने सासु निर्मे माने सामिने सी हमा माने माने सी हमा माने सी

हेंग्रायम्भे त्युम्यम् विष्ठित्या ने हेंग्रायम् हेंस्य विष्ठा हेंग्रायम् हेंस्य विष्ठा ने स्वाया ने हें प्रयासित स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वया के स्व

<u> इन्यर रें ने शक्त सद्य मुरम्य शुक्र नु हें न्य द्व</u>ा

ने ने कंन अपानन भेन ने ।

श्रूम् । विद्यान्त्र विद्यान्त्र । विद्यान्

र्देन'नशु'न'ने।

यानय'ग्र'स्ट्रिंन'र्छन्'स्ट्रंन्स'क्र्या।

यानय'ग्र'सेन'ने'यह्ना'ग्रेन'रो।

ग्रेन'ग्रुस'ग्रुम'र्थ'ग्रेन'रोथ'से'य्युम्।

ग्रेन'ग्रुस'ग्रुम'र्थ'ग्रेन'रोथ'से'य्युम्।

न्धेरःव्याधन्यरः सर्वेदः यः यविवा। ध्ययः देशः यः वे स्थेन् धेरः न्हः।। यावयः ग्रायाववः वे स्थेन् धेरः दे।।

म्बिश्चास्थार्थाः प्रित्तिः श्चित्र क्ष्याः स्वादेश्वास्थाः स्वादेश्चास्थाः स्वादेश्चास्य स्वादेश्चास्थाः स्वादेश्चास्य स्वादेश्चास

गहिरामा (देखन प्रमान के या

र्ट हैं 'दर्श रादे हैं क्ष्य स्ट्रिं स्ट्रिं क्ष्य स्ट्रिं न्य स्ट्रिं स्

तिः र्रेषाः यः स्वाः स्वाः सः हिषा यः स्वेः हिष्यः र स्वाः प्राः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्व रषा या स्वाः स्वाः सः स्वाः स रषा यो सो स्वाः सः स्वा सः स्वा सः स्वाः सः स्व ५८: सॅ. (पर्मायायायविक्षेत्र स्वामार्स्वायायाय स्वामार्म्य स्वामार्म स्वामार्म्य स्वामार्म स्वामार्म्य स्वामार्म स्वामार्म्य स्वामार्म स्वामा

श्चित्र'यि श्चित्र'ये । वित्तिया श्चित्र'ये । वित्तिया श्चित्र'ये । वित्तिया श्चित्र'ये ।

त्रुभः स्वे त्र्वे त्रक्षन् स्व त्र्युमः स्व विषय स्व निष्ठे त्र स्व त्य त्र स्व त्र स्व त्य स्व त्य स्व त्य त्य त्य त्य त्य स्व त्य त्य त्य त्य त्य त्य त्य

गहेशपा(व्यव्यक्त्वाक्त्रवाक्यवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रवाक्त्रव

भ्रेष्ट्रम्यायप्तर्देशः अत्राप्तर्द्ध्यः यात्रप्ता द्विष्यत्र प्रम्यायप्ति । प्रम्यप्ति । प्रम्यप्ति

न्देशसेन्देशस्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

श्ची सळद् न्द्रान्त्र स्वर्त्त विश्व क्ष्या क्ष्या

বান্ত্র শ'ন'(देव:व्यव द्यायायः) অ'বান্ত্র শা

सर्रेरःवस्त्रप्रदा क्रियःवन्तरःहै।।

५८:सॅ (अर्र्-रन्ध्रुवः)दे।

विर्मिन्द्री स्वास्त्रे श्रु वा बुद विर्मेन अर्थे अर्विन से वा स्वर

ব্যুব'ন'ম'ড়ेद'নম'য়য়

माल्व व्ययामाल्व मुन सेव ले वा

मान्न्। मिर्म् ना से मान्य्यात्र स्वास्थात्र स्वास्थात्य स्वास्थात्य स्वास्थात्र स्वास्थात्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य

श्रेव हे हे हे हुन श्रुव श्रेव हो न

दे के अंख्वा विदेवा अंस्वा प्रदे श्री अळव वा बुद निर्धे न अंशी अंस्वा प्रदे श्री अळव वा बुद निर्धे न अंशी विदे श्री अंस्वा प्रदे श्री विद्या अंस्वा अंस्व श्री विद्या अंस्व श्री विद्य अंस्व श्री विद्या अंस्व अ

বাইস:ম:(য়য়য়ঀঢ়৾)য়য়য়য়

म्या प्राचारायहेत्र प्रति हे सान्या प्रति स्थान्य स्थान्य स्या स्थान्य स्थान्

५८: स् (श्वानः हना अरथः नहेत्रः प्रदेशहे अर्पना र्याः अळत् व्यावने व्यानदे छुवः)दे

र्ने अयार के क्षेत्र स्वाय अयय श्री। ने प्यतः ने के क्ष्माय अयय श्री।

कु प्येव ।।।

सेवे नहें सार्च प्रान्त प्रान्त प्रान्त से न्या प्रान्त प्रान प्रान्त प्रान्त

ने त्यश्न ने ख्रिषी।

न्देशकानेशनभ्रेन्ह्गशास्त्र हिं।

ह्याश्रादिह्द शेस्रशं प्रेस्प्य प्रेस्प्य प्राप्त स्वाश्रादेश स्वाश्य स्वाश्रादेश स्वाश्य

त्र्येयः न्विन् । चेन्यः । विन् । विन । व

विश्वास्त्र स्वास्त्र । श्रेष्ट्र स्वास्त्र । स्वास्त्र स्वास्त्र

देशन् ह्वाश्चाईन्विष्ण पहें व ना हैन्ह्वाश्चादहें व छी वाई कें न्या प्राची स्वीय प्रावहें व प्राचय प्राचे खुया नु वाव श है। वाव ना प्रेचित्र हों प्राचा कें प्राची कें कें प्राची कें प्राची कें प्राची कें कें प्राची कें प्राची कें कें प्राची कें कें प्राची कें प्

> देशिर्देश्वर्धः स्ट्रिंद्या । देशिर्देश्वर्धः विद्यास्तरे स्वर्धः स्ट्रिंद्या । देश्वर्थः स्ट्रिंद्यं स्ट्रिंद्यं

यासे ख्वानु हिंग्रास्ते हे सान्यं प्राप्ते न्या है न्य

र्यः र्वन्यः स्टान्यः स्ट्रेन्यः स्ट्रेन्यः

श्रीयायाक्षेत्रामान्याक्ष्मित्राच्याक्षेत

द्रिन् र्श्ट्रें त्रहें न सर्देन सुमा श्री हुमा श्री न स्व र्श्ट्रें त्रें त्रें त्र स्व र्श्ट्रें त्र स्व र्थें त्र स्व र्य र्य र्थें त्र स्व र्श्ट्रें त्र स्व र्य र्थें त्

ने भी मान है ने स्था न

कुं न्या वियासम् वः श्रेस्य ग्री ।

भूमा शुर्रे श्री प्रदेश से श्री श्री हमा सर्रे हमा साम श्री मा श्री प्राप्त स्वार स

गहिरामा(न्यायायवे हेरान्ययायवे याचिर क्षा) या गुरा

यः न्रीयायः संदेः ह्यायः प्यायः न्रीयायः ह्यायः स्वायः व्यायः व्यायः स्वीयायः ह्यायः स्वायः स्वीयः स्वायः स्वायः

५८:सें (अप्तक्षेत्राम्यदे ह्नामण्यद प्ता)है।

द्याया'स'हेद'वे'श्रस्थर्थ'उद्दु। भ्रीद्याया'स'हेद'वे'श्रस्थर्थ'य्युच'स'धिव।। क्रिंद्रस्थर्थ'युच'सर्द्युच'स्थर्थ'यु।।

र्देव ग्रीयान ह्रियाय हिन्य या धीवा।

द्याया संक्षेत्र हो त्याय द्येया य ख्याय स्थाय य अग्य स्थाय स्थाय

न्यायाः प्रस्त्राच्याः प्रस्ति प्

त्वावाः त्यः ने त्यः ने त्यः नि त्याः व्यावः विष्यः व्यावः विष्यः व्यावः वयः व्यावः व्यावः

त्रावायावर्ग्यर्ग्यह्त्याः ह्वायाः शुः अर्थेरायाः प्रेतायाः प्रेतायाः वित्रेत्रः प्रेतायाः वित्रेत्रः प्रेतायाः वित्रेत्रः प्रेतायाः प्रेत्यायाः प्रेत्यायः प्रेत्यः प्रेत्यायः प्रेत्यायः प्रेत्यायः प्रेत्यायः प्रेत्यायः प्रेत्यः प्रेत्

व्यायः ध्रेरः वे व

क्षात्युनःभूतः हेवाः भ्रेष्यान्। । इसः त्युनःभूतः हेवाः भ्रेष्यान्यः भ्रेम्।

वि'न द्यायानाने हिन्गुर हे अप्त्युन हे अप्ते अप्ते श्रुव हे या भे यावश रादे हिन्द्यायान र हिंगु अप्ते बिन्तु

भूट न अर्थेट से प्रस्ति । भूट न अर्थेट से प्रस्ति ।

कं'ग्रार क्षेत्र केमा भ्रे मात्र भारति 'वमायो' मं में वेदर मार 'यभ 'ग्रार ग्रुम' ग्रुम' स्था प्रमाया प्रमाय प्

श्रुनःश्री क्रिन्यामिन्द्रिम्प्रमानि स्ट्रिम् याया है। स्ट्रिम याया

ने ने कं न अ के न अ भी ना

न्ध्रेग्रास्त्र्रात्र्या ह्ण्यास्य स्वापास्य व्यापास्य व्यापास्य व्यापास्य व्यापास्य व्यापास्य व्यापास्य व्याप

णटात्र द्यामा सार्याच्या सार्या प्राचीमा चु द्रिया मा चु

ने श्विमः महाश्वर्या महिन्दा प्या । ने श्विमः महा श्वर्या श्वर्या श्वर्या । महात्या ने श्वरं के स्वरं श्वरं से सार्वे श्वरं से सार्वे ।

न्यायाः सम्भःगुनः यहेन् गुः भेना।

वर्रे र परेश दवे धेरा

देशक्रिन्द्रस्यायःदेवःश्वी। यवश्यःश्वेद्रस्यःश्विद्राः। यवश्यःश्वेद्रस्यःश्वद्रम्। धेवःश्वेद्रस्यःश्वद्रस्थेद्रा।

त्वायान् भेवायाः स्वायाः शुः त्युन् न्वतेः ख्वायान् भूतः नियाः शुः निर्देशः व्यायान् भेवायः नियावः व्यायान् भेवः व्यायान् भवः स्वायाः व्यायान् भवः स्वायाः व्यायाः व्यायः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायः व्यायाः व्यायाः व्यायः व्यः व्यायः व्

श्चायार्श्वम्यारम्यागुन्याह्येन ५५१।

वहिमा हेत्रमाल्य र्श्यम् राधेन श्रुम मलेवा।

रगःश्चानायः सँग्रास्य प्राप्त । स्वान्ध्वानियः श्ची सार्वे । स्वान्ध्वान्य । स्वान्य । स्वान्य । स्वान्ध्वान्य । स्वान्य । स्वान्य । स्वान्य । स्वान्य । स्वान्य । स्वान्य ।

द्याः श्चायः द्यायः श्चायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्ययः स्वयः स्

न्नरः सं त्यक्षात्रन्त्रः न्वि स्वक्षकान्तः । । त्यात्यानः याव्यानः याव्यायः याव्या

दमाः भ्रान्तः गुद्रः बद् ग्याः श्रीम् शान्तः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्व

ने महिरामिर्दिन ज्ञामिर्दिन ज्ञेन मिर्मिर मिरामिर भर्मिर मिरामिर मिरा

गुवः सिवेदः द्याः श्चः त्यः स्वादः देवेदः से देवदः से देवेदः से देवदः से देवेदः से देवेदः से देवेदः से दे

यतःयः नेतः हुर्म्मना हुः शुरुः यः नेते छेरा

गर्अस'म'(त्यायान्सेनायाह्नायाशुः ह्यून्यते पुत्यानसूत्राया)ते।

यम्यान् के अद्भान्त । व्यायाने के अद्भान्त । व्यायाने के अद्भाने । व्यायाने के अद्भाने । व्यायाने के अद्भाने के अद्भान के अद्भाने के अद्भान के अद्भाने के अद्भान के अद्भाने के अद्भान के अद्भाने के अ

त्वायान्श्रेषाश्चरम्वाश्चर्यान्तः कुर्वे रावदे ख्यावाहेश्याम् ने ने ने न्यान्त्रावान्त्रे विद्यान्त्रा कुर्वे रावदे ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्याचाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्याच ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्याच ख्यावाहेश्या ख्यावाहेश्याच ख्यावाहेश्याच ख्यावाहेश्याच ख्याचेश्याच ख्यावाहेश्याच ख्याच ख्याच

বাধ্যুম্ম শে (दे দ্বা বী ক্লু মক্তর) অ বাই মা

श्रुवःह्वाश्वःयत्रेत्रः यदेः हे शः न्यवाः न्द्रेशः संः व्यः वहेवः यदेः हुः श्रुवं वहेता । व्यवाः ह्वाशः वहेवः यदे वहेवः यदे हुः श्रुवं वहेता ।

देश्याद्र्याक्ष्याः श्री । व्याद्र्याः व्या । व्याद्र्याः व्याद्र्यः व्याद्यः व्याद्र्यः व्याद्यः व्याद्र्यः व्याद्र्यः व्

कुं न्दर्वित्र नेदंशी न्द्रिय संग्री न्द्रिय संग्री न्द्रिय स्था संग्री न्द्रिय संग्री संग्री न्द्रिय संग्री न्द्रिय संग्री संग्री न्द्रिय संग्री न्द्रिय संग्री न्द्रिय संग्री न्द्रिय संग्री संग्री संग्री न्द्रिय संग्री संग्री न्द्रिय संग्री संग्री न्द्रिय संग्री संग्री संग्री न्द्रिय संग्री सं

देशके हिंगायशश्चर प्रवेश्वेश । श्वीश्वार प्रवेश श्वीश्वार प्रवेश श्वी । या स्टार हिंदा श्वीश प्रवेश श्वी । श्वीश प्रवेश श्वी ।

त्र्वेयः सः द्रिंग्यः द्रिंग्यः प्रत्यः यात्रः यात्रः त्रम्भतः यादः स्वः द्रिंग्यः प्रत्ये सः द्रिंग्यः प्रत्ये संदर्भे स्वयः प्रत्ये संदर्भे व्ययः प्रत्ये संदर्भे स

यःहेन्यःश्रीम् ह्वाश्रास्य स्वाश्रास्य स्वाश्री स्वाश्री

बेन्यायानिनेनेनिन्

ळॅं ५ से ५ हिंग्रा श शु न हैं ५ मा ५ धी वा ने ने ने ने न ए कें न र ने न ने । यावयाः हैं स्थे नर ग्रायाया शिर रें।।

ह्वार्थाने विष्ठेर्यायार्ने न सुनायत्रम् या नुस्रामासे नुस्रामान सुनायाया ह्याश्रास्त्र महिन्याम् धिवायाने वे के यान निवाह के रियायाने पितायाने विवाह के प्राप्त के विवाह के प्राप्त के ग्रम्थः भेटः ग्रुनः धरे छे रा

> शेर्विग्रम्भःमःते प्रदे रहे सः विग्र ने प्यर श्रूर नर वर्ने न संभी।

मुख्यार्द्रायविवासूरायेत्रित्।

वर्तेयाध्ययायाद्येपायायदे ह्यायाशी याँ रें या श्रुवारी वर्ते रवा विगासेन्यायानेसामवेष्वस्यात्र्यस्यो दे प्याप्येन्त्रसूरात्र्र नरत्रेंद्रायाधी कुत्यारदानिवाद्या हिनाहेदासूदाना सेदाया हैदादुरों ग्राबुदःधुषः तुः ग्रुअः यशः स्दः सळ् तः ह्रिग्राशः विदः व्यतः यदिः क्रुः सळ् तः यद्येषः

यायायक्ष्रियायमः श्रुवायि के नाधि स्वाप्त्र श्रुवाया है। विकार्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र

वहें व.स.ज.वे.क्.ज.वरे स.चर्री।

निहेश्यः (रग्यायाये से ह्याया सर्व सुमास्य स्वाया सर्व सुमाया स्व सुमाया सर्व सुमाया स्व सुमाया सुमाया

त्रियः कुं से दार्या । स्त्रियः कुं से दार्या । स्त्रियः कुं से दार्या । वार्त्या स्वार्या । वार्त्या । वार्ष्या । वार्ष्य । वार्ष्या । वार्ष्या । वार्ष्या । वार्ष्या । वार्ष्या । वार्ष्य

५८:में (वह्नवाक्तुः सेन्द्रसम्बर्ध्वास्त्रुसः क्रीसः क्रीस

ग्याने स्टा श्री प्रदेश प्रायह्या निवे क्ष्या स्वार्थ स्वार्थ

याववरन् या बुद्दान यह व राय है दा प्राय है

न्द्रभाष्यभाभ्राः ह्याःयाववः न् स्थित्।

हेशन्यमायशमावनन्त्रस्त स्त्रस्त स्त्रस

मुनः श्रे : इश्वा वित्राची : श्रे : ह्या : या है श्वा वित्र : वित्र :

तुःसवेःनर्देशनेःन्हेन्। ह्याःसेन। । हिनाःनसःनक्षेत्रःकेसःनहेन्। ह्याःसेन। ।

र्के अंके अंक हेन ह्या नुं अदे निर्देश में ने निर्देश में अं ह्या माने अंक माने हिंदी हैं माने अंक माने हिंदी माने अंक माने अंक माने अंक माने अंक माने अंक माने माने अंक माने अ

श्ची 'भी 'हेव'वे 'श्चान' भाषी । श्ची 'भी 'हेव'वे 'श्चान' भाषी ।

पिट्रिया में 'रेया श्रायंद्र' श्रायंद्र स्वायंद्र देवर स्वेत स्वायंद्र स्वयंद्र स्वायंद्र स्वायंद्र स्वयंद्र स्वय

गहिरापा(लॅन्द्रहेरान्यम्मीरास्त्रान्य)त्या

हेशन्यग्नेशयम्बिशयम्य हिंदाप्त हिंदाप्त हिंदाप्त हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा है। हिंदा हिंदा हिंदा है। हिंदा है। हिंदा हिंदा है। हि

ने'स'युन'न'ने'क्ष्रर'ने।।

रनः हुः गुनः श्रेरः हे अः दर्भे गः धेवा।

भ्रवशायम्। पार्ट्या स्वाप्तराहेश्या स्वाप्तरा

वर्त्र अर्वेद न से द से द से द

भ्रवसायायम्। वर्षे वर्षे स्वाधिकः स्वध

यदी 'क्ष्रम्ह्याका को द्वा का स्वा का स्व क

तृतिक्षुत्यस्त्रे, त्रात्यायात् वित्वा ची सहिता स्वास्त्र स्वास्त तुर्यान्देशस्तिः स्टानिव्यन्त्। । शुर्यान्देशस्तिः स्टानिव्यन्। । शुर्यान्देशस्तिः स्टानिव्यन्। । शुर्यान्देशस्तिः स्टानिव्यन्। । श्रित्याश्चरः देशस्ति। । श्रित्याश्चरः देशस्ति। ।

याच्या य

देश्यास्य स्थान्य स्था । हेश्यास्य स्थान्य स्थान

त्रेश्वास्त्रभुत्यते तुर्शस्त्र हे श्रास्त्र प्राप्त ह्या प्रम् वहित्य स्वर्त्त हे स्वर्ण प्रम् वहित्य स्वर्त्त हे स्वर्ण प्रम् केत्र स्वर्ण प्रम् केत्र स्वर्ण प्रम् केत्र स्वर्ण प्रम् केत्र स्वर्ण प्रम् स्वर्ण स्वर्ण प्रम् स्वर्ण स्वर्ण प्रम् स्वर्ण स्व

र्में में मार्थिय के व्यास्था में स्थान के स्था

विष्यः कुं न्द्रः व्याप्य विर्धे क्षेत्रं क्षेत

गहेशमः(ह्निम्मम्मः)दे।

सर्विन्शुस्राम्ची सन्देशस्ति स्टानिव्न महस्र स्टानिविन्न स्राह्म स्र स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्वानिव्य स्र स्वानिव्य स्

यद्रः भ्रेत्र। यह्याश्रायदेश्वाय्यत्रः भ्रुष्याय्यत् भ्रुष्याय्यत् भ्रुष्याः स्वाय्यत् भ्रुष्याः स्वाय्यत् भ्रुष्याः स्वाय्यत् भ्रुष्याः स्वय्याः स्वय्याः स्वयः स्वय्याः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

श्चाने भी भावे श्वें भारत्य हैं श्वें दाने श्वें श्वें दाने से से श्वें दाने से से श्वें दाने से से श्वें दाने से से से से से श

म्राज्यामः (विद्वास्त्रम्भवास्त्रेन्न्यास्त्रस्वास्त्रस्वास्त्रस्वास्त्रम्यास्त्रहेन्। स्त्रम्यास्त्रस्वास्त्रस्व

यदान्तर्मा श्रेष्ट्रावा क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्र स्थित्र स्थित्य स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्य स्थित्र स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य

श्रूम: श्रूम: द्रिम: देश: से मार्थ हैं मार्थ हैं मार्थ हैं से मार्य हैं से मार्थ है

श्रीम्यारेश्वी नहें न्याधिता।

रदःश्रेषाः ठेवाः विवाधाः यः श्रेष्ठ्याः यरः वर्हेदः दे। श्रूरः श्रुदः वरिः दर्भः सं स्थेदः यरः श्रुरः यः यः श्रेष्ठः वर्षे अः वर्हेदः यः धेवः यदेः श्रुरः वरिः

द्यान्य स्वान्य स्वान्य स्वित्त स्वान्य स्वित्त स्वान्य स्वान

না ব্যুষ্ণ মে (বাৰ্ব দ্বানী দ্বানা দে) অ না দ্বী বা

५८: में (मान्व क्रिया महनाया सदे से ह्या माक्र या स्मानाया) दे

देवाश्वराख्यां श्री वाश्वराद्य के वाश्वर के वाश्वराद्य के वाश्वर के वाश्वर के वाश्वर के वाश्वर के व

यादायो। अवतःयाहेश क्षेत्र प्येत् । प्रतेया प्रतिया प्रतिय प्रतिया प्रतिया प्रतिया प्रतिया प्रतिया प्रतिया प्रतिया प्रतिय प्रतिया प्रतिया प्रतिय प

देश्वान्य सम्वान्य हिश्वास्त्र स्त्रीत्र स्तित्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्री

ने अवदने न्यायादाया नहेंना।

हे भूट न्वित्या है प्राप्त के स्वाया के स्वाया के स्वया के स्वया

गायाने सृष्टी मासे मायाने मायाने स्थान

न्या है स्रम्योदायाद्या है संसेदायाहि साम्याधियाद्ये वे वे

ने हेन से ह्या है या या धीवा।

स्रा स्रा

इगायार्शेग्राश्चिराशेराधेरा।

वे व

.....शबदायाने हे सून्।

र्वेत्यम्यत्वित्राचित्र्यः वित्यान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान

स्राधेन्यक्षेत्राम्भे स्राध्यायक्षेत्राचा क्षेत्रासेन्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः स्राध्या स्राधेन्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्राम्यः वर्षेत्रः वर्य

व्यूट्य स्वायाः स्वायाः

स्रवतःलुश्राधिरःसरःदश्चरःयःस्रवी।

याता. में विश्वास्त्रास्त्रयः स्त्री ।

नायाने कुंश्याये समयान्या वन्नसानु ही स्रोते समयाधिनाया ने प्रिक्षा है। स्रोत्ता सम्बद्धान्य स्वाप्ता के स्वाप्ता

ह्यन्य संभित्र संभित्र स्थित्र स्थित् स्या स्थित्र स्थित्र स्थित् स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थित्र स्थ

न्द्रभःश्रं श्रम् अन्यत्र्नि अव स्था। ने याने प्रेश्वा श्रम् अन्य स्था। न्रेस् स्थाने प्रमासे प्रयाम श्री ।

हिन् सर्न् नु नु क्रिं स्वार्थ स्वार्थ से न्या स्वार्थ स्वार्

ल्येल.ग्रेट.स्ट.स्ट.क्.च्या ।

थॅर्ने हेर्ने प्रत्वेय रे प्यरा।

ह्यान दें न परी पर्यं राया ।

ब्रिंदःह्याः यदेः ध्रेत्र

ग्राम् विगासेम् स्रामे हो मुन्ता

दन्रशत्यादः विवास्य स्थाप्त । स्याप्त । स्थाप्त । स्थापत । स्यापत । स्थापत । स्थापत

न्देशः संस्थान्य स्थान्य स्थान्त । । व्यायान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्

ने भ्रीत्र त्रेय प्रदी हमा स्वर प्रश्ना

न्र्स्थार्थे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये

गहिरापा (रहास्याया ग्री सहया नशुः नः)दे।

ने भ्रेन भेर में निक्षा वर्ष

नईन्'ग्रु'ब'न्न्'ठ्व'र्क्के'वै।।

मन्त्रभेतःर्देवःसर्देवःस्ट्रेतःख्वा।

श्रुष्यदरः व्यापिते हेता धेता वे ।

नर्हेन्। मुःह्रभाषान्न्रांपाठ्वामुः मुःवत्रभाग्रीः वर्त्रेवायायद्देवायवे हें।

सूर्यापर व्याप्त अर्थेर विश्वा विश्व क्ष्या के स्वाप्त विश्व क्ष्य क्ष्

श्रून्देग्राश्रीयःश्रून्यः श्रून्यः श्रू

स्रोतः स्रान्तः स्रोतः स्रान्धः स्रोत्या स्रान्धः स्रोतः स्रान्धः स्रोतः स्रोत

अळ्व'ग्र्नुर'णुय'त्'ग्रेट्'यर'ठव'हेट्'ग्रट'येव'यर'वय। सूर'यर्वेट'त्रेर' अर्ज्द'ग्रीरा'ग्रे'ये'दे'यळ्ट्र्य'यर'वहेव'य'णेव'यदे भ्रेर्

गलफें ने किन्द्रने धीव प्रदेश

धिरवःश्चीःवहेवःश्ववःवा।

न्धे हेन धेन भेर मुन ने था।

ळॅट्रायाववाग्रीयारी।

गयाने महेन धेर श्रुव सेन वा

गाया हे । यहे दायते शिक्त श्रेत से दार्चे वा

ने केन ही र व निये या धीवा।

ने निये प्यम् निया अधिव सम् वया नहेन सने हिन् ग्री हिम्

गयाने अर्बेट या दे दिसादी।

ळॅ ५ अरु गुन न

ण्याने सूर अर्घेर प्रवेश से प्यासूर सामार्थेर प्रवेश से पे प्रवेश से प्रवेश

.....<u>५६४</u>गव्यता

ने हिन क्रें वर्षेया श्री वर्षेया।

हिन्यम्में भेषा हैं हैं के शास्त्र हैं विषय विषय विषय है के लिया है विषय है के लिया है

नेश्वात्रात्रक्ष्ण्यात्र्व्याः विद्याः विद्या

हिंद्रश्रीश्राच्या याद्येयाः क्रियाः क्रियाः क्रियाः व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व्या

সঙ্গিশ্ব (মন্দ্রী প্রস্কা) বি

ग्वित्र'न्द्र'अळ्अर्थाते श्चित्र'न पी।

वेव न सम्मानमानमानमानमान

ग्रायाने ने म्यायाया हैं या श्रीमा

इब् भेव

गयाने हैं ने न् निर्मायायान हैं या यदे हैं माइत या से तर्ने ले ता

······अधितःविकान्निमःर्सि।

ह्नाश्रायात्रेष्ट्रिश्चा हिना रात्रवियात्रवे हिना

सर्देव-शुस्राय-१८-१ सर्देव-शुस्राय: सुर-१५०८-११वे । ५८-सें (सर्व शुस्राय-१८-१) व्यामा हेसा

सर्दिन शुस्रा शुक्रा सक्दि हिन्दिन सक्दि मानिये दिने हो सर्दि।

न्दःर्से (सह्वःश्वयःश्वयः श्वरः) त्यात्रिश्या सर्हेन श्वयःहिना ज्ञायः नुः नश्चुनः यः न्दा हिना न्वरुशः न्वाना सर्हि। न्दः से (सह्वःश्वयः हेना ज्ञायः नुः नश्चुनः यः) त्यः नाशुश्चा श्चुनः श्चेनः नुनेन् विनः श्चुनः नाव्यन् श्चेः श्चुनः श्चेनः नुनेन् नाना स्टः नीः श्चुनः श्चेनः नाव्यः नश्चवः सर्वे।

দেশেঁ (শ্রুন শ্রুন শ্

सर्देव'श्रुस'हैंग'न्द्र-श्रुय'न'वे।। सर्देव'श्रुस'हेंग'सेन'हेव'ठव।। गुव'श्री'त्रद्रभेरा'हेग'सेन'हेव'ठव।। र्शे'र्से'र्न्द्रभेरा'हेग'न्येव।।

नश्चनः सः श्वां वा स्वां वा स

नायाहे निवराने साहें नायाधितात्र हिंगायाध्ययाया शेरवर्शित्र के निवराने स्वाप्त के स्वाप

स्राचनित्रवित्रित्ता स्रित्रे हिंगा हिंगे हिंगे हिंगा हिंगे हि

महिराप्ति(हेराप्यामिरास्त्रितःहुवा)त्य

न्नरः विश्वः हिंगा ज्ञायः न्, नश्चुनः यः न्दा अर्थेटः हिंगा गाठिगः एः वर्देनः यः न्वायाः पर्वे ।

५८:स्. (२वटः वेशः हेवा चत्यः ५: वश्चुवः यः) दे।

नम्ते प्राचित्र वित्र वित

न्रेस्य व्यास्य व्यास्

नेश्वान्त्राचित्तां व्यक्षां श्रेश्वान्त्राचे वित्तां व्यक्ष्यं वित्तां वित्त

छन् प्रमास्य अप्यास्य स्थानि । विद्यास्य स्थानि । विद्यास्य स्थानि । स्थानि । स्थानि स्थानि । स्थानि ।

श्चान्यमान्त्रेत्। विश्वास्यम् वित्रा

ह्नि ने ने ने में हम स्थार की खेला यह वाहर ये के ने के ने का हिंगा स्था

नहारे क्राया हिरा ही रानरा हो राय है स

दें त श्रुवे खुवा ग्राम् धेव ले वा

नेविःवनिः विश्वाने व

नम् वर्तेषा ग्रेन् परि में नापि सूर पुषा ने ते ननर से दे सर्व सुसा

ची मा बुर रें नि ची खें र खा क्षेत्र स्वर प्रस्ता के स्वर र नि स्वर स्वर खें स्वर ख

नेयासूरामान्याध्याध्यास्य । विवाह्यस्य । विवाह्यस्य । विवाह्यस्य । विवाह्यस्य ।

श्रेवायार्द्वस्थर न्यावयाया ।

प्रदेश्वेश्वर व्याव्य श्रेश्वर स्थाना ।

देशे दाञ्चा व्याव्य श्रेश्वर श्रेष्ट श्रेष्ट

> न्नर-संदे-ग्र-न्नः क्षेत्र-संन्या। माल्व-रमा-डं अ-ग्री-श-अ-द्वी-र-से-प्रा-त्वा-डं अ-ग्री-श-अ-द्वी-र-से-प्रा-त्वा-डं अ-प्री-त्वा-डं अ-प्रा-त्वा-डं अ-प्र-त्वा-डं अ-प्रा-त्वा-डं अ-प्र-त्वा-डं अ-प्र-त्व-डं अ-प्र-

ने स्वराधित संगित्त स्वाधित स्वाधित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स

यायाने सेन्यते सेन्य न्याया प्रमाय प

गहिरामा देवा पुरते क्ष्या प्रति क्ष्या क्ष्या प्रति क्ष्या क्ष्या प्रति क्षय क्ष्या प्रति क्ष्या प्रति क्ष्या प्रति क्ष्या प्रति क्ष्या प्रति क्ष्या क्

न्नरः नेश्वाध्यायां क्षत्रः विद्याः सर्वायाः न्याः निवः विद्याः स्वयः नः श्वदः निवः निवः निवः स्वयः नः श्वदः निवः स्वयः स्वयः स्वयः निवः स्वयः स्वयः स्वयः निवः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्

५८:द्री (२वट.केश.लेका.कट.क्ट.कट.कटावहवा.सर.बका.य.श्रंट.व.)द्री

यायाने स्थान्यायो यायाने स्थान्य स्था।

यायाने अर्थेटाहें या याने शाया प्राया प्राय प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया

याववःश्रीःवरःसेयाश्रावे श्राम्यः स्वा ।

न्तरः भेशः हैं नाध्यरः पर्दे नाधान्त विष्णः भेरान् नाधान्त विष्णः है नाधान्त विषणः है नाधान्त है नाधान्त विषणः है नाधा

गहिश्यः (देवः वह द्यावाः वाहिशः) व्याविशः वितः प्यावाः विश्वः प्यावाः विश्वः व्यावाः विश्वः वित्वः व्यावाः विश्वः वित्वः व्यावाः विश्वः वित्वः वित्व

गायाने अगाया से अर्थे माना निवा।

न्रेंशः श्रीयाश्रास्त्रित्रा ।

ग्याने स्वाया से स्वाधित्र स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स

पे मे तर हे मा हर में अप सर त्यारा । भे मे तर हे मा हर में अप सर त्यारा ।

न्द्रभः सं तिहें व प्रते श्वें व श्वें श्वें

व्दीर-देव-गुव-दर-डेग-डर-द्या

दर्शाउव नगर इस्र अधिन भाषा

नेयायानु या हेना हर से भ्रे निरादर्ग निरादि स्वायायां वरी राम बुम्या

श्चायाः श्वायाः स्वायाः द्वायाः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वयः स्

र्देन'नश्चु'न'ही। नावन'ग्री'नर'कन'सेन'सरे'धी'मो'स'रहर'सह हेना' ठर'र्वेस'सर'दिव्यास'से क्री'नर'रेस'ठन'नु वेस'सर'रेस'स'से 'दबन' सम्बन्धा यहुवाःलेशःहुवाःसँ वावहःश्वःश्वःशः सम्मन्द्रः र्केन्द्रः प्राप्तः रहेवाः स्त्रः स्त्रः विद्याः स्त्रे स्त्रः विद्याः स्त्रे स्त्रः स्तरः स्त्रः स्त

ने भ्रीम क्रिंके के वा उमाय व्याप्ता

देशवः र्ह्में नुः श्रः केवा करः क्षेतुः वरः वश्चा देः श्रूरः श्रे क्षेत्रः व्यवद्या व्य

धीन हिंगायनयः विगाध्ययः या प्रति । जुँगांगाध्ययः या प्रति । जुँगांगाध्ययः या प्रति । ज्ञैं । ज्ञेश्वा । ज्ञेश

ल्य न्यान्य स्वयान्य स्यान्य स्वयान्य स्ययान्य स्वयान्य स्ययाय स्य

रेशर्रावहें व्ययस्थे वशुरर्दे।

खर्गाः हिंगान्य ययदाविता ख्रियाया यहिता मांयेदर ख्रिया स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स्टाइ स

यहें वारा के या शुरावादे शिया के या प्राप्त के या के

व्यायम्गुव्यत्वय्यस्य स्थान्य । द्वारायस्य याववः यश्चेत्रः व्यायः स्थानः । क्यायः स्थायवदः यश्चेत्रः व्यायः स्थायः स्थायः

भ्रुवश्यायम् सेन्यः से

माहेशमायाधराई नियने धिना।

हेन क्रियं निवासी क्रियं क्रि

गहिरामा(र्वे प्राचित्रामा)दी

समायासे त्या सम्मान्ति । विश्व स्था सम्मान्ति । विश्व सम्मान्ति ।

स्वायायाः दे तिर्वर्यस्य स्था स्वार्यः हिन् त्याः स्वायाः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स

प्राचित्र में (न्वर में व्यय के क्ष्मण न्वावाय) वे ।

याया प्रवास के स्वास के स्वा

गुन्न स्वर्धित विश्व श्री विश्व स्वर्धित स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्व

देवेध्याग्रद्धाः दशुरद्धा

द्रंत्रः च्रेश्वः प्रदे द्वाः विश्वः विश्वः

यायाने महायाया ग्रह्मानदी । यो नायाने महाराज्या । यो नायाने स्वीता ।

ने निविदान्तर क्षेत्राय प्याप्त त्युम्।

धनःहिंगाने निवित्तः निकासि निवासि । प्राप्ति । विकासि । प्राप्ति । विकासि । प्राप्ति । विकासि । प्राप्ति । विकासि । विक

वर्ने वर्ने वर्ने वर्षेत्रा क्षेत्र वर्षेत्।

ह्याश्वादि त्रिः त्रिः प्रति । प्रति ।

क्रियाशाधीत्राचित्र। शृष्टी याठिया हाराहेत्राचित्र व्याधारी क्रियाशाधीत्र विकास विका

श्री श्राचित्त निर्मा के त्राचित्त निर्मा न

यहिरामा (देशमान्त्र प्यम् विम्यम् रा)

व्देशके श्रिट्सेम्यायाय विद्या

न्तरः सॅं त्या श्रे अप्तः क्षेत्रः प्रतः हिंगा न्या प्रश्चेत्रः वित्रः स्त्रः स्तः स्त्रः स्

गशुस्रायः(रहाने श्रुवाने द्वापाया श्रुश्ची प्राप्ते व्यापाया श्रिश्ची प्राप्ते व्याप्ते व्यापते व्य

प्राची (११८१ के कार्स्व क्षेत्र के कार्स के कार कार्स के कार्स के कार्स के कार्स के कार्स के कार के कार के कार कार कार के कार के कार के कार के कार कार के कार कार के कार के कार के कार कार के कार कार के कार के कार कार के कार के कार के कार कार के क

छन्। स्वर्धः न्द्रः वे । छन्। स्वर्धः न्द्रः व्यव्याः हेव । य्वर्धः न्द्रः व्यव्याः हेव । य्वरः व्यव्याः ने । प्रवरः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः विष्ठः । प्रवरः हिंगा श्रः यो ज्ववः न् द्र्ये व्यव्याः । प्रवरः न् व्यव्याः । प्रवरः न् व्यव्याः । प्रवरः न् व्यव्याः । ।

श्चेशन्त्र-त्र्वान्यःह्रश्वन्त्र-त्र्वन्त्रः व्यान्त्र-त्र्वन्त्रः व्यान्तः वित्र-त्र्वेशः वित्रः वित्रः वित्र

म्यायहम्यायाधितःहै। मान्वरः ५ तुमायायदे प्यारः भ्रे या उत्तर्वे स्यायदे भ्रे या प्रत्ये प्रत्य

देशवःश्चेशःतःत्वराविःवरःवशःगिष्ठगःशःत्व्वाःयः उवःवेःश्वरःयदेः श्चेशः न्यान्यशःश्चेशः न्यादेशः स्वर्धः याद्यः याद्

चे अव स्ट्रिंग्ययर हैं वा अव से वा अव

न्वराधिते भेशायादी त्याळे शाउव। देवाशादे वाववरान्ता देवाशा के वाववरान्ता देवाशादे त्याववरान्ता देवाशादे विष्णा के वाववरान्ता के वावरान्ता के वावरान्ता के वावरान्ता के वावरान्ता के वाव

বার্ম'ন'(য়ৢ৽৽য়য়৽৽য়য়ৣ৽৽৽৽)য়'বায়ৢয়

বর্ণী।

त्रः में (श्वर्वः रेन्यायः में न्यावनः सञ्चरः) वै।

रेन्यायं वित्रावन् प्येत्ते। श्वेः श्वेः श्वेः प्येतः श्वेः रेवः व्यावनः व्यावनः

ने हेन अर्द्ध रश्राम हेन भी व ग्राम

श्रेनामि खुयाया सर्वेदा से दाने ।

र्त्ते वर्ष्य हे नियम्

इस्रामागुद्दानुः र्त्तुः याहेश्वामान्द्रित्ताः प्रयम् हेन्। प्रयम् न्यायः विष्टः विष्ट्याः वेन्। वेश्वामान्द्रयाः वेश्वामान्द्रयाः वेश्वामान्द्रयाः विष्टः विष्टः

वर्धिन् वर्नु नर्दे अर्थे न्या श्री हैं ना नी कुर से रहर नर्न्र ने हैं से श्री न्या नित्र से नित्र में के स्वर् न्या हैं न होने श्री नहें ने हार्ने के मालक हो रन्न से अप्यहणान में अप्य से प्यन्ता

५८:में (व्यान्वनुन्द्रभारान्यः मुह्मानी कुरामे उद्गान)दे।

न्नरःसँ अप्तर्श्वन्त्रः यह तः सेन् श्वेन्। । यहोत्याना सर्वेद्राना सेन् प्रम्यान्य। ।

र्देन'यावर्धेन'यन्'न्देस्यार्थेन'यो सूयायावने'यासूयानु'र्थेन' र्ने'सूयायान्ता नु'यानासून'र्थेन'र्ने'सूयायये'सू'यर्थेन'यन्'न्देस'र्ये'न' धेन'र्ने'ने|

श्रुष्णः स्वर्तः त्याः श्रुष्ठाः त्याः स्वर्तः त्याः स्वर्तः त्याः स्वर्तः त्याः स्वर्ताः त्याः स्वर्ताः त्याः स्वर्ताः स्वर्ताः

वहिवा हेत त्यावायायाया सेता प्रवे श्रिम्

नःयदःवेशःग्रःथवःयगःदे।।

ञ्चना'स'इस'नडन'न्सेनार्यासेन्'हीरा ।

र्यः त्रः सूर्यः श्रीः सूर्यः याः ने द्वायः याः सूर्यः त्रः यहे दिः वित्रः वित्रः यहे दिः वित्रः यहे दिः वित्रः यहे दिः वित्रः वित्रः

है 'हे 'चेर' पर रेश मी हेग 'हे ने 'हे ने स्था में हैं में 'चेर 'पर रेश मी हेग 'हे ने स्था में हैं में मे हैं में हैं में

सेर्'यर'न्य

सवःगन्गश्रम्बरःवर्नेगशः ग्रेन्।।

र्वेनायान्य स्थान्य स

न्युअ'म'(हॅन्चेन्भुनहॅन्चर्नेव्याववर्खेन्नर्योश्वर्याचेश्वर्ये

हिन्देश में वित्र वित्र

५८:में (हिर:क्रिंशर्देव:मानवःसेर:ग्रहःश्चायहमायवे:र्वः)वे

न्द्रेशः श्रेटः वहुणः यः व्याद्यन् केशः देवः वाववः देशः यरः द्वीशः यः यः विवः यरः विवः यः विवः यरः विवः विवः व

यह्नव्यः से दः उत्तः श्वेशः द्राः सि । । नदः व्यः श्चे दः खुव्यः नदः ध्ये । । द्रार्थः से व्यक्षः से : श्वः द्राः ।

रेग्राश्चित्रायायात्रे हे यान्यमा सेन्।।

न्तुमान्यः उत्रेग्नायः श्रम्यः व्यापा । गुत्रः हेन्यः यः ययः श्रम्यः वर्षे वाया ।

न्तुमार्यं उत्रायं श्रेमा श्राप्ते व्याप्त्र श्रेमा श्राप्ते व्याप्त्र श्रेमा श्रेमा

र्देव'मालव'रुश'सहस्याद्वर'माले'छिर'र्केश'र्द्दर' हेव'र्दर'नहेव'यर' मालव'त्य'क्कु'त्व्वर्थ'यर्थ्यस्य माहें मार्थ्यप्रते हेव'र्द्दर'नहेव'र्य'र्थे 'त्वर्द्दर'र्यदे ' मालव'त्य'क्कु'त्व्वर्थ'य्थ्यस्य स्थानें मार्थ्यप्रते हेव'र्द्दर'नहेव'र्य'र्थे 'त्वर्द्दर्यं 'र्थे 'र्ये 'र्थे माहेश्यः (ह्यां क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्

न्द्रभःस्रावदावबदावब्रेदास्यवायाची।

शुःषादःयावदःयःह्यंशःयःश्रेदा

कैंगार्नेत्रः तुगायः नर्ने अर्थे विश्वायि श्चानितः विद्यायः सर्वे अर्थे विश्वायः विद्यायः सर्वे अर्थे विश्वायः विद्यायः सर्वे अर्थे विश्वायः विद्यायः सर्वे अर्थे विश्वायः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्थे अर्थे विश्वयः सर्थे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्थे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्ये विश्वयः सर्वे अर्थे विश्वयः सर्वे अर्थ

गायाने। मिरायाध्य धीवाया।

ने त्रझेर ने ने ने ने ने ना पीता

यदे र्ह्हेंदे कु सं धेव पदे ही म

यायाने स्यायाधीय व्यायाने स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्धिया स्वर्धिय स्वर्या स्वर्या स्वर्धिय स्वर्या स्वर्या स्वर्धिय स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या

"""पर मुठेमा ग्रम्।

निर्मित्रेष्ठिर विश्वास्त्रिम्।

विद्राया प्रमान विद्राय विद्र

दश्चेर-अर-र्से-त्य-दे-त्य-श्चेन । ठे-त्य-र-देवाय-य-देवाय-येन्-श्चेन । सेर-र्सेवाय-य-दे-त्येद-र्स-र्सेवाया ।

प्तरः व बद्दा भी खेद व स्वरं स्वरं

हेरः नह्नारायरायरें र।

केत्र'र्से त्या श्रें ग्रेंश संदेश श्रुष्ठे न्यर नं ह्या श्रांत्यश्रायह्या न्यर पर्देत् र्दे वि त्या

पाञ्चर:छुन:अेन:क्रम्यहग्रुशः व्यञ्चर:छुन:अेन:क्रम्यहग्रुशः यञ्चर:छुन:अेन:क्रम्यहग्रुशःअव।।

प्रमायवर्गि। ब्रेर्ग्या केत्र में प्राक्ति में ते क्ष्या क्ष्य मान्य केत्र में प्राप्त केत्र में प्रा

म्रीयाल्यस्य स्थान्त्र स्था । क्षुयाल्य स्थान्त्र स्था । क्षुयाल्य स्थान्य स्थान्त्र स्था । क्षुयाल्य स्थान्य स्थान्त्र स्था । क्षुयाल्य स्थान्य स्थान्त्र स्था । क्षुयाल्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

श्ची प्रत्रेश श्चित्र श्चित्र स्वर्ष्ट्र स्वर्प्ट्र स्वर्ष्ट्र स्वर्ष्ट्र स्वर्ये स्वर्ष्ट्र स्वर्ये स्वर्ष्ट्र स्वर्ष्ट्र स्वर्ये स्वर्ष्ट्र स्वर्ये स्वर

इसरायाक्षेत्रार्द्रवाभुत्ह्यायदेयायदे कुष्पराद्यार्यायसर्द्रवाव्यायदे क्रिया र्रे व या र त्या वर्षे अ य र अर्थे र व र से त्या र य र से से र याशुस्य (न्द्रभाग्नेदान्द्रन्त्रन्त्रने विन्त्रमः)र्

ষব্যক্ত্রপ্যশ্ব্যব্যা

हे सूर ग्रामायायायाया ग्रामार प्रोता। न्देशन्दरने न्दरसङ्दर्भमारे भेरा गरायारे अरामहें रास्याया

ह्याश्राहे स्ट्रिस्ट्रेचा हेत् श्री श्राचाश्राश्यश विवास स्ट्रीय स्ट्रिस्ट्रेचा से गदःधेवःयःदेःदेवःदेवःदर्भः भ्रेदःददःदेवःदेःददःवज्ञेवःवः श्रेग्रायः मदे ळ प्रवाद विवा वी श अर्द्ध दश मदे श्रिम में त वाद ख से द ने भ्रम व हैं न यदे सेट दे से अ ग्री दें द दे त्या यया या यह माया सेट पी द यदे से द স্থা

न्रेंशयान्रेंशयोन्यन्यायाध्येरार्थे।

र्देव हो द व राष्ट्रें द त्या दे दे राष्ट्रे राष्ट्रे द राष्ट्रे राष्ट्रे द राष्ट्रे राष्ट्रे द राष्ट्रे राष्ट् न्देशसंख्यातुः सेन् रहेशन्देशसेन् ग्रीः सुन्न न्याश्रास्य स्थाने ब्रेम ग्रामायमान्द्रमायन्यमान्त्रीप्रचे प्रमायमान्यम् र्रेदे:८्वर:ग्रेश:दह्या:र्गे:वे:दा

ग्राम्यायम् धि हे या दर्गे उद्या

ने प्यम्म में मार्थित वर्षे किया वर्षे किया

श्रुन्द्रिन्द्रः ग्रुग्यः स्रु । । श्रेनः श्रुं नः स्रेनः स्रु नः स्रु नः स्रु नः स्रु नः स्रु नः स्रु नः स्रु

व्यसूर्णेर्न्स्यास्त्रेर्न्त्रेर्त्तेष्ट्वेर्त्त्रेर्त्तेष्ट्वेर्त्त्रेर्त्तेष्ट्वेत्तेष्ट्वेर्त्तेष्ट्वेर्त्तेष्ट्वेर्त्तेष्ट्वेर्त्तेष्ट्वेर्त्तेष्ट्वेत्तेष्

মা প্র মানা (ইলামার্ন লালব মান্ মান্ শ্রান্ত নালী শ্রান্ত্র মি বেলাবান) মানা প্র মা

न्यायाञ्चात्रेयायह्यायवे कुष्यक्षेत्र सर्म्य प्रमान्य क्ष्याय क्षय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्ष्याय क्

५८:१. (२.स.च.स्मान्डेनात्रह्नात्रते कुःसळ्द्रस्ट्रिस्त्रसूद्रमः)दी

न् स्यायाः श्चायां केयाः यह याः संश्चे दिन यात्वन श्ची श्चु सळवा उत्रायाधिन । समः वया शन्त्रश्चरम्परन्द्रश्चेशःश्चेशः। तेष्ट्रतेष्ठ्रश्चेशःश्चेशःश्चेशः। तेष्ट्रतेष्ठ्रश्चेशःभवेशःशतेशः। तेष्ट्रतःहिषाशःभवःष्ट्युतःतःधेत।।

मन्त्रम्यः विश्वास्य स्वी। हिंग्रास्यः विश्वास्य स्वी।

निराम्बायायहें वर्गते प्रत्या से के स्वार्थ के स्वार्थ

ने श्री र ने प्यवश्ये र व्यवश्ये ।

हेशवर्गे निर्देश महिमार्थेन संभित्।

हिंद्र द्वा अर्थ । विद्र देवे प्रति । विद्र देवे प्रति । विद्र विद्या । विद्र । विद्र विद्र

न्देशः इस्रशः यः प्यानः ने । प्रमानः स्वानः स्वानः

निर्म्याश्रम् श्री दिस्या स्वाप्त स्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

गहिश्यः (क्ष्यः चन्त्रः) व्या गहिश्य र्हेन श्रूमः न्मा श्रुवे न्य्येन हिन्द्यः देशा व्या त्या विश्वा न्यः सें (क्ष्यः चन्त्रः) दे।

र्हेन् ग्रेन् श्रेस् निर्माणितः स्थानि । स्थानि

धैःर्रेषः तुरुषः मस्त्रः यार्डे दः या। नेयाः मस्त्रः यादः श्वः देः दे।।

द्यायम् ह्यायदे या बुयाया यहत् वी ।

र्हेन् नेन्णे श्चा ह्र स्था से स्था में स्था मे स्था में स्था मे

देशवान्वत्रशेषाध्यमः मुनाधिम्। सन्दर्भणान्वत्रशेषाधिमः।

देशक् भिरावेश्वर्यं अष्ठ्वर्यायाव्वत् से या क्षेत्र या रा चेत्र व्याप्त विद्या विद्या

तर्विराण्यं विराण्यं विराण्यं

गहेशपा(अवित्वहूर्न्चहूर्याम्बर्ग्न)पाम्बुसा

भ्रायद्द्रायते स्त्रीया भ्रायद्वर् प्रायदे स्त्रीय भ्रायदे स्त्रीय स्त्रीय भ्रायदे स्त्रीय स्

निरावेशन्यते श्रुते निर्मा क्षेत्र निष्म श्रुते निर्मा श्

ने ने अहम् प्रश्न प्रश्न में निया है ने अहम् प्रश्न प्र प्रश्न प

श्रुशः र्देवः कः वे ः वे ः न्दें र ः वे या।

ने या मान्तर से या महिन सम्हा

निर्वेश्वास्त्रेश्वर्षः श्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वरं स्व

क्यायाने प्याप्त क्वा विषया से ना । ने प्रहें न 'के 'क्षूम 'ने व 'यहे व 'ये वा ।

हैंग्।यते ग्राह्म स्थाने नहेंन्।यं र्यं श्री श्री श्री स्थानी में हिंग्।यते ग्राह्म स्थानी महिन्य स्थानी महिन्य स्थानी स

देशक् भिटाम्याया इस्रयाया हे सासु वर्षो ना उत् श्री भिटा वे सामित स्थाया हे सासु वर्षो ना उत् श्री भिटा वे सामित स्थाया हे सासु वर्षो ना उत् श्री स्थाया हे सासु वर्षो ना उत् श्री स्थाया है सासु वर्षो ना उत् श्री स्थाया है सासु वर्षो ना उत् श्री स्थाया है सासु वर्षो ना उत् श्री सामित स्थाया है सासु वर्षो ना उत् श्री सामित स्थाया है सासु वर्षो ना उत् श्री सामित साम

म्बिश्चान्य स्थान्य स

ने निर्देश श्ची निर्माश हिंग श्वास भी श्वी । या विद त्या श्वी हिंग श्वी हैं निर्माश हैं न

भिरावेश्वर्यः श्रुवेर्त्वरंगराधेवरवेश्वर्यः विश्वर्यः श्रियाश्वर्यः श्रुव्यायः श्रियाः प्रवेश्वर्यः श्रुव्याः प्रवेशः श्रुव्याः श्रुव

ने अप्यास्त्राधियाते स्थाप्ति। देन की कायाति है यात्वी। देन की कायाति है यात्वी। ने में की प्रदेश के यात्र की मान के स्थाप के नश्चेत्रपतिः भित्रपतिः श्चित्र। यदे क्षेत्रपतिः भित्रपतिः स्वित्रप्तिः प्राथ्यपत्त्रस्य स्वर्थाः स्वर्थः प्राथ्यस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर

ने भूम अहत भगवत से या होना

ने खूर ने र ले अ प्रदेश अहत प्राणाल्य से या ना है र प्रमा हो र हो। हिंदि से या ना प्राणाल्य से या ना हिंदि से या ना हिंदि से से या ना हिंदि से या ना निकास से या ना से या ना

ने भी मान क्या के प्राप्त के प्र

ग्वित्रःश्रेषःश्चर्दारव्येषःसरःदशुर्वा

निर्वेशं प्रवेश्चायवर्शे व्याप्त स्ट्रें त्रा हें त्र होते प्रवेशः वर्षः वर्ष

गर्अस्य (श्रुमान्वदासेयान्व्र्न्न्त्र्मान्वरे क्रुमान्वर

याववरन् सर्वेद्याः स्रेश्वर्या

ग्वित्रः शेषः श्चान्द्रः व्रोषः वर्गुरः ग्री।

ने ने निर्देश या की सुन में।।

नेतिः नेति नेति नेति स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वया

गशुस्रामः (क्ष्माशुःमः) है।
दे श्री मः मेगाश्रास्य ग्रास्य ग्

रेगश्चराधेत्रप्रत्यास्त्यस्त्रप्रत्यास्त्

न्त्राक्षित्रक्ष्याची क्ष्याच्या क्षेत्रक्ष्याची क्ष्याची क्षयची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्षयची क

মৃষ্ট শ'ম'(ইনাশন্মনানাৰমান্ত্ৰীশন্মানানা)ই।

यावव त्यावह्या सेससा उव मी प्यटा ।

म्बद्ध्वर्ष्वर्ष्वर्थः श्रेष्ट्रेष्यः भ्रेष्ट्रेष्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

याद्यादश्वर्त्ते स्थायविद्या । देशक्षादश्वराश्चे श्वर्त्ते स्थायविद्या । देशक्षादश्वराश्चे श्वर्त्ते स्थायविद्या । दह्यादश्वराश्चे स्थायविद्या ।

भ्री:नर्पत्युर्पति:ध्रीम् ह्वाश्राश्चानात् ध्री:र्स्यान्युर्पत्युर्पतानेशः अर्वेद्गत्यःश्री:वशुर्पत्रःवया वर्द्द्ग्यःथश्वात्यःव्युर्पतानेशः भ्री:नर्पत्युर्पति:ध्रीम् ह्वाश्राशःयुवात्वा ध्री:र्स्यान्युर्पत्युर्पतानेशः

महिरामायदित सुराहिणामाधित मायामिति होता नित्रामाया महिरा कुराम मायामिता मित्रामाया नित्रामाया मित्रामाया मित

म्ब्रम्थायहित्रहें द्राने द्राया स्वर्थाय स्वर्याय स्वर्याय स्वर्थाय स्वर्याय स्वर्

८८.स. (वाश्चवाशायह्म श्चिराश्चेराश्चरायमा)स्

नेशना वस्र शर्द विदेश सूत्र मित्र हिंगा सर विदे दिन

ग्राञ्चारायाञ्चारात्रेयारात्रेयारात्रेयारात्रा

ने क्वें लेश हे हे सूर सर्वें पा

ने पी क्रियम सु हीं मानम पी ।

ने ने में ना सेन के सूर धेना।

या विष्ण स्था ने स्था

स्तर्धित्री नेवेर्त्रव्यास्त्रिम् श्रीत्रित्रित्ते हिन्। स्तर्धित्रा स्तर्धित्रा स्तर्धित्र स्तर्धित्र स्तर्धित् स्तर्धित्र स्तर्धित् स्तर्धित स्तर्य स्तर्धित स्तर्य स्

ने 'हेन' ग्रें अ' श्रें म' प्यें न 'हेन' ग्रें अ' सम्' हेन' ग्रें अ' सम्' हेन' श्रें म' प्यें के 'हेन' ग्रें अ' हेना' हेन' श्रें में 'हेन' यो हेन' हेन' यो हेन' हेन' यो हेन' हेन 'हेन' यो हेन' हेन 'हेन' यो हेन' होने सम्' हेन 'हेन' यो होने सम्' हेन 'हेन' यो होने सम्' होने सम्'

ररःषश्चिशः ग्रुरःगोः नेशःशःगाववः ग्रीशः श्चिरः रें विः वा यत्राः सः याः वे 'त्र सरः याववः ग्रीशः श्चिरः रें विः वा

श्रॅंट्र न सेट्र या दे हे सून्।

र्म् भूषे भूष्ट्र मान्य विष्य भूष्ट्र मान्य विषय भूष्ट्र मान्य भूष्ट्र मान्य विषय भूष्ट्र मान्य भूष्ट्र मान्

र्ट कुट् ग्रे क्षें क्षें ट्राये क्षें प्रत्य क्षें प्राये क्षें क

र्नेत्र-रेग'यन्श्यन्यं न्यो न्यान्तः।।

बयावितःह्रण्याक्षेत्र-र्ये स्थितः स्थेतःहे।।

क्षेत्र-स्थायानः श्चेत्र-रेग्याक्षः स्वाक्षः स्थितः।

सर्व-स्थायानः श्चेत्र-रेग्याक्षः स्थायाः स्थितः स्थायाः स

श्रम्भःश्र्वा । विमानान्त्रः विमानान्त्यः विमानान्त्रः व

तिरःश्चित्राद्वित् श्चान्तरःश्चित्र। अर्देत् शुअन् प्रश्चरः तिरे शुया रहाने श्चान्त्र श्चाने श्वाने श्वान

नेश्वास्त्रम्भार्थेत्। श्रुयावि प्रम्मान्येत्। श्रुयावि स्थान्येत्। स्थान्येत्वेत्। स्थान्येत्। स्थान्येत्। स्थान्येत्। स्थान्येत्। स्थान्येत्। स्

नेश्वान्त्रं सेवायन्श्वायेष्य । श्वान्त्रं व्याप्याने वर्षे स्वान्त्रं स्वान

र्षः र्वेश्वः विश्वः व

र्नेत्रम्थूश्वा र्नेत्रमण्यन्यस्य स्टाकुन्यस्वर्थ्यक्ष्यः श्वीश्वास्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

यायाने ने प्यान्या प्रति र्ह्मिया।

ग्रम्थार्थ्यम्थार्यावेत्रः प्रम्मित्रः व्या

श्रः र्रे 'दे 'दे दे त' से 'दश्र प्रा

हे द्वरावी त्रुवा रायर वी प्याय उत्त वी स्याय विश्वाय पा द्वराय राय है। यह वी प्रायय विश्वाय प्रायय के स्थाय विश्वाय प्रायय के स्थाय के स्था के स्थाय के स्

न्यविष्यम् श्रिष्यः स्वाप्यः स

व्यवः द्यायाः सर्वे ।

प्रस्ति (इक्क्क्क्क्रिक्) है।

है जिस्ति प्रस्ति है जिस्ति है जि

हिन्यम् म्हा स्वाप्त विन्यम् स्वाप्त स्वाप्त

यात्र हे हिंगा से न त्यात्र विवा ग्रामा

माया हे 'द्र प्रदेश हैं मा से दायमाया विमा ग्रांदा खेंदा प्रसाद स्था देश स्दर सक्षत मा सुदा खुषा दु । सुरुष स्था प्रदेश हैं ने स्वी

वस्र १८८ ने १८ वित १८ व

बन्द्र-क्रु-बन्द्र-त्यश्राधीव्या

द्वरः भेशः संदेश्वयः वः व्यस्यः उदः देः विव्यः दः हैं वा सेदः दुः व्याः हैं वा सेदः दुः व्याः विव्यः वः देः द्वरः भेशः या सुरः व्याः व्यसः विव्यः वः व्यसः विव्यः विव्यः व्यसः विव्यः विव्यः व्यसः विव्यः विव्य

गहिरामा (न्यर विश्वन्त हिंगा सम्मन्त न्युव सः) दे।

मुःर्मयार्द्ध्यास्या

नम्'इव्'याययार्श्वेर'न'धेवा।

ने निविव नम् निविश्वास्य मिना

न्र्यान्यान्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

न्नरः नेशः हें नार्यरः शेर् रहें। हें नार्यश्चे रेण शेर् ने हिंदा शेर्य ने हिंदा से हिंदा है हिंदा से हिंदा है हिंदा से हिंदा है हिंदा है हिंदा से हिंदा है हिंदा

नायाने मा बुनायाने निमान्त्र मा

क्रिंशन्यान्यरास्त्रिः ह्रीं न्याया।

व्यादशुराष्ट्रियासे दायाधीवाव।।

यायाने या त्राम्य स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

हगरानिव द्वाराहित वाद्युम्।

याञ्चयात्राक्ष्यात्र विष्याः चार्यात् । स्याच्यात्र स्वायाः विष्याः चार्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्याः चित्रः च्याः च्या

त्र्याकेत्रप्रस्वारात्र्यात्रप्रस्वारात्र्यात्रप्रस्वारात्र्यात्रप्रस्वारप्रस्वार

ने'ने'ने'यनेष'भ्रे'नवे'भ्रेम।

इव्यथ्य द्वर हैं विश्वर नवस्थ भेवा

णुयायायर्दिन्यराष्ट्रीयायायायं अभियायाय्ये अभियायाय्ये वित्राचा के नाम्युया चित्राच्या इन्याने वित्राच्यायये सित्रा अभियायाय्ये प्रमुप्ताय्ये प्रमुप्ताये प्रमुप्ताय

ने त्यश्च म्यावित नि त्यश्च मा

धिव श्री रहेगा हर र र सेव रहें बि वा

वर्त्रा हो राष्ट्र राष

न्नर सेंदे क्लें मान्य धेव वा

न्नर सेंदे हैं न हो न पर है जो हो या ग्रावन धेन में ले न

ने न्यान्त्र मार्ने वासे नायस्या

म्ब्रम्भःवहित्रप्तरः नेशं भ्रीः नंते व्याम्बर्म् म्बर्मः वित्रः वित्रः

नद्र-इत्रहे स्ट्र-नद्द-नन्ग्राम्।

गुनामने ने न र पर्ने र

हिन्यम्यम्म यहम्य विषयः सेन्यम् विषयः

ने न्यान्त्र ना ने निर्मा निर्मा निरम्भ निर्मा

नेश्वान्देश्यानम् इवायादेरेश्याकुरादेवं के खेद्रासेद्रास्य नम् नहन्यश्रास्य स्वाद्रास्य स्वत्य स्वत सदेः धेरा वियासरावया यहः इत्रान्ते साम्या महा वियासरावि । प्यान्ते । प्राप्त । प्राप्

श्ची 'डंबायहें व'राधेव'व'वे।। श्चित्र'यर'याक्षें बासे स्वादें।।

न्यायान्यान्यान्यान्यान्यान्याः । व्यायान्यान्यान्याः व्यायान्याः व्यायाः व्यायः व्या

गहेशःमः(६४० म्य

नहेव'वर्गक्षमा'र्ज्ञ'म्य व्याया'र्या ।

भेग'दर'र्ग् ब्रंगंश'य'र्श्वेगंश'रंदे क्रेंद्र'मेंद्र'न्नेय'य'नहेद'दश' ग्राह्मं व्याधायहेद्द्र'भेग'र्गे ह्वें 'श्रेर'र्ग् द्र्यं हो। दे 'श्रेर'र्गेट'र् पश्चेर'र्न्द्र' धेरा

भूत्रश्रद्धिरःश्रुरःश्रुरःश्रुरःश्रुरःग्रहेगः होः व्याः हुः त्रारः विश्वः हिंगः व्याः हुः श्रुरः विश्वः व्याः हुः विश्वः विश्वः

न्देश्यः स्टानी अळ द्रेन् श्री श्रान्त स्या से त्रिल्यं स्टानी अळ द्रेन् श्री श्री स्या से त्रा स्या से त्रा से त्र से त्रा स

यहिरामासळ्याविष्टास्याहान्ते। न्यरासेष्टास्यासळ्याविष्टास्याहान्ते। सर्वास्यासळ्याविष्टास्यास्याहान्ते। सर्वास्यास्याह्यास्यास्याहान्ते।

५८.स्.(५७८.स्तु.स्तुस.)याम्बुस

द्यरः भेशः श्री । द्वायः श्री । द्वायः श्री स्वायः स्वायः श्री स्वायः स्वायः श्री स्वायः स्वयः स

यायाने सर्देव शुरा भी शान श्री दाया।

वें न

ग्याने न्यं सेति अर्दे अस्य श्री अस्य म्री न्या म्याने से न्या म्याने से स्थाने स्थाने

श्चे निनेश्वे निकासी निहित्।

वीं न्यर होता प्राप्त होता स्थित ।

न्नरःसदिः श्रुन् त्यः ने व्यन्।

न्तर में ते ते श्रामित श्रम्भू न त्या इस ते श्राम् में ने श्रुव से ता स्था ते स्था ते

शुरानराग्चानवराने केंशाधिता।

न्नरः नेश्वालेश्वालेशे स्वरः श्वेत्रः श्वेत्रः स्वरः श्वेतः श्वे

ने भी मान्य में निष्य में

श्चरः ग्रास्टायिव म्यायाधिव हो।

विनासर हो दासे स्टान विन हो।

णुयः विश्वाश्वर्ष्य । श्वर्ष्य । श्वर्ष्य । श्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्ष्य । स्वर्य । स्वर्य । स्वर्य

याल्वरण्यरः इस्र ने शः ज्ञानीः म्ह्रास्त्र स्त्र स्त्र स्त्र व्यान्त स्त्र स्

र्वे व क्षेत्र क्षेत्

सर्ने त्यश्च इसायम् ने शायि कें वाश्वाक्ष विषयाश्च त्रीवाशः या उदा पीदार्वे।

नश्चाश्चान्द्रवाद्याः स्ट्रियाः श्वाप्याः भिवा ।

हे क्षे के त्यान्द्रवाद्यक्षे क्षे व्यवस्थाः भिवा ।

हे के कि व्यवस्थाः विष्ठे व्यवस्थाः ।

विश्वाश्चर्यस्थाः ह्याः तश्चाश्चरः द्वाः त्वाः विश्वाः त्याः विश्वाः विश्वाः

ख्र देश कें नाया श्रे देव मानव द्या के या श्रे मा श्रे प्राथित है।

र्देन'यानन'न्रमंने अर्देन'यने या ध्रिम्।

म्याध्यवाव्यवाराष्ट्री त्युमान। ने प्रवास्यवायायान

ह्यास्रवास्यादेवात्ववाद्याः क्रेवाद्याः क्रेवाद्याः स्वाद्याः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्व

ने निया के।।

नेशमञ्जी यदः क्रुष्यळवः धेव।।

न्तरः लेशः शेः वा बुरः र्देवः शेः हुत्यः श्रवः ने 'न्याः यः नश्यः यः लेशः श्रुशः श्रेवः पतिः श्रुः श्रवः विश्वः श्रुः पतिः श्रुः श्रवः विश्वः श्रवः ने श्रवः श्रुः पतिः श्रुः श्रवः विश्वः श्रवः ने श्रवः श्रुः पतिः श्रुः श्रवः विश्वः पतिः श्रवः विश्वः पतिः श्रवः विश्वः विश्वः

महिकामा (क्षिन निव्यत् निविष्ण महिका मिला निव्यत् निव्

इन्सिं (इह्रम्)वी

हीं म्या हो अळव हे न त्या हे व हो । विश्व हो विश्व हो न स्था स्था कर हो न त्या स्था स्था हो है स्था हो स्था हो स्था हो स्था हो स्था हो स्था हो है स्था हो है स्था हो स्था हो

र्राची सळ्त हेर् ग्री सुवा उत्राया पेत हैं बिया नश्राप्त राष्ट्र स्वाया वे वि

ह्यः श्रवः वाववः न्याः सेनः सम् दि। ।

नेशने माडिया या देश से दा ही मा

श्ची भी श्चित्र प्राया उत् र र र न न न ।

नेश्वान्त्रास्तिः सर्देवास्त्रास्ति स्वान्त्रास्ति स्वान्त्रास्ति स्वान्त्रास्ति स्वान्त्रास्ति स्वान्त्रास्ति स्वान्त्रास्त्

यदेरःश्वें नाद्यं वाध्यान श्वें न्या है न्या

यश्रामार्हेग्रश्चित्रः श्रुदे श्रुदे प्राया उदा दुः श्रूदा या या धिदार्दे विशास विदः

यिष्ठेश्यः (क्ष्यः योष्ठेशः विस्ति विस्ति स्थान्त्र स्थान्त्

५८:म्.(हेलालास्याम्मानवःसूटानमासादेगाना)दे।

यायाने क्षेष्ट्राया क्षेत्राणिता प्रायम् वायाने क्षेष्ट्राया क्षेत्राया वायाने क्षेष्ट्राया क्षेत्राया वायाने क्षेष्ट्राया क्षेत्राया वायाने क्षेष्ट्राया विवास वायाने क्षेष्ट्राया वायाने क्षेष्ट्राया विवास वायाने क्षेष्ट्राया वाया वाय

याया है 'न्ना श्री 'या ज्ञान ज्ञान है वा स्थान है वा स्था है वा स्थान है वा स

हैयाः अँगारुष्य म्यान्य स्थान । हिया अँगारुष्य स्थित । ।

हिलाद्दाद्वीयात्वार्थास्यात्रात्रात्वार्थाः हिलाद्दाद्वीयात्वार्थाः स्थान्याः स्यान्याः स्थान्याः स्थाः स्थाः स्थाः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः

सर्ग्रेम्थःयःयन्तरः वेदः है।

यदे त्यायहें द्वारा सर्शे वाश्वार प्रत्या दे से से वाश्वार प्रत्ये दे से से वाश्वार प्रत्ये से वाश्वार से वाश्वार से वाश्वर से वा

रेश्नर्भ्य सेत्र वित्र से क्ष्य वित्र से क्ष्य वित्र से क्ष्य से से

हित्यात्रस्य स्वापतात्रस्य स्

र्श्वाद्यात्र त्यात्र त्यात्र व्याद्यात्र व्याद्यात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्य त्यात्य त्यात्र त्यात्य त्यात्य

ग्वित ते से संभूत श्रूर प्रस्तुर।

व्यक्षरः र्ह्वाः देन्त्रां त्याः प्रायाः विवाः देवाः वेदः विवाः विवाः विवाः विवाः विवाः विवाः विवाः विवाः विवा वाववः देवाः श्ववः दुः श्वदः वदः विवाः द्वाः विवाः विवाः

ने भ्रीत मुन यही न माया।

देशक् भेशक्षात्र विदेशक्ष विद्यात्र विदेशक्ष विदेशक्ष विद्यात्र विद्यात्र विदेशक्ष विद्यात्र विद्यात्र विदेशक्ष विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्

मुं अयो नाम्य अया नाम्य ।

नु'सदर'हे'सूर'सूर'नर'दशुरा

गया हे अर्कें गरा हे या हे गाना

यायाके। या देवा श्रुम्मे के वा राष्ट्रीय वा प्रत्या क्ष्या क्ष्य

ने नमा के भायने में सकर के।।

में भाषा वर्षा वर

र्निन्द्र्य । वित्र व्यापाय वित्र व

५८: १. (१४ में ११ क्रि. में ११ में

श्वास्त्र वित्र मान्य मा

ह्वाश्वादित्रस्वाश्वाश्वाद्वाश्वाद्वाश्वाद्वाश्वाद्वाश्वाद्वाश्वाद्वात्वाद्वाद्वात्वा

त्या.योश्वा.वर्षाः इष्ट्रां व्यात्यात्रात्राच्याः स्थाः विष्ट्रां विष्ट्रा

त्रयः वे दा

ने स्वराधित से निश्च से निश्च

द्ये देव शे श्राह्म के कि के स्वाप्त के स्व

र्श्वे अया शास्य स्था सम्मान्त्री ।

श्रुमान्यः र्भेग्यायात्रायात्रायाः सर्वेत्या।

ने भूर सुंद की सुंद प्रस्केत प्रस्केत प्रस्केत प्रस्केत के स्था के स्था से स्था के स्था से स्था के स्था से स्था के स्

गवानेने ने वायान स्वायान स्वाया

दनदःविगाने सूर्यस्टित्वा।

यायाने। श्रूश्राचि सेंग्याश्री श्रूश्री विश्वास्त्री ने त्याप्यत्या विश्वास्त्री व

वायाने श्रू श्रिवायाश्वरयायाधी ।

> त्रान्द्रान्द्रविष्णुः क्रमायावे।। सक्ष्राम्याः क्रियायायाः व्याध्यावे। स्रमायाः क्रियायायाः व्याध्याये।। याध्याये। देशाय्येव। देशायेव। देशायेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव। विषयेव।

र्त्तुं स्वार्वित्वानां निवालकान्तर्वे कार्यते वित्तं वित्तं वित्तं स्वार्धिः ने स्वार्धिः नि स्वर्धिः नि स्वार्धिः नि स्वार्धिः नि स्वार्धिः नि स्वार्धिः नि स्वर्धः नि स्वार्धिः नि स्वार्धिः नि स्वार्धिः नि स्वर्धः नि स्वर्धः नि स्वर्ये स्वर्धः नि स्वर्धः नि स्वर्यः नि स्वर्धः नि स्वर्धः

ちて、ぞ、(動か、おま、ちゅう、む、) 子 [

र्त्त्रम्यम् श्रुः र्वेष्ण्याम् र्त्ते विश्वेष्ठ्या

गाय हे हे कु सेव ले वा

याया हे 'क्लें सायहिता युक्त क्लें यो सार्थी देश यो सार्थी क्लें से स्था सार्थी के स्था सार्थी क्लें से स्था सार्थी के सार्थी क

बन्द्रान्यवयायदी याद्रायी शायस्याया

हुर्। स्थान्नर्, प्रापिष्ण प्राप्ति स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

रे से से मार्थ हैं सुर हैं मार्थ से दा

रे से से ना का से सं स्वाया ने त्या प्रवे ते से ना विषय है। से स्वाया स्वया स

ग्राञ्चनार्यासेन् सेन्युन् स्वर्षेन्यस्य सेन्।।

हुयः सर्प्यते खेत्र पर्देत् गावतं र्त्ते स्वावायां नायः श्रें से र स्वावायः श्रुः र्क्षे गायः शुः श्रूटः नः सेत्र परः श्रया ने प्यः गात्वा वायः ग्रीः पेत् पत्र देतः गावतः से दः प्रते से स्

श्रुः र्क्षेत्राश्रास्त्र क्षेत्र प्राणीत्र त्र ने श्रू त्र त्यु त्र प्या प्रता प्रता क्ष्र क्षेत्र क

हे नर नह्या अया नहेत पदर सेता । दे रे से सूर्वे या अप सेता है र से सूर्वे या अप सेता है र से प

दे 'क्षेर'वर 'वर्ष' वि के 'वर 'वर वि वर्ष 'वर के '

या गुनाय विश्व स्तान विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्

रेयानविवर्रं वे न बुर्नाया।

श्रुःर्क्षेयायार्ज्ञुःधियायश्रेयाधिवात्री।

श्रुः कें नार्या दे प्रचा प्रचा प्रचा के स्था के स्था प्रचा के स्था क

गठिगागीरानु सासी पहीं वा श्रीमा

दे प्यट प्यंत्र से से से प्रत्येष के प्रत्ये के प्रत्य

गहिरामा (द्वानश्रूमाव्याद्वार क्षेत्राह्में वास्त्रेन पुनाया)दे।

ने भ्रीत्र या हे या दिंत दुः सं उत्।

> याराधेरार्देवाचियाः हेवायावदरा। याववादयाः अर्थेरायादेवाः हेवायाः वदरा। हिंवायाः अर्थेरायाद्यावायाः अविवा।

वित्रहें क्र न्वरं भेशायर हैं वारा से न्यरं सुवारा धिक्र है। वारं वी से क्षेत्र क्ष वित्र क्ष क्षेत्र क्ष

गशुस्य (सर्वे न्वे न्या मुक्य प्रम्य प्रम्य

म्द्राचन्त्र भूतः भूतः भ्रेतः भ्रेतः

「大いだい(ヤスマーマロない)のではないます、マロマンロないます、マロマンロックでは、 できた、マス・カー マス・カー アン・カー マス・カー アン・カー マス・カー アン・カー ア

५८:सॅ (क्रूप)दे।

र्देव वी र्देव श्वः कें ग्राया वेत्र पाठिया यी रमा मित्र विवाद स्था प्रमान प्रमान वियान। र्थे सेरान्गरान्सराञ्चाळेषासाञ्चरानियान्तिः र्केसाउन्। गडिगानी रूर नविवर्र से तबर पर बया अर्कें ग्रास् सूर राजि से विविद्यान्य स्वाप्त्र स्वा

वर्रे या है देय देव विश्व त्रूर्य संदे द्वर र् हु या द्वर हैं या विष्यानितः ह्राने हिन् ही देया ही देवा विषा निमा श्रार्के वा या निमान बूट नर से प्रबद्ध प्रशाहनायाया नुवारी प्रवर्धेना वया परे नयाया

ब्रे:र्रेयाग्रे:र्रेदावयायात्वरयायदे:र्वरार्, ग्रुयाद्या र्वराक्ष्याग्रे: इसरे हेर र्श्वे से र र गर र सर से गया है। इस सु सूर र साहित सास युनःसदेः व्यवः दे सः वयाः वदे नशः सरः दशुरः र्रे।

निहेशमाय्यदायानहेश

ब्रे-र्रयाची-र्रेन्।प्रशासन्तर्भारावे ख्राम्थायानहेन्न्य स्थायन नार्यः मन्द्रा देवावसाञ्चरसामित्र प्रदान्त्र व्याप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य

यर्रेर्न्यक्ष्राया कुर्यायरावन्द्राया हेर्न्याश्चरावर्षे । ५८:सी (सर्रेर न सूत्राया) वि

धे दें य दें व की क्षारा के या ठवा किंदा सूरा वा सूरा दु व दे वा पर से दा दे। हिंद्रभूट्या सूर्यंत्र मदेव मदेया हेया हु प्याया मदेव मदेव स्वरं प्राय यद्याम्वानायदे भ्रेत्र देवे ह्वाराष्ट्र यात्र सुनाया से । भ्रेत्य देव भी स्था सःश्वरः नःश्वरः श्वीः नित्ते वार्षः वार्षः वार्षः स्वाः स्वरः स्व

दे सुन्दे सुन्दे व नग्य नगा।

द्दे श्वर्षः द्वे स्ट्रें स्ट

यानित्रम्थान्द्रम्यान्यान्द्रम्यान्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रम्यान

दे 'वद्वे 'व्या हे वा'द्द 'द्र्य 'श्री 'व्या है 'व्या है

र्टाख्याश्राचा न्वहार्यदेशस्त्राह्मात

বার্ট্র শেমে (ক্রুশ্নম্বন্দ্র্ন্ন) প্রবার্ট্র শা

धुःर्रेयःर्देवःनग्राग्ययेःन्नरःतुः ग्रुश्यःवश्यः क्रिंश्वश्यश्यः उत्ररः निवतः स्रेत्रः प्रदेश्वः प्रदेशः स्वतः प्रदेशः निवतः स्वतः प्रदेशः न्नरःतुः ग्रुश्यः वशः नेविः र्देवः प्रवतः प्रदेशः। ५८६ (क्षे. १४ व. १५ व. १६ व. १

५८:द्री (अूट न सूर ५ न ने व व द न न न न से व व र न

गठिगायाश्चरळेंग्राराने हेरावशुरा।

निश्चानित्राचित्राचार्त्वे स्वान्यास्य स्वान्त्रास्य स्वान्त्र स्वान्

र्त्ते ने त्याधर से त्यूर में।

र्त्तुं माठेगासु ने त्यायदा ही से या देव ही हम या स्था है त्या हो से या ही से या हो से या ही से या हो से या ही से या हो से या है से या हो से या है से या हो से या है से या है

वायाने नेंद्राहरू अध्यापनियाने नियाने

वर्देन्द्रन्द्राचार्याक्षः

वायाहे ही देयादेव हो इसामा इससा सूरा ना सुरा हो प्राप्त निया में हे प्राप्त निया है प्राप्त निया है प्राप्त निया है प्राप्त निया है स्वाप्त है

वदः ने अः यः यः नर्हे अः यदिः ना बुदः प्रदेशः ह् अः ना व्यवदः द्वानाः यदि ।

दः से रें (क्षेत्रः व्यवहं अः यदि ना बुदः प्रदेशः ह अः ना व्यवदः द्वानाः यदि ।

दे श्री सः देव र्या प्रवृत्ते अः यः प्या ।

स्वा अः श्रूष्टः प्रवृत्तः श्री वः त्वे द्वानाः के द्वा ।

या वे ना त्यः य ना ना त्यः के दः श्री सः दृदः । ।

या वे ना त्यः य ना ना त्यः के दः श्री सः दृदः । ।

यहः से त्यः प्या प्या प्रदेशः प्रो वा ।

म्बर्धः स्थान्त्रे स्थान्य स्थान्त्रे स्थान्त्य स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्यान्त्रे स्थान्त्रे स्थान्त्रे

धुःर्रवाशुःर्वेदासेद्गण्याद्गात्त्र्या बुदःविद्वेद्वः विवाववासः विवासः व्याः क्रिंसेर्यास्य विवासः विवासः विवासः विवासः विवादः विवादः

यावरायार्डेन्वन्धित् श्रीः र्रेयाक्ष्म।

ब्रानिश्चात्त्राच्छेश्चात्राच्छेश्चात्राच्छेश्चात्राच्छेश्चात्र्यः विद्वात्त्राच्छेश्चात्र्यः विद्वात्त्राच्छेश्चात्र्यः विद्वात्त्राच्छेश्चात्राच्यात्राच्यात्राच्छेश्चात्राच्या

शन्त्रभेत्रच्यत्वेत्रभ्यः संभित्। शन्त्रभूतः त्रम्यस्त्रभ्यः संभित्। तेरस्य विकाले स्थेत्रस्य स्थानः।

गृहेशगायदाहमाराम्य वर्ष्या ।

নাপ্তমান (ব্ৰান্ত্ৰন্ত্ৰ ক্ৰান্ত্ৰ স্থান্ত্ৰ স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থান স্থান স্থান স্থান স্থান্ত স্থান স্থান স্থান্ত স্থা

यश्चित्रास्य स्वात्रास्य विष्ठा स्वात्रास्य स्वात्रा स्वात्र स्वात्र

८८म् (यहेशक्ट्रिक्यम् विकास्तियात्र मात्र मात्र

कैंग'र्नेद'न्द'। अवयःन्ध्रन्'सर्वे। न्दःसें (क्ष्यान्वः)दे।

ने से ने प्येतर ने के न प्येता ।

ग्राह्मराहें वे ह्या प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र

त्रुवःसॅरःसधिवःमदेःचनेवःमःगिरुसःर्स्याग्रुदःचःन्रः। र्नेवःन्सः मदेःचनेवःमःहःकृरःष्ठस्राःसुः त्रुदःमदेःस्वः व्यःवे।।

८८१ (शुक् ऑस् अप्योद प्राये प्राये प्रायि अपने का प्राया है अपने का प्राय है अपने का प्राया है अपने क

सळ्त्र हेन्द्र सळ्त्र हिन्द्र सळ्ते । व्याप्त सळ्त्र हिन्द्र सळ्त्र हिन्द्र सळ्त्र हिन्द्र सळ्त्र हिन्द्र स्थाप

र्मेत्र'न्य'ननेत्र'यदे' सक्त हिन्। सन्तर नुग'न्धेन्'यदे रेग्य'नेया अक्त हिन्। सन्तर नुग'न्धेन्'यदे रेग्य'नेया

স্ট্রসামা (सर्क्षेत्र व्यवे प्रवे प

यसवाश्वास्त्रेयाश्वर्याविवार्त्त्वात्त्रास्त्रेयात्रेयायात्त्रे विष्ठा स्वाध्यात्रे स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्यात्य स्वाध्

रेषाश्रायाने हिन्द्रेष्ट्रेश्वर्ष्या विश्वराया विश्वराय विश्वराया विश्वराय विश्वरय विश्वराय विश्वय विश्वराय विश्वराय विश्वराय विश्वराय वि

हुँ न्यान् श्री द्वा श्री त्वा श्री

ने भ्रात्र त्रुप्त त्रुप्त त्रुप्त भ्रम्म विष्ठ प्रम्म स्वाद्य स्वाद्

द्रव्यक्षः न्याद्वेश्वर्ष्यः स्ट्रिन् वित्राचित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् वित्रः स्ट्रिन् स्ट्रिन्

ग्रद्धाः चल्पदःद्वी।

याववरण्यरः द्वरः संदेशस्त्र स्वार्थः श्रुवः श्रेषाः प्रश्निः स्वार्थः श्रेषः स्वार्थः श्रेषः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

णयाने मा बुदायहें मह सामा प्राप्त में देश से सामा प्राप्त में में स्वाप्त में

ने ख्रून खे ने या की ने वा त्यों वा या वे से वा का साहे ख्रून त्य का साने निर्म्य के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्व

गहिरामः(महिरासूनःविद्यानमःमुनःवः)दे।

न्देशः इस्रशः वित्रा । ने वित्रः वित्रः वित्रा ।

ने'ने'नश्चन्यः केन'येन'न। ने'न्या'न'न्यः प्रम्या

म्बन्धाः स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वधाः स्वाधाः स्वधाः स्वधाः स्वधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वाधाः स्वधाः स्व

ग्वन्द्रन्ताःग्विन्द्रन्दे हो देवः हेन्द्रम्याः विद्वा हिन्द्रम्यः विद्वा हिन्द्वा हिन्द्रम्यः विद्वा हिन्द्वा ह

श्रुवित्र स्त्री श्रुवित्र स्त्र स्त्री स्त्र स

माज्ञ निर्मालक के निर्मालक के

म्बुद्दान्द्रित्द्रित्द्रित्द्रित्द्रित्द्रित्द्रित्द्रित्द्र्यः म्बुद्दान्द्रित्द्र्यः म्बुद्दान्द्र्यः म्बुद्दान्यः म्बुद्दान्द्र्यः म्बुद्दान्द्र्यः म्बुद्दान्द्र्यः म्बुद्दान्द्वान्द्र्यः म्बुद्दान्द्र्यः म्बुद्दान्द्द्वान्द्र्यः म्बुद्दान्द्द्वान्द्र्यः म्बुद्द्वान्द्र्यः म्बुद्द्वान्द्द्द्वान्द्र्यः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वान्द्वः म्बुद्द्वा

नेश्वान्यस्त्रं क्षेत्र सर्वे क्षेत्र सर्वे

श्री श्राहें ते स्याया सर्वे ते ते त्या स्थाया त्या स्थाया स्याया स्थाया स्थाय

श्चित्रः द्वित् क्वतः स्वाप्तः स्वापतः स्वापत

यहिरामः (ब्रिन्द्रमानशःब्रुद्रशःनवे द्रनदः तुः ब्रुशःव्यादेवे द्वेन्यलदः यः)दी

यदेरान् ने ने देवा स्थान स्था

বার্মেম'(ईन्ध्र-)প্রবার্ম

५८.स्. (वश्वतःश्वरःश्चे.यःश्चःश्चरःयः)द्री

स्राचीयान्त्रम्याक्षेत्रम्या

म्यारेगारे निव्यक्त सेवास्य मा

बेनवनेवे बेन धेन धेन र्

यःरेवारेवान्याननेवायास्वासुसान्।सर्वेदानासेवायवेःसारीस् र्ने न अवारा के अरुद्या वा तुर वहें दाह अन न प्रति में प्रति वी प्राक्ष्म से प्रति हिन् वस्र राज्य श्री राज्य पात्र विश्व रिन् विष्ठ रिन् वे सिन् शुयान् देया यायाधीन है। या बुदायहीन ह्या शन्न न् तुनेन याया कुन यक्षन वहें वर्षा ह्या शन्त्र त्रं वेव प्रवे नक्ष्र प्राप्त वा से दाव है या प्रवित् नर वर्षिर्यान्ते के से दाये हिंदा हिंदा हिंदा के से दाये क नदेः भूनरा ग्री मार्डे में मार्डमा तृ सूर हैं।।

মা প্রামানা (মূনানমান্ত্রী ইনান্ধাননমান্ত্রী ইনাধ্যমেনমান্ত্রী বিশ্বমান্ত্রী ইনাধ্যমেনমান্ত্রী

ब्रुवःसश्यावगवाद्यद्रःस्ट्रिःस्थःस्वाच्चेः इस्याववग्यासुद्रश्यःसःसेः रैग्रथं सर त्यूराने। धे रें या ग्री रें व दुर बर ग्राराया वी ग्रथं पर धेरा ह्याया से दात्रा से त्र के र्ये वा वा सुदान के दात्र प्रयान स्वा स्टेरिन वा

> ने भाने 'हे न 'ने वा नित्र में सुरा अवा। मूरळेव'ग्राचेग्राश्रूर्र्राहेर्'सहर्व्या वहेगा हेत श्रुगरा ते वनव विगामी या। धे देवान्धेन वा वह्या यर सहि।।

वहिषा हेव देव दु अदेव पर वेव पर देश व षिष्ठ शासे द अदेव शुरा

त्रविवाश्वास्य व्यव्यविवाश्वास्य विवाश्वास्य विवाश्वस्य विवाशस्य विवाशस्य

नेश्वात् नश्रुव नर्धेशायने माधी में या में वा छी । व्याप्त वा साम प्राप्त निर्माण के स्वाप्त विष्ठ । विष्ठ विषठ विष्ठ व

र्वे त्र स्ट ख्रिया श्राम्य क्ष्य क

ब्रेन्स्य स्थान्त्र क्ष्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स

महिरामः (वे स्वाक्ते र्व प्रथा विस्वान विस्वान

न्देशन्दा ५:उदःबयःवःश्वरःवर्वे । न्दःसः(_{न्देशः})दे।

नेश्रासंदेश्वित्यस्यान्त्रःक्षेत्राश्रास्।

सर्वेट वुरास धीव ।।।।

विश्वास्त्र विश्व

या ने क्ष्म अर्चन क्षम अर्थे क्षम अर्थे क्षम अर्थे स्थान क्ष्म स्थान स्थान क्ष्म स्थान स्थान क्ष्म स्थान स्थान क्ष्म स्थान क्ष्म स्थान क्ष्म स्थान क्ष्म स्थान क्ष्म स्थान क्ष्म स्थान क्

द्रेंत्र विश्वेर्य कार्यने श्र्वेत्र सिद्या कार्यावत से मार्य दे विश्वास्थ्य विश्वास्थय विश्वास्थय विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्थय विश्वास्य विश्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश

इस्रान्ते देवायायह्यायस्यम्।

नेशमारहिःस्रमःस्रम्याने॥

न्नरः ने शंनारः यः हैं क्ष्र्यः द्वीः रें या श्रुं कें ना श्रुं श्रूटः नः ने कें शरु वा

शुअःश्रीअःन्देशःशुःश्रेनःतःधेतःयदेःश्रेनः। शुअःश्रीअःन्देशःशुःश्रेनःतःधेतःयदेःश्रेनः।

ने सूर से सरा ग्री क्या पानि ।

श्रुःर्क्षेत्राश्चाडियाः वीःर्देः वेद्युरा

रशःश्रेमशःमञ्जासन्ते माठेमाधितः व।।

ने निवन इसान् हो से न सम्बद्धमा

वर्त्र उत्रे क्यान्ययान्।।

यन्त्रः सेन् मान्त्रः सर्वेतः सेन्।

बर्द्राचार्यक्षे व्यवस्थान्य विष्ट्राच्या विष्या विष्ट्राच्या विष्ट्य

यम्यमा उत्र में त्राव्य से म्यान्य म्यान्य स्थान्य स्

ह्मन्य स्वत्त्र स्वत् स्वत्त्र स्वत्त्

धिरः खर्या थयः विश्वास्त विश्वास विश्

महिरापा (धवायमा उदार्देवामानवा से दावा उदारे वा उदार देवा उदार वा महिदाया मार्वेदाया मानवा मह्नवाया) या शुरा

५८:द्री. (य.जर.दे.लब.जवा.रे.ज.रेर.केंच.तर्म्यायः)द्री

हे सूर रूर वी प्यव या नड्या

डेगारुम् प्यवायारुव म बुम् प्येवा।

भूगाः नियाः श्री । या स्त्री ।

वर्देन्से नेयायायम् प्रया क्रिया नियायार्थे वार्याये देत् न्यायार्थे न्याया क्रिया नियायार्थे वार्याया क्रियायार्थे नियायार्थे नियायाय्ये नियायाय्ये नियाय्ये नियाये नियाय्ये नियाये नियाय्ये नियाय

यायाने व्यव न्त्र या हैं में न्या

डेगारुम्हेंग्रायम्यम्यम् ।

याया हे। हिन्या विष्ठ के श्रास्त्र स्वीत्र स्वीत् स्वीत्

डेगाउर प्यता स्वारा स्वारा स्वारा हिन सेवा।

र्षेत्र न्त्र त्यः श्रें ग्राय्य स्वर सवद सेत्।

यः मूर्रे छेषा उर प्यव श्वा हैं प्रश्न श्वा हिर् प्ररु हु अ द अ वह व स्र प्रते । हिर् प्ररु हु या व स्र हिर् प्रयु हु या व स्र हिर् प्रयु हु या व स्र हु या व स्

नः नार्थि त्यायाया अँगायायाये प्येत् प्यत् न्त्र न्त्र न्त्र स्वर्धित स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्येष्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

छन्'यर'न्द्र'वे'छन्'यर'ख्वा।

नर्हेन्'सर'वर्नेन्'सवे'म्बन्नन्धेर्।

ह्मन्यां हिन्द्राह्म । हिन्द्र स्थाः श्री श्री स्थाः स्थाः

प्यवायाक्षेत्रः तुः विद्यान्।।

ष्ट्या क्षेत्र क्षेत्

गहिरापा (न्र्रिंश में क्रिंग न्वित्सर्वे प्यापा विवास विवास

रटामी दिर्देश से जावन द्या यथा।

मान्द्रायान्द्रायां स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य

तुस्रश्वस्य स्वित्र स

वश्यामा विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्

देशःश्रीशः तुःशः हैं ग्राशः प्रमः त्युमः श्रेष्ट्रः श्रेष्ट्रः श्रेष्ट्रः या वि । श्रुपः वि । श्रेष्ट्रः वि । श्रेष्ट्रेष्ट्रः वि । श्रेष्ट्रः वि

म्रुअ:मः(हेनाः उरः पुःसः वहें वः यः महस्यः उवः म्रीः ख्वायायः व्यायायः प्रेते।

क्षाश्चार्यात्र व्याप्त व्याप्त वित्र वित्र व्याप्त वित्र वित्र व्याप्त वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि

नर्गे द'रायहें क'रासे सुद'रहे या। नर्गे द'रायहें क'रासे सुद'रहे या।

देशे-द्वर्गन्य देश्याकृष्णित्र हत्याश्या क्षेत्र ह्या हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस

द्रास्तिः के भारत्या ने भारत्या ने भारत्या के भारत्या

कें अ'उद' श्रम्भ अ'उद' यम 'हें ना' मा । नार 'दर' नार 'यम 'वें ना' दे 'यम । श'दर' नहनाम 'यदे 'श'दर' उदा। दे 'दे 'द' स्वें 'दे 'तें 'हे दा।

> महमार्था भरि स्टामित्र वित्र व्याप्त । श्रु: क्रिमित्र श्रुट माने प्तमाने ।

हेनामसेन्सेम्सेस्स द्वार्यस्य हिन्यस्य सेन्।

हैंग'यश्र'नहग्रश्यदे'र्र्रान्वेव'श्र'र्याश्च र्र्वेव'श्चर्यात श्चर्यं न्यार स्थित स्थार स्था स्थार स्था स्थार स्थ

महिश्रासा (श्वे द्वामाववा सद्वा श्वरा श्वी महा द्वामा साम द्वा महिश्रा प्राची महा स्वामा स्व

वाया हे 'न्यामार्से 'हेन' त्या श्रें वाशा मित्र 'श्रें 'नें नें वाब्र 'र्सेन' स्था यह 'र्सेन 'र्सेन' स्था यह 'र्सेन 'र्स

र्त्ते स्थर्भः देवः या छेयाः छेटः प्येवः पटः । । हेवः श्वः र्व्हे या रूपः स्थाने सः दशुसः व। ।

न्दे स्यायार्थे वायाय्ये यायाय्ये ।

न्द्री म्या व्या के व्या विश्व क्षेत्र क्षेत्

श्रेश्वर्गः क्षेत्राः यात्वतः द्वरः यात्वतः । श्रेश्वर्गः क्ष्याः क्ष्याः याद्वतः श्रेष्ठं यात्रः श्राः । द्वर्द्वरादे दे त्यादः याद्वतः श्रेष्ठं यात्रः श्राः । श्रुटः तः दे दे त्यादः यात्वतः श्रेष्ठं यात्रः श्राः ।

 वे कु मार यश ग्रार धिव पा शे पव पा शे पा

सर्वेद्गान्न स्वास्त्र स्

सर्दि शुस्रा श्री साम स्ट्रिया विद्या मेन्य स्ट्रिया स्ट

न्यात्रः श्री न्या स्था न्या श्री न्या स्थी स

त्रायाः श्रेष्यां श्रायाः स्वार्त्त श्रु श्रायाः स्वार्त्त स्वर्त्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त

सर्वर्ग्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

सर्देव सुमां श्री भाग में दि निया प्राप्त निया प्राप्त निया में स्वाप्त में स

गिर्हेश्याधित् श्चीः स्ट्रिंस् शुरुष्य पात्रुस् र्हेत्याद्या यदाद्या देखा र्हेत्या र्ह्या वर्षि । द्यार्थे (क्ष्या क्ष्या वर्षे ।

र्श्वेन'न्येव'र्स्चेन्र्यार्थ्यात्रात्र्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्वर्यात्र्य

श्रूम् श्रुम् निष्ठा न

महिश्यः (यहः)यः महिश्य श्चेतिः देवः द्वः क्षेत्रः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । द्वः द्वः (श्चेतः द्वः)दी

पि.श्रम् सार्द्धन् त्या विश्वासी विष्या स्त्र स

स्वास्थान्य स्वास

याल्वरण्यरणेर्ग्रेश्वर्रव्या अत्रिंत्र श्रुं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्रूं श्

 तुः तर्देन् सं ध्याः अक्ति। अक्ति । अ

५८:स्.(कुंब्यशिक्षह्र्याविट्यः)ध्री

স্ট্রিশ্বার্ (ইশারিদ্রার্রিক্র্রামা)বী

र्श्विन द्वित्र क्रिंग सक्षेत्र मित्र पाव्य प्राप्त क्षेत्र स्वित्र स

गशुस्रामः(देग्यः ईद्रामःश्रूदःमः)दे।

द्रंत्रःश्रंश्वं भ्रें वित्तं क्षूत्रः वित्तं वित्

नेश्वास्त्रिम् वर्ष्ट्रम् वर्ष्ट्रम्

ग्वितः प्यतः वितः स्टानी क्रुतः श्रीः विश्वाः प्यतः प्यतः यातः व्याः गीः वित्राः स्टान्याः स्टान्याः स्टान्याः व्याः प्रवेशः प्रवेशः स्टान्याः स्टान्यः स्ट

ने ने भे भे ने स्वर्थन स्वर्य स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्य स्वर्थन स्वर्थन स्वर्य स्वर्य स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्थन स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

नेश्वान्त्रम् कुन्याथेन् श्री अर्देव् श्रुश्राश्चित्र विश्वान्य प्रमाने विश्वान्य विष

ररः कुर् त्याद्वरः अर्देवः श्चे वरः द्रेरे या श्वे वया ग्री कर् या या वावायः

व नियम् अर्दे । विष्य अर्थे प्रियम् अर्थे नियम् अर्थे नियम् अर्थे । विषयः विष

श्चित्राचार्यात्र्वार्यात्र्वार्याः श्चित्राच्याः स्वार्यात्र्याः स्वार्यात्र्यात्र्याः स्वार्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्य

वशुरःर्रे।

गहिरामः (क्ष्मिन्द्रः र्श्वस्त्रम्)यः गहिरा बयः नः नः नः स्तिः यतः नः । गहिरामितः यतः स्ति । नः सिं (बयः नः नः स्तिः यतः)दी

> अन् छेमाछेन छे र त्यन्य या थी। । र्नेन सर्वेन थेन स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

या नुवाश प्रदेश क्षेत्र श्री अर्दे हुं श्री अर्थे अर्

श्चन्य स्थान स्था

ठु:न:नश्चनशःठदःयशःयःदे।।

श्चन्यमः श्चन्य । । न्यन्य स्वयं व्यव्यान्य । । श्वन्यमः श्चन्यमः श्चन्य । । श्वन्यमः श्चन्यमः श्चन्यमः । ।

प्यतः सं विश्वास्त्र स्वास्त्र स्वस

नगर में 'ठव्'व्या' वेश' प्राची नगर में दे' स्रोचे 'श्रुस' स्नून 'डेगा' गाहेश' म' द्वेव 'कन् 'ग्रुन' केश' धेव 'ग्री' क्षंन 'स' स' धेव 'स' ग्रिव है। धेन 'ग्री' समें व सुस' प्यतः ने 'द्व' ग्रुम' वेश' पर्वे ।

यदीः द्यांदी श्रिंगश्रः श्रः श्रः श्रः यश्रः यश्रः यहं वा श्रेशः यहं याः यहं द्रः याः यहं वा श्रेशः यहं वा श्रेशः

र्भः क्षेत्रः स्वरः त्रव्याः प्रः त्रः स्वरः त्रः स्वरः स्व

न्ह्र्यास्त्रीन्त्राक्ष्याक्षेत्राच्या

ষ্ম্পাত্ত বিশাত সাম গুলু সাম বিশ্ব সাম

ग्राह्म । ज्ञान्त्र विष्ट्र व

गल्व ग्री शाह्य भर ग्रा शेव वा

ने त्यार्थे शासाययाया श्री मार्से ।

न्तर्थित्वी म्वर्द्व के मान्य के न्यर्थ के न्य्यू के न्यर्थ के न्य्यू के न्यर्थ के न्यर्थ के न्यर्थ के न्य्यू के न्यू के न्य्यू के न्य्

স্ট্রিম'শ'(য়য়য়য়ঢ়ৢয়য়য়য়য়য়)द्री

ने भिराद्यर सेंदि इसायर के या।

ने'सम्मित्यसम्बद्धाः

धीन्दी खुवामान्व किन्य होना।

ग्राच्यारायहेव भेर ग्री सर्देव सुरादे के राउदा ग्राच्यारायहेव

न्नरार्धेवे इसामराने यासायया ना ब्राह्म ना विदासे ना विदासे ना विदासे ना विदास विदास के ना दे। देवे दे अवग्रमुं दायश हुर न उद्यो देंद देवा अवहुय न धेद संदे धेरा हिन:यर:वया दे:य:वनाः क्रेवः दी:ना बुदः देवःयहेवःयः यः हेयःयः नर्हेन् वेदायाने वे श्रीमा

ने भिरावेदानमा अर्थेदाना भेता ।

हिन्गी अन्तर्भित्र ही अया अर्वेद निवेदित पर्दे व प्रश् र्सेट. नश्या बुवाश्य अर्वेद : नर : वयः नः अः धेद : पर : वयः व व व द : देव । य यसुंदर्भायदे द्वर्यस्व देवे दे या वया क्रेव त्यरा हिंद् क्रे वा देवे हि स

यश्रिम्पः (देःवः क्रूदःवः)व्यः यश्रिमा

ध्ययादेशासेन्यहेन्यमात्रयाना स्ट्रिया स अर्देव-८८-१ व्याः विषया विषया के विषया वन्नन्त्रम् बुद्दार्वेष्ठ्रस्थः वन्नन्त्रम् ।

५८:सी (धुलादेशसे ५ वहें दारा मला ना सुदाना) दें।

रटार्नेवाहेशायर्गियार्नेवाहेशाउव।। नगरःभ्रेशःर्वेतिः कुःधेवःर्वे।। ने श्रेमप्रने पावव प्रमेव व प्रमा। देशमायहैवम्यराय्देनमाधेव।। या बुर्गारा प्रहें व 'पीट्' ग्री' अर्देव 'सुर्या केंस 'उवा या बुर्गारा प्रहें व '

निहेशासा (देवे ना बुर धुल द्वर सर्व द्वर देव के ना के ना स्वाप के ना के ना से प्राप्त के प्राप्त के

हे स्वराधीन सर्वेत श्री मा बुदा दें ते प्रेप प्रेप स्वराधी स्

धेराग्रहातुषायेत् धेरात्ता। धेषाग्रहाते प्रस्था श्रीता धेरा कुते स्र रहें भाउत्। कुते तु भाषा से प्राप्त प्राप्त कि से प्राप्त कि स

कु क्यमायसमाउन स्मार्थिन थिता।

स्राणित्र स्रोत्र श्रुमा हिना सम्प्रमा क्रिक्स सम्प्रमा स्राणित सम्प्रमा क्रिक्स स्राणित सम्प्रमा स्राणित सम्प्रमा स्राणित सम्प्रमा सम्प्

रुषान्द्राप्याद्देश्वराद्देव।।

विव । । ।

म्यान्त्र क्षेत्र क्ष

कुंदेन्यदेग्व व्यास्त्रेश । भेश्रासदेन्द्रस्य स्ट्रिया वुश्रासदे। । कुंदेन्य देग्व वुरानस्थेश । धेन्। धेन्यं अर्देव् श्रुयः श्रूयः श्रुयः श

कु:५:अ:हे५:थॅ५:व:थ८।। दश्यान् हें या हो ५:हो:न या ८।। देवे:दे:थे:दें:वें:दे।।

नवगान्दाग्रहावेशानहें दाराधिवा।

या बुवा श्रायद्देव 'थि द ग्री 'श्री श्री श्री प्रायति 'श्री 'श्री प्रायति 'श्री 'श्

गशुस्रायास्त्रीयास्त्रिस्यायात्तेस्या सक्ष्यात्रीयास्

यदे स्मार्थाय स्वा हित्र यावव से यहेवा।

नम् हो न्यम् दे व्यायाधिया।

नहते द्रश्यो निर्म्य स्थान स्

ने छिरने नगरम स्मानी।

नर्हेन न्दरहेश वर्षेया उत्राथिता ।

नदे श्री म्या है 'र्न मार्श्वर्ग नदे 'र्स मार्थ स्वर्ग स्वर्य स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

यरे-श्रिम्श्वराची ने अस्तर्ति।

५८:में (वर् क्रियाशवर वी वे अ वे र वर्रे र वर्रे र वर्ष न वावा वा) य प्रिया

वर्देन्'स'न्द्रेन्'स'न्द्रा ने'न्याया'सर्वे। न्दःसें'(वर्द्द्राया ने

गान्व पार देया हो द से व दे द या।

र्राभी दिं सें के सूर देगा

रेग्रथायाय व्याप्ताय विश्व वि

र्देवाश्चरणव्यावाहेवास्याविषाश्चरा ।

বান্ত্রিশ্ব। (दे: ব্ৰাবার) থা বান্ত্রিশা

न्नरः वेशः विष्यः की रिक्ति स्वी रिक्ति स्वा कि स्वा कि स्वा की रिक्ति स्वा की रिक्ति स्वा के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्वा की स्वा के स्व के स्व

५८.मू. (२वट.लेश.पोर्चर.की.क्ष्र-व.वरे.व.रट.स्वा.सहव.शंस.की.श्र्ट्टाकर.वर्श्वव.वर.)ता.पार्छ्या

श्चेरःक्ष्यरःश्चर श्चेरः होतः पाववः हो शःश्चेतः यावाः पर्दा । दः प्रेः (श्चेरःक्ष्यरः श्चेतः)दे।

> ने'न्न'ने'श्रेव'न्न्र्यान्त्रेन्। ने'न्न'ने'श्रेव'न्न्यान्त्रेन्।

नने स्यान्त्र मुर्ग स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

म्ब्रम्थायहाँ व न्वरासंदेश सर्वे श्रुश्य की प्वर्वे स्वी स्वर्वे स्वय्ये स्वय्ये स्वय्ये स्वयं स्वयं

र्नेत्रवरुषान्तरार्थे सुरान्तराष्ट्री । नन्ताकृताहे पहारे स्रोध्यक्षा स्थानिता । नने नात्या स्थानिता । स्थित स्थाने पहारे स्थान स्थानिता ।

या ब्रिया अप्यादित न्वराधित अर्देत श्रु अप्याद्दा ने देवे व्यवित्र श्री अर्थ प्राप्त व्यवित्र श्री अर्थ प्राप्त व्यवित्र श्री या ब्रिया व्यवित्र वित्र व्यवित्र वित्र वित्

यश्रिमायम् क्षे या निर्धेषाश्रायम् के स्थानिश्रायम्यायी विष्वा प्रमायम् क्षे या निर्धेषाश्रायम् के स्थानिश्रायम् के स्थानिश्रायम्य स्थानिश्रायम् के स्थानिश्रायम् के स्थानिश्रायम् के स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिश्रायम् स्थानिष्यम् स्थानिष्यम्

ने'न्या'सेन्'न्र'र्थिन्'स'क्। ।
त्याद'य'न्ने'य'र्श्वेयार्थान्ने'य्य'र्श्वेयार्थान्ने'र्श्वेया्य्य'र्श्वेन्। ।
ने'यश'ने'श्चे'याव्यत'यश्चेत्। ।
ने'यश'ने'श्चे'याव्यत'यश्चेत्। ।

क्रेन नश्रें अर्रे ने विकान विज्ञान विज्ञान कर दिन निर्मा के त्र स्त्री कर के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्म के

वा

ने नग केन थे । इन मन स्था

ग्रयः प्रतः से म्यायः वे स्टिसः प्रविद्या

न्तर्सितः अर्देत् शुअ प्याप्ते स्याप्ते स्यापते स्याप्ते स्याप्ते

বাইশ্ন'(ইছি: ইন্বাৰ্ব শ্ৰীশ ইছি: বান্বাৰ্ম) থা বাইশা

र्त्वेर् । विवास्त्र विवास वि

८८.सू.(यरे.श्वाभारटाक्षेत्रक्षेत्रम्भेभागवर्ष्ट्यरम्भेभाग्नेश्वाक्षेत्रम्भःभाग्नेभाग्नेभाग्नेस्यम्यः)त्री ८ १८८.चेश्वाभारटाक्षेत्रक्षेत्रम्भेभागवर्ष्ट्यरम्भेभाग्नेभाग्नेभाग्नेस्यम्यः)त्री र्श्चेर:नर:वशुर:वे:वा

र्नेन्यार हे न्या स्त्रीत्त्र स्त्री । यदे स्त्रीया स्तरीत्त्र स्त्री स्त्रीत्त्र स्त्री । दे स्त्रीत्त्र स्त्र स्त्रीत्त्र स

ग्राच्या ग्राच ग्राच्या ग्राच ग्राच्या ग्राच्या ग्राच्या ग्राच्या ग्राच्या ग्राच्या ग्राच्या

रेश ग्रेश पहें त्र त

न्नरःक्रेशःन्दा ध्रेशः चुरःनदेः धेन् श्रेशः ग्रेशः मेन्द्रः नदेः र्श्वाशः नेशः ग्रेशः व्हेन् ग्रेः विषाः वरः श्रेः व्हेन् तें विषाः

ने श्रिन्य।

क्याकन्येन्यम् भून्यो ।

यने अविभाने हीं दान से मान्य का मान्य क

विषानेषान्यतः भ्रेम दिवाने श्रिमायते भ्रिमा

सर्ग्रेग्राधिरः वे त

वह्यायासभीं यायायि श्री स्वर्धा स्वर्धित स्वर्धा स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर

"""ने अर्द्ध दशः ध्रेम्।

श्चित्राया सेत्राया सेता ।

र्मायार्थे।

हिमाना हि

ग्रुसप्र(देवे व्यव द्यायाचा)या प्रवि

न्तरः लेशः ग्रीशः र्नेतः न्दरः न्यते । न्याः केषाः व्यव्याः विष्यः विष्यः विषयः विष

५५१ (५न८ ने अर्थे अर्दे व ५८ नदे न निहे अर्था देश की अर्थ है व पर से प्रम् पर

गठियामी समाहिस ने सम्याधित है। । निम्मे सम्याधित से सम्याधित सम्याधित समाधित सम

न्नर संवि अर्दे क्ष अभाग के गा गो अ छि र्से वा ग्री र्दे के न्या नि स्व र स्व

यटे-श्र्याश्वाश्वादान्त्र्यात्वश्वा । श्रे-श्विर-टे-वृश्वादायेट-श्वेर।।

ग्राज्ञग्रायदेश्वर्त्त्वर्धियाः स्त्रिय्याः स्त्रियः स्ति स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रिय

> न्त्रियःग्रीयःश्रीःश्रीःश्रीमः प्यमः।। नुष्यःमःपीतःनः

> निर्धेत्यम् के स्थान्य विद्या । निर्धेत्यम् के स्थान ब्यान स्थान । निर्धेत्यम् के स्थान ब्यान स्थान । निर्धेत्यम् के स्थान ब्यान स्थान ।

र्श्वेरायाः श्वायायाः विवादार्त्ताः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्य

गहिरामा (इवाउमायहेवाया से प्रमान मा) दे।

र्नेन'न्राञ्चन'डेमा'हेन'यहेन'न।।

र्देन-प्राचे सें ग्रीया या है या गा ख़ेन हि गा है ने प्राचित स्मित सी या

वहें व कें ले वा

यद्राश्चायाः यो विद्यायाः वि । यद्राश्चायाः विद्यायाः वि । यद्राश्चायाः विद्यायाः वि । यद्राश्चायाः विद्यायाः वि । यद्राश्चायाः विद्यायाः विद्यायः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायः विद्य

न्तर अर्देव नश्चेत्र निर्मे क्षेत्र निर्मे क्षेत्र

ন্ শুঝ'ন'(নই'ন'কুহ'ন'নইক'ন'য়'নেয়ৼন')বি

र्म्यास्थ्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्य स्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स

र्देश्यान्ध्रिंश्यासेट्यर्थर्यात्ते न्याःश्रेष्यं स्थाः स्थान्यः स्थाः स्थाः प्रतः द्वार्यः स्थाः स्य

वरमी'यन'यमा'नुस्रम्भे'रिन्।।

निन्दा (द्वानिक्षा सुवह वादानि निवह वादानिक वा

र्नेत्रव्हेत्वत्त्वेत्ते ने व्ययः श्रेया । यदे या व्यव्यास्य व्यव्यास्य ।

म्ब्रम्था श्रेम्था न्त्रम्य म्ब्रम्य म्बर्य म्ब्रम्य म्बरम्य म्ब्रम्य म्ब्

५.१५८.वज्ञान्यत्। यहेतुःजवःन्यानः।ध्री । ५८.स्.(२.१८८.वज्ञानः)ध्री

धुवादे द्वादे दे चित्रवश्रा

र्त्वे के निष्ठमा कर क्षेत्र व विश्व

धिःर्रवामीः ख्वाने निर्मा वने स्वामाने निर्मा क्वानि स्वाने

यशने श्रिंद मी र्रेड ह्या घर्ष रेवा उर क्रेटि ले वा

डेगा उर दें व वे खें द या वा

नरे सूगान्याने सेगायर वशुरा।

गहिरामा (वहेदे व्यव द्यापामा)दे।

वरायी हेरायेव ने यायाया ।

लूर्यं संया यक्षाता स्यापा स्य

गडिगार्से दे दे त्याय न थी।

हेरायेवाधेवाधरायर्वेराकेवा।

यायाने। ख्याखें न्द्रं या श्री श्राचने ख्रुं या ख्री ना साधित श्री विद्या में श्री ना साधित श्री विद्या या से पा ने प्या ने प

गरमीशः इसायर नेशायं दी।

श्चीयायाधीक्रेयाचेत्कु।

> ने ने 'त्याय'न'न्यायत्र अर्थेन्। । नि मे म्यायाव्य प्रति प्रति स्थायाव्य प्रति प्रत

समुद्रायाचेया उरा हो दाया विद्या

महिश्रासर्देव सेमा हु नश्चन संदेश देश स्वार से से स्वार स्वार से स्वार स्वार

ग्राज्ञग्रायद्देत्र'न्नर'संवि'सर्देत्'श्रुस'श्रुस'श्रुस'श्रुप्तेर्नर'श्रेग्रायाः विद्याः स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वापते स्वापते स्वापत

ने श्चितः श्चितः वित्वा ने वित्वा नित्वा वित्वा वि

रदः वद्याः देयाः हो दः वदेः द्याः दे।।

र्देव वश्चे या राज्या नु विद्या

स्टानी निर्मा किट्टी पायर होट्टा प्रते के संस्टि द्या है कि स्वरा है का स्वरा हिंदा स्वरा के स्वरा स्वरा है का स्

र्नेवाशी प्रमानित्वा क्षेत्र प्रेत्या मि । स्टामी प्रमानित्वा श्री स्टामी । स्टामी प्रमानित्वा श्री स्टामी । स्टामी प्रमानित्वा श्री स्टामी ।

यहेगाहेत्वार्म्यार्नेत् श्रिटा लेखानेत श्रिटा सम्यान्य स्थाय स्था

न्धेम्यायारित्वे ।

देव-दश्याश्वाद्याद्याद्यात्र क्षेत्र क्षेत्र

गहिरामा (ब्रिक्नेबर्बर ब्रिक्नेक् व्याप्त)या गहिरा

८८.स्. (यरे.स्वाया क्षेत्रच त्वावा वा) त्या हे या

रेग्रथः स्थायः प्रमायाः प्रमायः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्था

वयायः विया यहे स्याया श्रीः रिया वा ।

ग्राह्म म्हा हे । ।

ग्रीश्राम्ब्रान्य विवादि स्था स्था के स्था के

डेग्'डर्'ग्रेश्'व्हेंद'से'रेग्र्स्'र्ग्।

महिश्यः (३व्ययः व्यवहः क्षेत्रः प्राचाः । याहिश्य ह्याश्रः क्षेत्रः प्राचाः प्राचाः प्राचाः । देवेः प्यवः प्राचाः पर्दे । प्राचे (ह्याश्रः क्षेत्रः च्यावाः विश्वः

य्रियाश्चित्रः विवा । विवा श्चित्रः विवा ।

र्शे.श्र्याश्राद्मश्रादश्चराश्ची स्टानिव प्रिव प्रवाश्या स्वाधिया स्वाधिय स्वाधिया स्वाधिय स

ग्राइरादे छे छूराश्रिया है

> श्चित्रः श्चित्रः स्ट्रास्य स्था । वीस्रसः संभावे । श्चित्रः स्ट्रास्य स्था । श्चित्रः स्ट्रास्य स्था ।

ष्ट्रिन्यर-रु-वे-भे-व्युक्र-रेग्।

यदे ख्रुवा कें अंक्ष्य क्ष्य क्षेत्र विद्या कें प्राप्त क्ष्य क्षेत्र क्ष्य क

महिरापा (देवे व्यव द्याया वा)या

गयाने हैं अरामने स्वाया है।

नन्गाकेन धेत समास्य सामास्य ।

न्देः धेःने नने स्मायः थे।।

नन्गानिन धिव लेश है भूम हैं ग्राया

न्ते श्वे देश देश हैं स्वाप्त स्वाप्त

यायाने सेया या वे मान निर्मा

ग्राज्य वित्रं वेत्रं वित्रं वेत्रं व

गयाने श्री देया श्री ने रहे आश्रामने निये महामानि स्थित ने द्वित नियं महिल्या स्थानि स्थित ने स्थित ने

न'न्न्या बुर'यहें व 'भेव' प्रते 'श्रेम । विन'श्रेष भेवार्थ' व 'न्न्य'या बुर' वहें व 'भेव' प्रते 'श्रेम । विन'श्रेष भेवार्थ' व 'न्याया बुर'

गुन ग्री प्रहेन ग्री प्रश्न प्रश्न । । रोग प्रश्न वार्य के प्रश्न के प्रश्न वार्य के प्रश्न वार वार्य के प्रश्न वार वार्य के प्रश्न वार वार्य

वर्देशके कुंद्राव्यक्षात्राच्या

देग्रथम् द्रिन्या नुद्रान्द्रेष्ठाः स्ट्रिन्यः वर्षे न्यायाः वर्षे याः वर्ष

कु: ५८: तत्रक्षात्रः सः धेवः है।

ग्राबुदाद्वरायक्षेत्राक्षेत्राधित्।

म्नित्र अः श्वीयः व्याद्वेश्वः श्वेशः व्याद्वेशः विश्वः विश्वः

व्यन्त्र ।

यायाने ने याहि साइसायाय हैया हो ना नियाना हा धोदायसाया हरा यह देन नुष्पेन या ने सादा हु प्यत्र सायान धोदा के विष्ठा

"""ने ने नावन त्यवर त्या रा

र्वे श्रुभातुः प्राप्ते रहे अथा था प्राप्त स्था है । व्याप्त स्था है । व्यापत स्था ह

महिरामा (अयमा क्षेत्र प्रमानिमा के रा

ने छिरने वे वर छेर परा।

श्रीं र श्रीं र श्री र श्री र श्री र श्री ।

नन्नाकृत्येव ने न्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्या स्टार्स्य स्टार्स

यार यो स्टर्म विव श्रिट संभित्। ।

नेश्वाची भ्रेश्वाची हैं श्राचा ने हिं हैं श्राच्या ने प्राची क्षेत्र प्राची हैं श्री हैं से प्राची हैं हैं से हिं हैं से है से हैं से

५८.स्. (ब्रॅं.ब्रॅट्ड्ब्स्ड्र्स्ट्र्स्याचार्न्त्र्यावार्न्स्)

यायाने ने स्टानबिव सेव स्था । हिंदान से किंदान से विवास के से सेवा विवास के सेवा विवास

नवेःग्राञ्चम्रान्ड्रवःदेःदेग्।प्रायाः धेःर्रयः श्चीः नदेः श्चिम्राः देग्। वे स्रुधः दुः ह्यः द्राञ्चीदः नः महिराः महिराः प्राप्ताः विष्यः नः पोदः हे विः द्रा

श्रीत्राश्रायार्वेष्वरायते स्वाया ।

नेश्वा केश्वा क

ने निर्ने ने निर्मा निर्मे के निर्मा निर्मे ने निर्मे निर

ख्यायार्योदः द्वा । यहेयायार्थः इसान्हेर्याये देवे पार्थः इसान्

भुग्राशर्मिद्द्रप्रस्य स्वर्त्तर स्वर्त्त स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण

ने भ्राधीव व नर्देश गुव त्या।

यन्त्रयन्त्रः भेत्रः चत्रवा कुस्रमा

न्द्रभः सं गुर्वायः ह्रभः वाद्या वाद्यः प्राप्ते व्याप्ते व्यापते व्याप्ते व्यापते व्य

> श्वानश्वानगरःश्वाशानन्त्र्या। शन्ताः स्वान्त्रः स्वाः शन्ताः स्वान्त्रः स्वाः शन्ताः स्वान्त्रः स्वाः शन्ताः स्वान्त्रः स्वाः शन्ताः स्वान्त्रः स्वाः

स्यात्रान्ते क्षेत्रात्रे क्षेत्रे त्रे क्षेत्रे क्षेत्र

ग्रुअ'म'(अंअअ'ओअअ'तुराय'अहरअ'म'श्रूरान')दे

सेट्र प्रस्थित विष्ठ द्वा प्रस्था प्रस्थित विष्ठ विष्ठ विष्ठ प्रस्था प्रस्थ प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्थ प्रस्य प्रस्थ प

त्याविवाची कें चरे चा सुर्वे से स्था चुराविवा के या वा स्था विवा चुना चा ते स्था चुरावा चे स्था चे स्था चुरावा चे स्था चे स्थ

ग्विरःविश्वेषःश्रेष्ठ्यः श्रेष्ठ्यः श्रेष्ठः । विश्वेषः विश्वेषः

ह्रेंग्'र्यं देग्राश्चर्यं व्याहिशः हेग्यं हरः तुः श्रेः श्रें प्रतिः देवः धिवः श्रे। देग्रश्चे अधुवः तुः अधिवः हर्याः हर्याः हर्याः श्रें वाः वाः धिवः हें विः वाः

देगश्यादेगान्द्रशन् इस्यानेशन्त्रान्त्रं यादेगाने प्या ह्यायान्त्रं सक्ष्ट्रस्य प्राप्त स्थाय स्थाय होन्त्रस्य ध्राय्य स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

धै'स'क्षेत्र'त्र| तेत्राम्य'रा उत्र'प्रथा देत्र महिमाया देत्र' महिमाया देत्र महिमाया क्षेत्र' क्षेत्र' महिमाया क्षेत्र' क्षेत्र'

मन्त्रायाः भ्रेत्रा वित्राव्याः स्थाः वित्राव्याः स्थाः स्याः स्थाः स्याः स्थाः स्य

वार्डें र्वितः इस्र नेस रेवास सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः निस् हो न्त्रा वार्डें र्वे हिवास नुस्य हेवा हम से पहुम नम नहें न संबेद ने स्व

देशव्यश्रेश्वर्था श्रेश्वर्था श्रेश्वर्था श्रेश्वर्था विद्वर्था श्रेश्वर्था श्रेश्वर्थे श्रेश्वर्ये श्रेश्वर्ये श्रेश्वर्थे श्रेश्वर्ये श्रेश्वर्थे श्रेश्वर्थे श्रेश्वर्थे श्रेश्वर्थे श

विद्वस्थरायस्वितात् । दिवे हिन् स्वरादे स्थान्य स्वरादे हिन् स्वराद् । विश्वर ना विद्वर स्वराद स्वर

धिरः र्स् । प्रदे 'द्या'वे। क्रुश्यर पाव्य 'दु 'य्य प्रदे । य्ये 'य्य स्था' प्रदे र स्था र या स्था । या स्था प्रदे र स्था (श्रुवे द्या) या स्था । या स्था प्रदे र स्था र स

सळ्य. केट. तटा सळ्य. यांचे प्रत्ये प्रत्ये । सळ्य. यांचे यांचे प्रत्ये । सळ्य. यांचे । सळ्य. यांचे प्रत्ये । सळ्य. यांचे । सळ्य. यांचे प्रत्ये । सळ्य. यांचे । सळ्य. यांचे प्रत्ये । सळ्य. यांचे प्रत

স্ত্রী শাসা (মজর শ্রালীর দ্রী দের) ব

यान्यस्यानी निर्वासे दास्य स्वास्य स्व

स्वा नस्य से ह्वा सेवास सु क्षेत्र मिय पर्दे र पर्दे र पर्दे र पर्दे र उत् में अश हो द्राष्टी प्यवाया प्रदास हाया वर्षी ह्या से या सामा स्याप्त र सूर नवे पो ने अरे अरमर प्रमुद क्षे हेन नहन में अअर मंदे हैं वा नरे से अरगूर भे ह्या भेंग्रास ग्रे क्वें देवास वर्त्त तु साम क्वें दाय वि श्रेत्र सवतःग्वितःवर्गेग्।यदेःरेग्रस्यस्य न्यूनःसरःसहर्दे।।

र्श्व मुं अविश्व पाति हैन हैं न देव मुं अ है । है । है । यह विश्व पित प्रिय मिल स्रेन्-पासित्रान्तेगान्यहिन-नर्देशः स्नित्रागीरासून-परेन्यायाया ग्रास्यावेयावळन्यायी व्यन्ते। हे स्रेन्या राष्ट्रियाये ग्राम्या ८८। ट्रेमिवेशसून तुरासुसस्दर्भ निट्टे सून पदे स्था देव ग्री रामें नराये तुः वाहे सः सरावा सुरसः सदेः द्वीरः र्री ।

বাই শ'ব' (য় বাইব র র র বন্দ্র বিশ্ব বিশ্

इयायर्रे रायरे वार्ष्या स्वारा सर्व वार्षि प्राप्त सर्व के प्राप्त हिंगा ब्रयः ग्रीः देवः ग्रीः व्याः तुः चल्दः धर्वे।

५८:में (क्यावर्त्त्र्स्वर्श्यात्त्री अळव प्रावे) दे

क्षायत्रीं मः भेषायाः स्मायन्य । वे प्रवासी प्रवासी ।

स्राये तुः गिरु स्याया स्वितः स्याय हिंदा स्याय हिंदा हिंदा हिंदा है स्याय हिंदा हिंदा है स्याय हिंदा हिंदा हिंदा है स्याय हिंदा हिंदा है स्याय हिंदा हिंदा है स्याय हिंदा हिंदा है स्याय है स्याय हिंदा है स्याय हिंदा है स्याय है स्याय है स्याय हिंदा है स्याय है स्थाय है स्याय है

विश्वी क्यावर्डिनःक्यश्योः त्वास्यावर्ष्ट्वा । सावर्ष्ट्याय्योन्त्वा व्यासर्वेनः विश्वास्यावर्धिनः क्ष्यासर्वेनः विश्वास्यावर्धिनः क्ष्यासर्वेनः विश्वास्यावर्धिनः क्ष्यास्य विश्वास्य वि

गहिश्यःयः(सस्त्रंहिनः)त्यःगहिश्रा हिंगःश्रव्यःश्चेःद्वं प्रत्याहिश्या प्रतःसः (ह्नाश्चवःश्चेःद्वः)त्यःगहिश्रा सुश्यःप्रत्यत्प्वात्त्रं । सुश्यःप्रत्यत्व्यःश्चेःद्वः)द्वी। प्रतःसः (श्वर्यः व्यव्यः श्वर्यः ।

म्यान्तर्भः न्यान्यस्य नया ।

क्यायर्चे रासर्वि शुसार्के भाउव। हेंगायि दाया क्यायर्ग यस्य या वित्र हो। स्टाणुया या स्थाय हिंदा हो के स्वायि क्याय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय हो हो हो स्वायि क्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

वर्देन्द्रस्य प्रत्ने विद्या विद्या

इस्राधरःहेषाः प्राहेशः वहीयाः वी। इस्राध्याः हेषाः प्राहेशः वहीयाः वी।

र्देव या राया सूर राया उत्राया धीता।

इस्रायम् हिंगा सान्माहे साशु प्रश्चेषा विमाहें गा सदे हैं। धेवाव मेंवा

क्षे व्यवस्थान व्यवस्थान स्थान स्था

भ्रेत्रभः श्रेत्रभः भ्रेत्रभः भ्रेत

भ्रेम्बर्ट्यन्त्र वर्ष्यर्थः भ्रेम्बर्धः विद्यम् अर्थः भ्रेम्बर्धः विद्यान्त्र विद्यान्त विद्यान्य विद्यान्त्र विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त वि

न्यायात्रप्रदेशत्यायात्रहें साम्प्री। न्यायात्रप्रदेशत्यायात्रहें साम्प्री।

गहेशमः(र्न्न्न्रूप्तः)दे।

ने या स्रम्य निवा । निवास स्रोत्त स्रो

नर्भेषया गुरायरें ता श्रुयाळ रायर परें रा

में न्या स्मारे त्या है सामारा निष्य के स्मारे स्म

उत्। क्यापर्वेर्यस्त्र्यं अध्यास्त्र्यं अध्यास्त्र्यं प्रमाणिकः प

ध्र्याः सः हे नरः नक्ष्रनः सः धेव।।

म्बाद्य के द्वा विषय के द्वा वे विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्व विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा विषय के द्वा

नेशयारयारयारया श्राप्ति । विश्व स्था स्था ।

म्रिं स्वर्धायते क्षें क्ष्यं प्रते क्षें क्ष्यं प्रते क्षें प्रति क्षें क्षे

ह्नेंग् ज्ञयः श्रीः नेंद्र त्यः ग्रीहरू। अन्नयः नुश्चनः प्रत्यः क्षेत्राः नेंद्र हें। इतः सें (अन्यः नुश्चनः प्रोहे।

प्राचित्रं हिन्द्र्या है अप्यापित्रं के अख्या हिन्द्र्या हिन्द्र्

मिन्न स्था विश्वास्त्र विश्वा विश्वास के स्था के स्था

तिस्त्रेर्त्राच्येतः विश्वास्त्रस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्यः स

विश्वास्त्रम्याने किन्द्रिया संस्थान स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व

हेशन्यवाने हिन्या वास्या वास्य वास्

गहेशमः(ॐगर्न्दः)दे।

रम्योर्ने में भूनेव भेव।।

ने भ्रीताने त्या गुना अर्देन शुमा।

ष्पराव ग्रेज्ञगारुवगारावश्राहेगायदेगात् स्थाळेश रुव ग्रिंद स्टा श्रीट प्राचे प्रहेत स्थालेश प्रश्नु प्राचे प्रट स्या अर्देत श्रु अपे प्राचे प्राच प्राचे प्

र्श्वयः द्व्याः स्वर्धः व्याः व्याः

इव दर सर्वे व वर्षे द रे रा हारें।

सर्दिन शुस्र भूर स्वर स्वर स्वर निष्य श्री।

ग्रीश्वान्त्रात्वरात्र्यः विश्वान्त्र्यः । इत्यान्यत्रेत्यः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्यः विषयान्त्रः विषयः विषयान्त्रः विषयः विषय

सर्विःशुस्राः सूरः सूरः सूरः निवाः प्रतिः विशाः प्रतिः स्वाः प्रतिः स्वाः प्रतिः स्वाः प्रतिः स्वाः प्रतिः स्व हेवः पश्चरः प्रतः स्वाः प्रतः प्रतः । हेवः पश्चरः प्राः प्रतः प्रतः प्रतः । हेवः पश्चरः प्राः प्रतिः प्रतः प्रतिः ।

यर्द्व-श्रुयाःश्वर-श्वर-र्क्वेश-उद्या क्यायां यिने विष्यां प्राप्ति ने श्वर्या या विष्यां प्राप्ति स्वर्या स्वयं स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर

गहिरामा (बे नव नव नव रामा) या गहिरा

हेन्। संस्कृत्या संस्कृत्य स्थान स्वार प्राप्त । हिना से न्या स्वार स्व

মর্ন্ না ক্ষুর 'ন্দ। ক্রু অ'ন প্র 'র্ন্ । ন্দ ইন (মর্ন না কুরা) বি।

न्नरः भ्रेशः शेषः सरः ग्रुनः र्नेषः न्।।

गहेशनन्त्रवायायायार्वेत्ति मःर्रा

यश्चित्रायतेः नेश्वायते केन्यायते केन्यायते केन्यायते केश्वायत् विश्वायत् व

रेग्रामा उत्तासमा अर्देत् सुया श्री अळंत् छेट् द्रान्तर में द्रान्ति स्वास्त्र स्वास्

हेशन्यमार्श्रम्थायायायायाया विष्

श्रु अ जाहे अ हे न न ज्ञुन हो र ने ।

हेशन्यनाः श्रेन्याश्रेन्याः स्ट्रिंश्यः स्ट्रिंश्यः सः स्ट्रिंश्यः स्ट्रिंश्य

यर्ने सहराम्या हेना सम्बद्ध सुरास्त्र सुराह्म सुराहम सुरा

त्र्वायायहर्न्ययाक्षेत्रावित्रावित्राच्यात्वेत्रच्यात्वेत्राच्यात्वेत्रच्यात्वेत्यत्वेत्रच्यात्वेत्रच्यात्वेत्रच्यात्वेत्यत्यत्वेत्यत्वेत्यत्यत्वेत्रच्यत्यत्वेत्यत्यत्वेत्रच्यत्यत्वेत्रच्यत्यत्वेत्यत्यत्वेत्रच्यत्यत्वेत्य

বাইশ্বংব (ক্রুশ্বন্দ্র্ব্র্

यह हे व उव दिन है व या वव तथा। श्री पर्दे या था हे साथ है साथ है

दमादःकें दिश्वाराये कुं धीव कें।

नद्रिःहेवः ठवःश्चीः हैं नायः नदः। देवः नविष्यः श्वेषः विषयः श्वेषः विषयः विषय

इन्यायाश्चाराह्याराद्या।

यह या सुरा महिता सह वा से साम स्था से साम सा

न्येःहॅगायरः नश्रुवः यःवे। हे श्रुरः खुयः क्र्रीं गाः ह क्रुरः यदेः देवः उवः व्यान्ताः व्यान्ते व्यान्यान्ते व्यान्ते व्यान्यान्ते व्यान्ते व्यान्ते व्यान्ते व्यान्ते व्यान्ते व्यान्

ने भूम कुस्रका श्रीत है । । नुस्र मान्य स्वीत स्वाप्त हो । ने साम्य स्वीत स्वाप्त हो ।

सर्वि-शुस्रायशाने पित्रानुस्रायात् ।

द्ये ने स्था हिन् र्श्वेन क्ष्मा स्वाप्त क्ष्मा स्

महिश्रासः (ह्नायेन स्वर्यायाय स्वरं स्वर्यायाय स्वरं स

र्यः व्या अर्देवःश्वयः नुः त्रया हिंगाः सेन् त्राः भी व्याः स्वा याः सेन् याः सेन्यः सेन् याः सेन्यः स्

मः प्रमायः से कि अविश्वा विश्वाने स्वर्षेत्र श्रुष्ठाः श्री । विश्वाने स्वर्षेत्र स्वर्य स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्ये स्वर्षेत्र स्वर्ये स्वर्षेत्र स्वर्ये स्वयं स्वर्ये स्वर्ये स

श्चितः द्वित् श्वित् श

र्त्य अर्देव-श्रुअःह्मा-त्रयः अःयश्चियः त्र । विशःश्चिशः स्थाः श्चितः श्चियः श्चितः श्चियः श

रेग्रायायव्य प्रायम्बर्ध्य हिंगायर पर्दे न्या प्रायो भेगा हिंगा न्याया प्रते के न् न्याया ये व्याप्त के स्थाया के य हिंगाया न्याया व्याप्त या विवाद विवास के स्थाया के

ने त्या त्रा व्या त्रा हैं ना त्या विद्या न त्या विद्या व

यिष्ठेशःगान्दरः ज्ञायः निर्मेशः विश्वास्त्रः स्त्री । स्वःस्वः निर्मेशः विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः स्त्रीयः विश्वास्त्रः विश्वास्तिः विश्वास्तिः विष

ने त्यास्यास्य स्वयाः वियाः विषाः वि

हेरमहें दासकें दासर हो दास धीदा।

ने त्यास्त्र से ता श्री शानस्त्र साय त्या विष्णा निर्देश श्री तस्त्र से ति श्रु । यह ते से त्या श्री त्या साय त्या से त्या से

च्छेन्। त्रियाश्चान्य व्याः क्षेत्राः क्षेत्रः व्याः स्वान्य स्वान्य

वर्देन् सन्मम् सर्वे ।

५५:में (रक्षेत्रायान्यवर मुं क्षेत्राह्में ने यो र मुं के या सर्हे द शुक्ष मुं स्वरं के र र नवित्रा सर्वे र वे र वर्षे र स र त्यों र स र त्यों प्राया से स्वरं के र र नवित्रा स्वरं र से र वर्षे र स र त्यों र त्यों र स र त्यों र त्यों र स र त्यों र स र त्यों र त्यों र त्यों र त्यों र स र त्यों र

खुट:द्र श्रु र नवे रे वायायया नावाया या श्रु र नवे रे वायायया द्याया पर्वे ।

५८.स्. (अट.२ट.श्चर.यह.स्वाय.यय.रवाया.य.)द्री

ने प्यर प्येन ग्री बिकाम हेमा

ब्रेन्द्रम्भः भ्रेन्द्रम्भः भ्रेन्द्रम्यः भ्रेन्द्रम्यः भ्रेन्द्रम्भः भ्रेन्द्रम्यः भ्रेन्द्रम्यः भ्रेन्द्रम्यः भ्रेन्द्रम्यः भ

श्रेणांची प्रत्यंत्र प्रतः रेणांच्या स्थाः त्रुप्त प्रतः हितः त्रुप्त स्थाः हिताः विश्वः स्थाः हिताः स्थाः स्

र्श्वराहिश्याश्याश्याश्याश्याश्याश्या । प्रवर्धयर कुः धेव लेश ग्रुः प्रदे।। प्रवर्ष यह रहे प्रवर्ष । त्रुः नात्रिश्राञ्चरः नीः नेश्वराधितः नेशः हैं नाः सरः ह्रिं नाः स्वाधितः स्वाधितः

गुवायश्वात्व हैं न्या है के निष्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

न्दर्भे से देवा स्थान्य स्था स्थाने स्थाने

भ्रेयाः श्रेयाश्चरः हुयः श्वरः स्वरः श्वरः स्वरः श्वरः स्वरः श्वरः स्वरः स्वर

यम्प्रचुर्म्स्विश्वार्ये | न्रियाश्वार्म्म्यः न्रियाय्यः स्वार्म्यः स्वार्मः स्वार्यः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्मः स्वार्मः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः

र्यंत्र मुलास्रवार्षित्वत्त्र प्राचितः विश्वार्णे म्हेर्यास्य स्वार्णे न्यार्थे व्याप्त स्वार्णे न्यार्थे व्याप्त स्वार्णे व्याप्त स्वार्थे स्वार्य

नह्ना'स'स्रवद्या बुद'ल'द्याया'स'स्ट्र्द्र्य'स्थ'लेव'र्चे। हुल'स्वर' द्यद'नेश'ग्रे'द्रभेगश'क्रेव'णेव'स'ल'द्याया'स'स्ट्र्र्द्र्य'सेव'र्चे।

नायाने नकु नाममा कु धिवावा।

न्नर्भितेः भेषायते श्रुं न् खुवान्या ।
नुश्नायते व्याधिन् श्रुं ने खुवान्या ।
भूत्रवार्थे श्रुं ने खुवान्य स्वार्थे व ।
नुश्नाय स्वार्थे श्रुं न खुवान्य स्वार्थे व ।
नुश्नाय स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे न स्वार्थे व ।

नगर हेत गार धित गाय हे गार ।

न्नरःसंधिन्धेनःहेशःवह्याःठवा।

न्याः क्रेंत्र न्याः संस्थाः निहेत्र संदेश्ये श्रेष्ट्र स्वित्र मित्र मित्र स्वित्र स्वित्र

ने अर्द्धन्य ।

त्रुप्ता विश्वास्त्र विश्वास देश्वे स्वर्ष विश्वास है स्वर्ष स्वर्ण स्वर्ष स्वर्य स्वर्य स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स

"""गथाहे त्युराध्वावा

वायाने न्यर में विश्व रहे राष्ट्र विश्व व्याप्त के साथ के स्वर्ध के साथ के स्वर्ध के साथ का साथ के साथ का साथ का साथ के साथ का साथ कर के साथ का साथ के साथ का साथ के साथ के साथ क

ने प्रने केन व के वे के केन व

ते.लट.रेयट.जेश.लुयाश.राष्ट्र.हीर.लट.वर्ग्या.हा.स्याश.सर.वर्षा क्रि.शक्ष्य.टे.प्टे.हेट.ज.लट.खेयाश.राष्ट्र.हीरा

त्तेर प्याः श्रुवा श्रव्या श्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्या श्रव्

त्र्युर्ग्गत्रश्रेश्वर्षा प्राप्तर्भेश्वर्षा प्राप्तर्भेशः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

यीरायमाया विवासी कि विताय है या के साम है दारा के

त्रम् त्राप्ता क्षेत्राचर व्या क्षेत्राचेत्र व्याप्ते क्षेत्र क्षेत्र

महिराम्यः (न्यास्त्रम्यः व्याम्भेत्रः व्याम्भेत्रः व्याम्भेत्रः व्यामेत्रः वय

য়ुःतः गृहेशःश्वरः ग्रीः विश्वः सद्दे। धुवः ग्राश्वः स्वरः धरः हिंगः सः प्रेतः स्वरः ग्रीः स्वरः स्वरः

महिन्द्रिमान्यस्य अन्य । मार्थित् स्थान्य स्थान् । ने दे हिमा से न्यहिका मान्य पाना । ने स्थान स्थान ।

याक्षेत्रः विवासित्रः स्वतः स

क्ष्याक्षेत्रक्षण्या। क्ष्याक्षेत्रक्षण्या। क्ष्याक्षेत्रक्षण्या।

त्तुः नाहेश्यः सूरानीः लेश्यः यदेः हिंगाः से दाधितः वाप्याः। क्रिंदाः साधितः साहेद्दे स्वाः स्वाः साहेद्दे स्वाः साहेद्दे स्वाः साधितः स्वाः साहेद्दे स्वाः साहेद्दे स्वाः साहेद्दे स्वाः साधितः स्वाः साहेद्दे साहेद्दे स्वाः साहेद्दे साहेदे साहेदे

77971

सर्वि-श्रुस्राध्नर-सूर-पारेश-श्रु-पन्।।

न्श्रेग्रश्नात्रश्याद्यात्रश्यात्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात्रश्यात

ग्रुअपः (सर्वःश्रमः क्र्यः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः सः त्वावाः सः) सः प्रिश

श्चितिः र्देवः प्रदा धवः ययाः योः र्देवः र्हा।

८८.स्.(श्रुवेह्ब.)याम्ब्रुसा

क्रन् त्र्य अप्ते वार व्यक्ष प्रस्था वाष्ट्र । वाष्ट्र प्राची प्रमे प्रमाण वाष्ट्र प्रमा

५८:स्. (क्र्यंत्वंशत्रं वीर त्यंशत्रं श्रामः)स्

য়्रायदेवाश्वाये द्विः क्षः विश्वायः वि

नेते त्य्यश्रास्तु श्रुवा ख्रुं व्याची वावश्र श्रूव्यश्य श्री वावश्र श्रूव्यश्य श्री व्याची त्रेश्व त्या व्याची त्रेश्व त्याची त्याची

महिरापा (मन्द्रम्यामी वर्षेत्रपानमें न्यो

ळट्रायायद्वित्यव्ययात्रायादाधेवालेखा यालयात्वाहें वायाया स्री

गर्अस्य (स्टामी ख्याय नवना न)दे।

श्चित्रः मृत्यावित् स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्यान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्थान्तः स्था

सवतः वक्षतः चित्रः विश्वावशः प्रति श्रीः श्रीः श्रीः विश्वा प्रतः श्रीः विश्वावशः विश्व

बःश्रुन्दुः बुन् श्रुन्दुः स्वान् देवान्य स्वान्य स्व

याहेश्वायात्रम्म विश्वायात्रम्म विश्वायात्रम् । विश्वायात्रम् विश्वायात्यम् विश्वायात्रम् विश्वायात्रम् विश्वायात्रम् विश्वायात्रम् विश्वायस्यम् विश्वायस्य विश्वयस्य विश्वाय

देशवा श्रून'नर्भव'क्क्रव'यावव'र्भश्री'र्स्थ'र्न्द्व'श्री'क्रयाववा' यहंद'रा'प्पदा' सूर'न्वन्द्र'र्य्य, स्वर्ग्याववा'

प्यम् प्रयम्भ मित्र मित

स्वाभः शुःश्चानः द्वानः विद्वान्तः विद्वानः विद

नवाः कवाश्वानहत् ग्रुट्यो प्तर्यः भेशः श्रेट्यः श्रुश्यः श्रेत्यः विश्वान्त्रः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्त्रः विश्वान्तः विश्वान्यः विश्वान्तः व

स्वाति । अर्थः अप्याति । अर्थः । अर्थ

णरा अर्रे श्रेष्यम ग्राह्म स्याप्त स्वाधित स्

त्र्रशः हैं न्या शुर्शः विश्व श्री व्या श्री व्या व्या व्या विश्व विश्व व्या विश्व विश

लिवःसमा यवःलरः स्रमः यन्दःसमः नेमः समः हार्दे।

दे त्य वे कंद त्य अ श्री श्रु व अ दे अ दे हो प्य व अ स्था के स्था के

न्धन्त्रन्तर्विः सर्वे स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य

सूर्ध्या भेषा श्री रियश द्वेषा प्रत्य प्रत्य स्था वर्षे वाषा वर्य

मदेर्देवरधेवर्देखेल

र्तेत् इर्द्यन्यः अत्राध्यः व्यान्ते व्याने व्

য়ूर्यहूँ द्रायते रद्रायी क्षित् प्रवास दे । यह स्थान क्षित्र विष्ठ स्थान क्षित्र । यह स्थान विष्ठ स्थान स्थान विष्ठ स्थान विष्ठ स्थान विष्ठ स्थान स्य

र्क्ष्ट्राय्य्य अभित्र स्वाप्त्र स्

दश्यः हैं ना नाहे या या या त्या विष्णा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

স্ট্রিস'শ'(অর'অন্'নী'র্ন্র')মা

ळ्ट्रत्व्यश्च अ.सर.य वट्र.स.ट्रा ट्रे.ध्रेट्र.च म्य.लय. श्री अ.यो ह्य.

यासनासर्वे ।

५८:र्से (क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां प्राप्त क्ष्यां क्ष्

र्देवःह्नेयाश्वास्त्रेश्च्याः होत्यावव्याः यहायश्वास्त्रः होत्याः व्यास्त्रः होत्याः होत्

ग्रन्तः श्रुवः स्वरः ग्रेट्रा । यथः ग्रुवः ग्रेट्रा श्रुवः ग्रेट्रा । यथः ग्रुवः ग्रेट्रा श्रुवः ग्रेट्रा । यहः भ्रेवः हे दे दे श्रुवः ग्रेट्रा ।

लेश मुं हैं शर्म मिन्न प्रत्याद लिया मी मुं मार्थ स्था में से स्था मिन्न स्था में से मिन्न से से मिन्

प्रस्ति (क्ष्य्य क्ष्य क्ष्य व्यवस्त्र क्ष्य व्यवस्त्र क्ष्य क्ष्

दे त्याक्षसंस्य सुर्ह्धित वर्षस्त है त्ये स्वत्य ते ते स्वत्य स्

> नन्नाः हेन् त्युक्तः सेन् कुःन्नाः य। । इन्द्राः वेन् युक्तः सन्द्राः ये। ।

यशयात्रान्द्रभाग्नेत्रायदी।।

र्श्वेर्यं स्वायं स्वयं स्

ने श्री र प्रदे प्रदेश मार्थ ।

यार त्यमायदी यदी वे दे हिंगमा सा लेगा।

ग्रेन्याधीन्यमानेमाने।।

ने भी क्षुन हो न उव न न वा ।

होत्रायीव्यास्य साम्रीयाययागुव होत्यम् विद्यूम्य साधिव यमः

वया वहेंग्। च्रान्य च्रोन्। च्रान्य च्राच्याच च्रान्य च्राच्य च्राच्य च्राच्य च्राच्य च्राच्य

र्राञ्चराय्ये। राञ्चराय्ये।

५८:स्.(४८.धियोश.म्).क्ष्री.क्ष्रे.प्ययंश्वया.स.)स्

इस्यायायायाये स्थायये स्टायविव दी।

श्रेन्द्रिन्त्रा श्रेन्य श्रे

न्नर्भिते संदेत सुरायदि हो। देव न्र प्राया प्राया स्वाप्त स्य

ने भ्रीत्रमान्य मुद्देशकार्य प्री

श्चन ग्रेन्यावय ग्रिय स्टानविव हिन्।

निवयः गुःहेन्य अप्यादिः श्रुवः ग्रेट् अद्यादिः स्थापिः स्थापि स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः स्थापिः

ने भार प्रेच्या स्वाप्त स्वाप

र्त्वाची स्थाया निर्मे त्रास्त्र क्षेत्र मा श्रुस्य सा स्था व्याची निर्मे त्रास्त्र स्था व्याची स्थाया स्य

त्रेन'यार्श्चे पर्देग्रायाण्डेन'त्र्याण्डेन'त्रिचेन'त्र्याण्डेन'त्रिणेच'त्रिणेच'त्रेचेन'त्र्याण्डेन'त्रिणेच'त्रिण

ने भी नित्रा के नित्र हैं नित्र में नि

वहित्रपरिः तस्याया छेत्। परिं सूर्या परिं त्रिता के स्वापित के स्

याया। स्याधित्यान्ता स्याप्त्र । । श्रीत्र विश्व प्रति । स्याप्त्र विश्व क्षेष्ट्र विश्व क्षेष्ट्र विश्व क्षेष्ट्र विश्व क्षेष्ट्र विश्व क्षेष्ट् याया। स्याप्ति । स

र्ट्सिन् श्वानित्य स्ट्रिन् स्वानित्य स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्

वेत्रत्रक्षायाः भृत्रस्था।

र्या विष्यं विषयं व

कृत्यत्वे। र्नेवन्ययम् ग्रुग्नेवन्य स्वर्धेन्यः क्षेत्रः विद्यायम् ग्रुग्नेवन्यः क्षेत्रः विद्यायम् विद्य

नन्गानेन होन से से वाव प्यमा।

ने पी नगर मी अने रामवगा श्रेमा

म्ब्रम्भायदेश्वर्त्तर्याः स्विध्याः स्विद्धाः स्वद्धाः स्वद्धाः

देवे हो न संवेदि स्थान स्थान स्थान स्थान हो न स्थि स्थान स्

या बुवाश्वाश्वाश्वा स्वाश्वा या बुवाश्वा विश्वा स्वाश्व स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

न्धेरवायायायायायायायाया

नन्गाकेन्। त्र्यास्य क्ष्यास्य क्ष्याः विष्णा व्यव्याः क्ष्याः विष्णा व्यव्याः विष्णा विष्णा

ম্টিশম (ন্ব্ৰন্থ্ন্শ্ন্ন্ন্ন্) শে ম্টিশ মর্নি ন্ম্র্র্ন্ন্ন্ম্র্র্ন্ন্ন্ম্র্র্ন্ন্ন্ ব্র্ন্ন্র্র্ন্ন্ন্ম্র্র্ন্

ने श्वी सः अर्थितः नित्तान्य नित्ता । श्वान्य स्था श्वी श्वी श्वी नित्ता । श्वान्य स्था श्वी श्वी नित्ता । श्वान्य स्था श्वी स्था । श्वान्य स्था श्वी स्था ।

र्देव'अर्थेट'र्न्वे' श्रेक्ष'यं हैं वा' अर्'र्न्ट्र्न । प्रेचट'र्नेव' श्रेच था प्र'न्ट्र्न श्रेच अर्थे वा अर्थ

श्रुप्ताः विद्याः स्थ्या । श्रुप्ताः विद्याः विद्या

बःसदेःबः ५५ छे ५ जारः दे।।

ने भी श्रुन हो न सम्पर्दिन।

यहें ना हो ने ना निव हो अपने संख्या हैं ने प्रेंच हो ने

धेरर्रे ले'वा

বাইশ্বন (ক্রশ্বন্দ্র)ই।

गुव-ग्री-अर्द्धरशः मुः धेव-पवे-भ्रीम्।

वर्दे वर्द्य न्वर में वार्षे न से वा

ने मन्न ग्रम्म मन्न भेना।

वर्देवे वदे वे अ ग्रु ने ग्राम्य श्रा

हेत्र न इका ग्री श्री ना निवास के प्रति हिन् स्वास के स्

वर्देशके खूया या नन्दारा धेवा।

श्चीं न्यायान्य ने दिन्याने स्वायान्य प्राप्त निर्मित्य निर्मा निर्मित्य नि

रेग्रामान्य उत्रायदे वर्षे द्राप्त प्राया प्राया

ते 'नर्रेश' से न्'विन' स्या स्थि। ।
त्रें 'पान्य न्' से न' स्थु न' हो। ।
त्रें 'पान्य न्' न्या थान ने 'नवेन' वे। ।

त्यायते श्रुं यहेत् प्रते श्रुन्य स्यो श्रुं प्रहेत् प्रते श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं श्रुं यहेत् प्रते श्रुं श्रुं

ग्रुत्य म्हार से स्मून हो न महिना । भ्रुत्य महन संवद से प्योति महिना ।

श्रुव्यः वाडिवा वी : ग्रुः वं : व्यव्यक्षः ग्रुः न्दाः ने वे : श्रुवः ग्री ने वे व्याप्तः विक्राः व्यव्यक्षः व श्रुव्यः वाडिवा वी : ग्रुः वे व्यव्यक्षः ग्रुः ने विक्षेत्रः विक्रिक्षः श्रुव्यः ह्याः विक्षेत्रः श्रुव्यः ह्य

र्नेत्रम्छिम्। भित्रत्र म्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्। म्याच्याचिम्।

रेस्रान्तित्वतुरान्सेर्प्यराव्युम्।

ध्यया विवार्से दे विह्या वाया ळ दा सं विदा विकार से सं उता दुर्देन

यग्नुर्न्न विष्ठ्या म्ब्रिन्मिक्ष्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र वश्चर्न्नित्र्या म्ब्रुट्नित्रम्क्ष्यात्र्यात्यात्र्यात

र्त्त्र वित्र क्षेत्र क्षेत्र

देगिहिशानश्चित्राश्चि

ने स्थायालया त्या नहेन न राजी।

ळ'द्या'नश्चन'गुःश्चन'गुंद्र'याव्या।

देवाश्रायाञ्चरायादादो विर्धित्ववाष्यायाद्वेषायाद्वेषाय्याद्वेषायाद्वे

न्दान्त्र-सर्डन्सी प्रमेखार्यो

त्रे न्वान्त्रेयायावित्तः । येयायो न्वान्यं वित्रः व्याप्तः वित्रः वित्

नेशन नगरर्नेन सन् छेर प्रजेश सर्नेन हेंग्रा श्री कर्न साधित हैं । बेश जेर हैं।

यन्याक्षेत्रग्रुव्यक्षेत्रग्रुव्यक्ष्यः व प्यत्याद्यः वियाचे क्षियः व युक्तः व वियाचे व वियाचे व युक्तः व वियाचे व युक्तः व वियाचे व युक्तः व वियाचे व युक्तः व व युक्तः व युक्तः व व युक्तः युक्तः व युक्तः युक्तः युक्तः व युक्तः व युक्तः व युक्तः व युक्तः युक्तः व युक्तः युक्त

स्त्रा ह्याश्राधिः स्वित्वेत्त्रां निः स्वराधिः स्वर्णे निः स्वराधिः स्वर्णे स्वर्णे

क्रॅ्रिंगर्श्वरळ्यायळ्याची प्रविद्धराष्ट्रम्य प्रविद्धर्था प्रविद्धर्थाय स्वित्राची स्वत्र्वेष्यय स्वित्राची स्वत्र्येष्ट्याची स्वत्राची स्वत्राच

नेश्वान्य विषयाने श्वान्य सेन्य ग्वान्य स्थान स

श्र्रेन द्र्यत्र क्ष्यः सक्ष्या व्यायः द्रा व्यायः स्रोतः स्यायः स्रोतः स्यायः स्यायः

तुयः शॅः वे दा

यन्त्रः ग्रुर्याययात्ते स्रोतः नेतिः नर्देश। । स्रोतः त्राने प्यतः नव्याः स्रोतः स्रोतः।

इस्रायासेन्यस्यन्यायो पित्राह्म विष्यस्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स

गत्य हे । हु हु न यह मा थिव । यह ।

दगाय सें ले न

..... भे नित्र है।

क्रिंश मन्द्र पाष्ट्र प्राप्त्र प्रोत्र भी मा

न्देशसुः श्राम्यन्त्रेन्।।

 हैंगाययानन्ग्रायदेश्वान्त्रस्यान् पर्देन्यदेश्वेन्

ठु:नः हो नः सदेः श्रःश्रुनः नगा

वस्रशंक्त्रं देश्यः इस्राध्यः वाद्या।

ळद्गत्र्व्याण्णे ग्रुग्ते द्वावाय विवादे विष्याद्वाय विवादे विष्या विवाद्वाय विवादे विष्या विवाद्वाय विवादे विषय विवाद विवाद

श्च-प्रदेश्यक्ष्यः । श्च-प्रदेशक्ष्यः । । श्च-प्रदेशक्ष्यः ।

ने 'क्ष'त्रिं त्र होने 'ब'न्न'त्र 'वर्ने न प्रे 'ने में से संस्था स्था हो होने स्था है 'क्ष'त्र 'हे से से स्था हो होने 'ब'ने न होने 'ब' ह

नेश्व र्रेन्थ्य नेश्व न

स्राचनित्यादे निवाशस्त्र निवाशस्त निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त निवाशस्त्र निवाशस्त्य निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त्र निवाशस्त

शुःर्स्यार्स्याप्तिः श्रुवाश्चित्रं प्रवामाया शुःर्स्यार्स्यायायार्वेत् श्चितः शुःमान्द्रक्षमाश्चर्मित्रपर्दे।

५८:म्.(ब्रि:र्यारेवायवे:श्रुवाबेन्द्ववायाया)याप्रिया

न्वावा प्रान्त्र भान्ता ही में व्याक्षम स्थूय प्राप्त प्राप्त विश्वा । प्राप्त प्राप्त क्षिप्त क्षिप क्षिप्त क्षिप्त क्षिप्त क्षिप्त क्षिप क्षिप क्षिप्त क्षिप्त क्षिप्त क्षि

दर्ने 'न्या 'श्रे 'र्स्य 'श्रे 'र्स्य 'र्स्

र्नेव सेवा या प्राप्त के सेवा । सर्मेव सुस्राया प्राप्त के सेवा ।

सर्ने स्वाहित् ही स्वाही हित स्वाही हित स्वाहित स्वाहित स्वाही स्वाहित स्वाहि

ने ने नार मे अ ने न ने ना धेना।

ने त्रज्ञ त्यश्राधीत।

""""द्विषाधरार्य्यम् ।

परा श्चानिक्षात्रम्यविक्षात्रम्यविद्यात्रम्ये श्चिम् हे। श्चानिक्षात्रम्य स्थानिक्षात्रम्य स्थानिक्षात्रम्य स्थानिक्षात्रम्य स्थानिक्षात्रम्य स्थानिक स्थानिक

र्देन हे त्दी श्चिंद दे जाद त्या ।

वरी ने ने ने निम्म महीं न भी वा

र्शे प्रहेत सर्देत स्थापति वि श्रे रेषा श्री रेत रेगा प्रिये श्रु स्थापति श्रे रेषा श्री रेत रेगा प्रिये श्री स्थापति वि स्थापत प्रदेश वि स्थापत प्रदेश स्थापत प्रदेश स्थापत प्रदेश स्थापत प्रदेश स्थापत प्रदेश स्थापत प्रदेश स्थापत स्थ

र्याश्वरादे 'द्या'याद'यीश'व। । रयाश'श्रद'श्वर'व'दे 'वद्दर'हे द्या

र्रेषःस्वायायायः श्रेत्रं श्रेत्रं प्रेतः श्रेत्रं

ने छिरने ने ने ने नर्रे या भीवा।

नेश्वन्त्रप्रस्वाने विक्रिश्च विश्विष्ट्र विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्र विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य विश्वेष्ट्य

धेव'यद'वश्वय'रा'ठव'धेव'राश्रा । दे'श्चेंद'न'थे'दें'केंदा।

श्रुवायम् हो न्यम् तुष्यायाधीत्।।

धेःर्रेयःर्देवः प्रत्यः प्राधेवः प्रत्यः स्वाधः विष्ण्यः प्राधेवः प्रत्यः स्वाधः प्रतः स्वाधः प्रतः स्वाधः प्रतः स्वाधः प्रतः स्वाधः स

ने वर्षान्य निष्य सम्बद्धाः

गयाने श्रीमानदेश सक्त केमाधिता।

> र्नेत्र सर्द्ध र स्था उत् र श्री : इस स्य स्था । सर्द्ध र सारा ने : सा वया श्री र : दशू र ।

यरम् र्रेन में निर्मेन भ्राप्त में मुन्म में निर्मे में निर्मेश में मिल में मि

यदी'सर्वेद'र्वेश'वेश'त्र्यात्

ने स्था श्रुवा हो न स्थित स्थ

कुः सळव नार में साधे देया के देव रे साम से देव से साम के साम का के साम के साम

दे:न्यायवेषःयःयःयहेवःवश्रा

न्वरः सेंविः अर्देवः शुअः न्दः श्रीः रेवः श्रीः देवः नेः न्वाः वा ब्रुटः रेवः व्याः व्याः

गहेशःसः(वुःर्यःकृरःबूदःवःद्दःववायःवःबूदःयः)यःगशुसा

न्रसी (म्बर्प्ट्रिक्ट्र्या इस्याम्य न्त्रम्याम्यः) या स्था

धुःर्रेयःर्देवःयः नर्थेशः प्रदेगा बुदः यहेवः ह्रश्रः शः प्रद्राना ने श्रः प्रदेश क्षः प्रदेश व्यायः प्रदेश व्यायः

५८:में (ब्रे:र्वार्वेदायान्वेद्द्र्यान्वेदान्वेदान्वान्या)दे

ने भी श्रुम्ते निमा के निमा

ने 'प्यतः यावव 'त्यावः विवा यो 'श्रेवा । सर्व 'श्रुस' श्रें र 'श्रेव 'श्रुस' श्रेव । । ने 'प्येव' ने 'वे 'यन या 'श्रेन 'प्येवा ।

गहिरामा (हेरामाने व्याप्ते याचित्व वित्त हिराहरा मान्ति वाष्ट्र याचा वित्त वित

र्श्वःसंनिधिःस्याधिःन्वः यो न्यायायायाः न्यायायाः न्यायाः स्वायायायाः स्वायायायाः न्यायाः स्वायायायाः स्वायायायाः स्वायायायाः न्यायाः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

नेश्वन्त्रस्य श्रीतः श्री नावितः सेत्। । नेश्वन्तः श्रीतः नामावितः सेत्। । नेरः प्यतः नहतः नायवितः सेतः श्रीतः ने। ।

ने ने निर्मा के निर्माणिया

क्रॅंब-र्स-लेबानवे ह्या शुप्दें दायादे त्यवदार दा श्रीदाववे सर्देव शुअ'ने ह्र अ'ग्वित'त्'पॅन'स'अ'पेत'हे। अर्देत'शुअ'नेवे'हअअ'शुःश्चित्त्त्रुः इसमान्तरसेन्यरम्यान्यनेसन्देश्वर नेसन् र्वेनर्सन्दर्भेष्ट्रेत सर्दिरशुस्रादरानेशायायावर्द्वेशायदेगा बुरावहेदाह्रशाया प्राप्ता र्षेर्प्यस्थित्यम् निम्प्यम् द्वीर्भेषार्मेत्यः वह्नप्यवे हेर्याप्ते न्याः सर्ह्यः सरायह्याः सर्वे श्रीरा ने सात्रा श्रेष्यहे वासर्वे स्थाने हे । क्रॅंशच्या नेशम्मरामे इशहिर्या बुराध्यार् प्रायाना धेराहे। दे गहेराम बुद पहें व मी प्रेंग प्रेंग मह लेग । इस मा प्रेंग से प्रेंग में प्रेंग

না ধ্রুমামা (दे वा वनावान श्रूमाना) दे।

दें ता रदानी दें तें श्रिटाने शरीन शामिश श्री हैं तारी श्री दाने शामिना हेता वः म्यायायः सं अभियायः सम् स्यूनः र्रे वि वा

> ने भी निर्देश ने श्रें श्रेंग्राश भी ना। रदःनविवाष्ट्रस्यासुःश्रीदानवदःदे।। ररकोर्देर्ने श्रुरश्चरश्चर। र्शेर्शियायार्श्वेद्राचराय्वेदा।

र्शे प्रहें व सर्व शुसरे पी रम्मी में में शुम्यम शुम्यम

र्सेवासःश्चितः नरः ग्रवासः नितः स्रूतः नः वातः धितः सः ववावः नः सेतः है।

Ž.

र्देन श्रॅन्से स्टाइन श्री अयम् स्टाइन वार्यायाय स्त्रीत हैन स्वास्त्र स्त्री स्वास्त्र स्त्रीत स्वास्त्र स्वास्त्र

है 'क्ष्रेस' ने 'थे 'यद्या' है द 'छे स् । या श्रयः छे द 'स्या हु 'या श्रयः या श्रयः या । स्ट 'यो 'टें 'या श्रयः छे द 'यर्चे द । ।

श्चित्रं शेर्क्ष अवत् मरामें में में माया हो ने प्रत्ये होता ने माया हो ने प्रत्ये होता हो स्था हे स्था है स्

ने भूर र्ह्में नित्र या रिया रहत थिता। ने भी रिया हार्ने व या विवासी।

क्रॅंन्जुक्रेंन्जुन्यवन्यरन्गय।

 रु: र्श्वरं सं अर्देव स्थान प्राप्त प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्य

यहिरामा (देरक्ष्य प्रकार के मास्य प्रकार)दी

ग्राबुदःविद्देवःर्देवःग्रावव्यः सेदःवः स्वायशः सः व्यः श्री सः सविः यदः वः व वर्स्रेवः सेः वुरुषः सदः सूदः यः वदेः हेः क्षूदः वेः वा

> रेगा ग्रु रेगा ग्रेन स्थाय सेन। । भू से ग्रु रेगा ग्रु र यही न स्था श्रु र यही । यह के र में ग्रु र यही न स्था श्रु र यही । सक्त हे न स्था स्था र यह न स्था श्रु र यह ।।

र्देन्द्रस्यर्भरंतेषाः ग्रुंद्रेषाः ग्रुंद्रश्चरः वित्रावितः स्रेत्रायः स्रित्रः स्रित् स्रित्रः स्रि

है स्नूर तिव्याप्य सर्वेद सुराया

ने ख्रिम् प्यमे स्थायावया श्रुश्याया । ने क्षे या ज्ञुम् प्यमे विषया श्रुश्याया । सळव के ने प्यमे स्थायावया श्रुश्याया ।

ने खूर धिर मंदे थे के खूर में ग्रा बुर ग्रा में कूर में खूर में खूर में के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ में स्वार्थ में स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ में स्वर्थ में स्व

न्नर्सितः अर्देव सुम्राची मानुर विद्या न्याया सुम्य विद्या न्याया सुम्य विद्या स्वाया स्वया स्वाया स्वाया

गशुस्य (रहःदेवा प्रवस्थ सुर सुन सः)दे

नेश्वान्यव्यक्षः स्वान्येन् । । स्वान्यक्ष्यं व्यक्षः स्वान्यक्ष्यं । । स्वान्यक्ष्यं । । स्वान्यक्ष्यं । । स्वान्यक्ष्यं । ।

देशवा स्टारेगांवज्ञश्रायीत्वर्यसंवर्दित्रीयांश्राहे। देवाणविवर्धीः रेगाज्ञासेत्रप्रदेशक्षेत्रा

ग्वरम्थाम्यम्यम्। ग्रीयनेयामी प्रमान्यम्। प्रमानियम्

नेश्वा इस्रिम्यायिः श्रुव्यायि । श्री द्रम्यायावयाः विश्वास्त्री । श्री द्रम्यायावयाः विश्वास्त्री श्री प्रम्यायाय्याः विश्वास्त्री । स्रिम्यावावयाः विश्वास्त्री श्री प्रम्यायाय्याः विश्वास्त्री । स्रिम्यायावयाः विश्वास्त्री । स्रिम्यायाव्यायाः स्त्री । स्रिम्यायां । स्रिम्यायां । स्त्री स्रिम्यायां । स्त्री प्रम्यायां । स्त्री प्रम्यायं । स्त्री प्रम्यायं । स्त्री प्रम्यायं । स्त्री प्रम्यायं ।

नेश्वा रण्यो नियमिष्ठित्तु शुर्मिष्ठे स्थित्ते स्थिते स्थित

महिरान्ति । (ब्रिक्ति स्वास्त्र वास्त्र वास्त्

ह्याश्चार्या देशः श्वायायायायः अवस्त्राच्या हिः स्वायाय्याय्याय्यायः स्वायाय्यायः विश्वायाय्यायः स्वायाय्यायः विश्वायायः स्वायायः स्वयायः स्वयः स्वयायः स्वयायः स्वयः स्वयः

५८.स. (ब्रे.स्व.स्वायाययाय्यायाययाः)

ग्राय हे भ्रे स्या श्रीत शुर व्या

हेशनः डे प्पॅर्

ण्याने। धुःर्रवाचुर्न्द्रमात्रुर्न्द्रमात्रुर्न्द्रमात्रुर्न्द्रमात्र्या

.....रे.लर.सेन्।

धे:र्स्य:र्न्न्न्त्रं रहे:र्युर्म्। यर्ने:हेन्:ग्रेश्वेश्वे:र्रें र्युर्म्।

धुःर्रवाशुःर्रेद्वां बुर्द्वार् दुः दुः शुक्षः दुः शुक्रः विष्णः शुक्रः देशः शुक्रः विष्णः शुक्षः विष्णः शुक्रः विष्णः शुक्रः विष्णः शुक्रः विष्णः शुक्षः व

गयाने र्हे दे दे द्वा

यायाहे न्यर सेवे हीं हीं सेवा ही हैं व रेवे हैं से स्वाप्त हता हैं स्वाप्त हता हैं से स्वाप्त हता हैं से सेवा मी ले ला

इस्रामा ह्रेस्य लुग्य स्व उत्तर देशी । देशे देशे प्रस्था ग्रित्य स्व विस्था । वदे देशे दश्र प्रस्थ से ग्रम्थ से श्री ।

ग्रीश्चर्त्वात्त्र्यं। यात्रव्रक्षयाश्चर्यायाद्यीश्वर्याव्याविशः

५८:सॅ (क्ष्माईकः)दे।

र्श्वास्त्र स्वरावि र्श्वास्ति स्वरावि र्श्वास्त्र स्वरावि राज्य स्वराव राज्य स्वरावि राज्य स्वरावि राज्य स्वरावि राज्य स्वरावि राज्य स

माने अप्ता (महत्र क्षेम् अक्ष्य मान्मे अप्या निष्य माने अप्य निष्य माने अपय निष्य माने अप्य निष्य माने अपय निष्य माने अपय निष्य माने अप्य निष्य माने अप्य निष

र्श्व देव देव के विकास के स्थान के स्थ

স্ট্রশ্ন (ক্র্ন্স্র্র্র্র্র্র্র্র্র্র্

ह्या श्वाप्त प्राप्त विष्य प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्

देशन् र्वेदःसँ द्रियाश्वरते हैं। र्वेदःदेन्द्रियाश्वर्धः द्रियाश्वर्धः द्रियः द्रियाश्वर्धः द्रियः द्रियः द्रियः द्रियाश्वर्धः द्रियः द्रियः

सहस्राज्ञतः हे रह्मा विवाधित पात्र स्वाधित । सहस्राज्ञता हे प्रस्ति क्षेत्र स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित

> यदेर प्रयाद विया वे प्रयाद विया यो । र्रा श्रेर श्रेर

ने भ्रेन वाडेवा या कुषा वाडेश पेना

यार श्रेर ने श्रूर श्रुर श्रुर या प्राप्त के या। इव स्था प्रदेश भी स्था सामा के या। श्रुर प्राप्त के देश स्था सामा के या।

नेश्वास्ते ह्र श्वा विवा त्या वा व्या त्या विद्या त्या विद्या वि

য়ूँगःन्सॅनःश्वानगरः त्र्यां यने प्यम् कर्यां यात्र स्वान्य यात्र स्वान्य यात्र स्वान्य यात्र स्वान्य यात्र स्व न्रेस्य यात्र स्वान्य स्वान्य

यादाके म्हार स्वास्त्र स्

यादानी कें। र्वें द्रां ह्र स्वाप्त स्वाप्त हैं त्रां हें त्र हें त्र

र्वे विर्वेशम्भः में में विर्वेशम्भः में विर्वेशम् के विर्वेशम् विर्व

 विष्याम्याने सूर विवावेयामर्वे।

यायाने प्रदेश्य प्रयाप्त प्रदेश स्थाप्त । । स्थाप्त प्रयाप्त स्थाप्त प्रयाप्त स्थाप्त प्रयाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स

নাপ্তমান (ড়৴৻৽য়য়৽য়য়য়য়য়য়৽)য়৽য়ঢ়৾য়

ळंट्र त्र्वर्गः श्री ह्र स्थापाविषाः प्राप्ति श्री हे स्था श्री हे त्र से द्रा श्री ह्र स्थापाविषाः हे हि द्रा श्री ह्र स्थापाविषाः

५८:म्.(क्ष्यं त्व्यं यः क्षेत्रं व्यव्याः)यः यष्ट्रेया

श्चितिः र्देवः द्रा धवः ययाः मीः र्देवः र्हे।

८८.स्.(क्वेक्ट्रक्) वा ना शुमा

ग्रान्यमार्थेमान्ता हे क्षेत्रावर्षेमान्ता स्वतन्त्र्रा

८८:स्.(यटालकावस्थानः)स्

इस्यावियायदी यहिस्यस्धिः र्याजीः र्वेद्यायायायस्य स्थितः इस्यावियायदी यहिस्यस्थिः

गहेशमः(इल्इम्प्र्यंगमः)दे।

गशुस्रासः(सम्बद्धन्तः)द्री

यत्रश्रात्रायान्ध्रन्यान्त्रा माल्यान्चायान्ध्रन्याम्ध्रेशान्ध्रेशान्ध्रेशान्ध्रायान्ध्रेशान्ध्रायान्ध्रेशान्ध्र

५८:सॅ (व्यक्षातुःवान्यन्य)दे।

यश्चित्राचा के त्या विष्णा के त्या विष्णा के त्या विष्णा के त्या विष्णा के त्या के त्

श्चित्रं से न्त्रं निष्ण स्टार्स् के न्यू स्टार्स् निष्ण स्टार्स् से स्टार्स् निष्ण स्टार्स स्टार्स निष्ण स्टार्स स्टार

नेश्वा र्वेष्ट्रविश्वाश्चित्रः वित्रः स्वायाय दिः ह्या पाववः सेवायाय स्वित्ते वित्रः वित्रं वित्रः वित्रः

ने त्यून नविवानात्वा विश्वास्त में श्री । तुम नविवानी स्थ्रूस नु निश्वस्त स्थानी स्थ्रूस निश्चस स्थानी स्थ्री निश्चस स्थानी स्थ्रूस स्थानी स्थ्रूस स्थानी स्थ्रूस स्थ्रूस स्थानी स्थ्रूस स्थानी स्थ्रूस स्थानी स्थ्रूस स्थ्यूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्यूस स्थ्रूस स्थ्रूस स्थ्यूस स्थ्रूस स्थ्यूस स्थ्

गणि हे ग्वाहित्यि है स्थान हैं प्रहें व है दे है दे स्थान है जे हैं व हैं व से प्रिया है प्रहें व स्थान हैं प्रहें व स्थान हैं

नेश्वा इय्यावनाम्य्यस्ये म्व्राह्म स्थित् स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

স্ট্রিশ্ব (অর অন্ ন্ ন্রি) বি

यायाने। श्रीः स्थानित्राचित्र

रम्ख्यायायाधीःर्ययाधीःर्विनायावयाद्यम्भूनानवेदायायाधिवाने।

सर्ने स्थे प्रायाप्त्रास्त्र स्वर्ण विश्व प्रति । यद्दान्तर स्वर्ण विश्व प्याप्ति । यद्दान्तर स्वर्ण विश्व प्रति । यद्दान्तर स्वर्य । यद्दान्तर स्वर्ण विश्व प्रति । यद्दान्तर स्वर्ण विश्व प्रति । यद्दान्तर स्वर्ण विश

श्चितः द्वित्र क्षेत्र स्वर्धिता वीत्र वात्र विश्वेतः द्वित् क्षेत्र स्वर्धित विश्वेतः विश्व

त्र्यावनाम्यस्य स्तर्ति इस्र से नास्ति विदेशस्य स्थिति स्तर्ति । विद्यास्तर्ति । विद्यास्तर्त

श्ची स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र विस्त्र स्वास्त्र स्

रटाख्यायाची यर्ने से प्रयासि में प्राप्त म

मालियान्त्र-निकासियां के स्वर्धा स्टामी मित्रा हित्त् मुक्त स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर

यत्रश्रात्रुत्रञ्जूत्रायाद्या देखाः हेत्याः ह्याः व्यवयात्रायाद्यात्र वर्षा

> प्रस्थि (व्ययम् प्रमान) है। है। स्था देव के प्याप्त प्रमान । है। क्षेत्र क्ष्य श्रास्त्र के देव । है। क्ष्र क्ष्य श्रास्त्र के देव । है श्रास्त्र क्ष्य श्रास्त्र के देव ।

याधीव पुरायदे यह या श्रीव से ही है।

नन्गिःकेन्द्रभून्यः अप्येन्यः व्या ने क्षुः व क्षेत्रः व न्याः व व क्षेत्रः व क्षेत्रः

দ্রমার্থেদ্

ने क्ष्माप्रशाह्मर राजा क्रीं व के न में ले व प्या

""" गहिरासें प्रा

यन्नायम् वे श्रिम् शेष्युम्।

र्श्व से त्या ने वा पहें वा के वा क

यासर्वेदानश्चित्रसारी मासे वाली वा

यः अर्वेदः नः भीतः हुर्भेना शुरुश्चीः यथः शुः द्वदः वी यः नादः रुदः रेः रेः नश्चेनयः पवेः श्चेरा रेः रेयः निहेयः नाः अर्वेदः नः श्चेतः वें ना

> र्नेत्रश्ची: प्रवर्गिशः हेंग्राशः श्चित्रः । रु: स्रवे: यर्गाः हेर् प्रदेशारे व्या

याडेया'यी'यन्या'तु'अर्थेन्'छेन्'या। याअर्थेन्'यो'ते'रे'त्थ्रम्'या। र्वेव'यर्थेन्'छेन्'यर्'य्युर्'य'थेवा।

है। र्स्या ही द्री वा शा हो वा हो। र्स्य हो। या अर्थ र न प्रत्य हो। या अर्थ र न र न र न र हो। या अर्थ र न र न र

माया हे । वर्ते न न न से । वर्ते न न मा

श्रूरः न हैं गाणि व दें व कें से वा

ने स्वत्र दक्के सुर्याय र्शेवार्य प्रमा

यक्षयः श्रु र ये र से यया ये विष्ठा

न्नरः नेश्वायः वर्देन् से वर्देन् से श्रूरः नः सः धेतः मरः त्रया न्नरः

भेशने प्ययम् सूर्या प्रमानि स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

ने श्वेन श्वे में स्वायावया श्वायय । । त्रा श्वेन श्व

श्चितः प्रवितः व्याप्तः वित्रः वित्य

देशन् हे स्वर्स्त्र्वा है स्वर्ध्व निर्मान है स्वर्ध्व निर्मान है स्वर्धि स्वर्ध स्वर्य स्वर्

विवर्ष्ट्रम् वेर्यास्त्रिया विश्वर्ष्या विश्वर्ष्या विश्वर्ष्या विश्वर्ष्य विश्वर्य विश्वर्ष्य विश्वर्ष्य विश्वर्ष्य विश्वर्ष्य विश्वर्ष्य विश्वर्य विश्वर्य विश्वर्ष्य विश्वर्य विश्वयय विष्यय विष्यय विश्वयय विष्यय विष्यय विष्यय विष्यय विष्यय विष

ग्राह्मसळ्दासाधिवादा देवादेवायहरूर्यात्र्यात्रा

यार छिर है 'क्ष्र रेव यन या दे।। ले अ 'या याव अ 'या है 'क्ष्य द्या। यह 'वे 'हे 'क्ष्य याव अ 'ओ' ले अ।। हे अ 'छे ह 'यह या 'छे ह 'हे या या भी व।।

र्राणी निर्मा हिन्दु स्थित से से स्थान स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्

ने छिरने छेर ने बर्ने वा वर्ने ना।

वर्दे सुर-र्देव निम्मूर साधिवा।

नेश्व र्मा स्ट्रिंग्श्व स्ट्रिंग्श्व स्ट्रिंग्य स्ट्रि

गहेशमा (क्रन्य्य्य प्राया संस्थान सूराना) दे।

या तर्रामा स्ट्रिंग स्ट्रिंग

र्नेत्रः व्हेंचा ने 'धी 'यन मा 'हेन' ही मा । मन में मा 'धी मा 'यन मा 'हेन' ही मा । में में में खी मा 'यन मा ही मा । में में में खी मा अपने मा कि मा में में मा अपने मा ।

र्शेष्ट्रेव अर्देव शुअ श्री अर्द्द भी नित्र मा है द र शुरु र परि र्शेव से

देनाःमा । हे अग्रीः हेंनाःम अग्रीः देवः में नियाः मान्यः वित्रः स्वाः में नियाः मान्यः स्वरः स्

> र्रामि दिं तें प्रीत्यात्वा । र्रामि व्याप्यात्वा स्थान्यात्वा । र्रामि क्षित्र स्थान्ते । स्थान्ते स्थान्ते । स्थान्ते स्थान्ते । स्थान्ते स्थान्ते । स्थान्ते स्थान्ते । स्थान

श्रुं प्रदेश से में प्राप्त के स्वार्थ के से स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्थ के

देश्या हिन्द्र त्या हिन्द्र व्या हिन्द्र व्

বাস্ত্রসমে (বাল্কান্ত্রকে স্থ্রস্কা) বি

र्श्वा विश्वा व

हे सूर इयायायमाय विमासूर।

हे ख़र क्षे प्रति श्री के श्र

नेवा ।

ने प्रमास्याम् से भी मार्थे।

गहिरामा (देक्षेत्रम्य व्यवस्य विष्य व्यवस्य विषय विषय

स्ट्रिन्द्र्यायाश्च्रात्व्य प्रत्य स्ट्रिन्द्र्य स्ट्रिन्द्र्य प्रत्य स्ट्रिन्द्र्य स

५६ में (कंदायन्य ग्री क्या पानवा है क्ष्र स्थूद न पति व प्योत पा) दे।

र्त्ते नित्राम्यान्य स्थान्य स

सर्वर्यः से व्यव्याः स्वर्यः से व्यव्याः स्वर्यः से व्यव्याः स्वर्यः से व्यव्याः स्वर्यः स्वर

द्येर्यं व्याच्यात्र व्याच्यात्य व्याच्यात्य व्याच्यात्य व्याच्याच्यात्र व्याच्याच्यात्य व्याच्याच्याच्याच्यायः व्याच्यायः व्याच्यायः व्याच्यायः व्या

न्वेरःवं न्वरंशं श्वां शंक्षण्यः श्वां या श्वेराः विश्वं न्याः स्थाः विश्वः न्याः श्वां न्याः विश्वः वि

ने न्या सन्सन् सेया उत् ग्रीया।

देग्ध्रस्यर्भेद्दा । द्रमेस्य विष्यास्त्रस्य । द्रमेस्य विषयास्त्रस्य । कुर्त्त : केव्यं संस्थ्रस्य स्वित् ।

म्बर्धित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधितः स्वा

कायन्। देश्वरायां यहेश्वर्यान्य स्वाध्यायां स्वाध्याय

महिश्रास्त्र प्रस्ति स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त स्

त्वरः वेशः ग्रे द्र्यः र्यं विश्व विष्य विश्व व

रदःचित्रःसर्वेदःसेद्रःसेद्रःसित्रःगरेगाःसेत्।।

र्त्तुः स्थान्य स्थान

यदादे के अंख्वा विष्ठवा हिन्दि स्वाया या विषा वी स्वाया विष्वा वी स्वाया विष्ठवा वी स्वाया विष्ठवा वी स्वाया विष्ठवा विष्ठवा स्वाया विष्ठवा विष्ठवा स्वाया विष्ठवा विष्ठवा स्वाया विष्ठवा विष

यार मी श्रान्देश से 'इस न हान वा । ने 'हेन' रु' व' ने 'ने स्था भी । यार मी 'ही र व' ने 'ने मा ग्या ।

गठिग'न्र-'न् अदे'र्र-'नविन'सेन्।

ग्राहितः देगांग्राह्म अप्तान्ति काने प्राण्यां के अप्तान्ति विकास वितास विकास वितास विकास विकास

कें अयम्बन्य सेन्य सेन्य स्था । विश्व स्था सेन्य सेन्य

विवास्त्रायहियाःहेवायान्यायो ।

धुःर्रवाचुःर्वन्यायवियामः श्रुः याश्राप्तव्यन् यास्या यनेवाह्यम् स्थाः श्रुः यास्याः स्थाः याद्याः स्थाः स्थाः

गठिगागुरासर्वेदानासे दार्धिरार्दे।

त्रामहिरामराधेः क्र्रिं प्रमाधेमा ग्राम्य वर्षे प्रमाधे स्वर्षे स्वरं स्वरं

वद्यो नश्चद्यायम् । देने हे मान्यम् ज्ञूद्रान्यम् । द्रान्य विद्या के मान्यम् ज्ञूद्रान्यम् । स्रान्य उद्या वद्ये वद्या के द्रान्यम् । स्राम्य उद्या वद्ये वद्या के द्रान्यम् । स्राम्य अस्त व्यवद्ये वद्या के द्रान्यम् ।

क्रिंश से द 'रव 'रेव 'य' से वास 'विद्या

क्रिंशस्त्रव्यास्त्रव्यात्रात्रव्यात्रात्रें त्रात्रेतरार्धेत्राधेत्र बॅर्ग ग्राह्म द्वारी देवारी हेवर्र विषय तर्र क्षेत्र सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध स उदाहितायानहिंदायाचेताते। देखेतायात्रिकारायाच्यायुरा नवे रूट नवे व में अपने में व के लेंगा हु सूट न उव धेव सवे में में रूप हो राष्ट्र वरमी ग्रा बुर प्रदेश ह्या घर ५५५५ वेव प्रवे प्रदेश प्रवेश की या कुर प्रक्षित याययात्तुरावापाराने उयाग्रीयापात्तुरावहिताह्यात्राप्तरान्ते वितायाने प्येता मित्रे श्रीम् कें भास्र मुद्रामा सर्वे माना स्थान स्थित स्थित स्थान स्था र्यःरेयः उत्यः भ्रुः ११ तः श्रेयायः धरः श्रूरः यः यवितः द्या

ग्रुअ'रा'(क्यादेवा'यदे ळं न त्व्य था तबन प्यम् व क्ष्र्याया) दे

ने या क्रें के प्लेंद्रशा वर्डिन या। वहें व परे व स्थापम वरें न परे | ने भी नित्रमा हैन ही स नित्रमा सेवा। ने श्रेमने भी श्रम श्री ने भी ना

ने या ग्रा बुदानवे इसामवे हैं । धेंद्र साम् मु ग्रा के दिन माने हमा मर वर्देन साने के अरुवा नन्याने याने वास्यान धीवाने। ने हिन् ही इसामर नवगः ग्रः भे नन्गः हेन् भे वा स्वे श्वे न् विन् स्ट स्वा ने वे श्वू न ग्वेन भे वा ने नेवे वहेंगा हो ना धेवा भाने वे छिना

न्येर्न्द्रिन्कग्राश्चिम्राश्चिर्म्यविद्या

रद्दः ते 'गुत्र' शुरु द्वा । विष्य' शुरु द्वा शुरु द्वा । विषय' । विषय' शुरु द्वा । विषय' । विषय

ने खद्म हस्य श्रीम वित्व वित्

त्वर्यंत्रिम्।
तव्वर्यंत्रिम्।
तव्वर्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्वर्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रिम्यंत्रि

यद्मायायहित्यये इस्याया वेस्या । व्याद्मायायहित्यये प्रत्याकेत् दे । । स्राचित्र स्थाय केस्य स्थाय विस्या । स्राच्या केस्य स्थाय विस्या ।

यदेरःस्टःसेषाःव्यक्षःस्ट्रः स्वरःस्वरः क्ष्रिं व्यक्षःस्ट्रः । क्ष्रिं व्यक्षःस्ट्रः विकार्यः विकारः विकार

स्यान्तेन्। स्थान्त्रान्यः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त

त्रे र र र रेग् , हु अर्ळे व व त्य अ शु शु र प्रे त अर्ळ व गि वि अ थे व त्य व त्य के त्य के

महिश्रामाळ्दात्र्यश्चीः इस्याम्बमादे प्रमायवद्गायम् मङ्गुनायाय महिश्रा र्ज्ञा क्षुं व्यामहिश्राञ्चा स्वयाये से माश्राप्य प्रमाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया न्दःसः (ब्रिंकुषःगिष्ठेशःश्चुनःमवेःदेग्रशःमः)यः पादेश

ण्याक्षेत्रादे थि क्षेत्राया थेत्रा वेत्रायदे देवात्रायत्रायत्रा । द्रुत्रा श्रेत्रा द्रुत्रायत्रा ग्राप्त स्ट्री वेत्रायदे देवात्रायत्रा वर्षुत यदे ।

न्तः स्ति (श्वान्वेयाने श्वेयाना वेयाना नेयाना मुनाना) या न्युस

र्ट्रा श्रुवः छेट् छे: देवाशः यावव्यः वश्रुवः याद्र्। विश्वः श्रः स्वरः वश्रुवः यः व्य

५८:स्.(१्व.विश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

र्श्विम् स्त्रात्त्री मिल्टाया महेत्र प्रिये स्वाया प्रमाय स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व

५८.स. (ब्रियामाश्चरः वो याबिरः वा या हेव. राष्ट्रः स्यामारा) वा या श्वा

र्श्वन्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य प्रमानिक स्वर्ध्य स्वर्ध स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्ये स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वर्यः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

५८:सॅ (ब्रिंग्यास्त्राराची मालुराया नहेनान्या पळ रामाचे त्राचे त्रा

म्बर्द्ध्यः स्ट्रा ने प्रत्यं स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

न्दःस्तः (व्यव्दः द्वः न्दः श्वः व्यवः विश्वः विश्यः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः

> द्यायम् विवास्य विवास्य

इस्रायम्बाद्याद्यायाः सुव्याची ।

धैःर्रवाशीःग्राह्मराष्ट्रवाह्मराष्ट्रवाह्मराध्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्र्यः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्यः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्यः विश्वाद्यात

 न्येर्यं वश्याद्र द्र्यायार्थं व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्यायः व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्याय्यं व्यायं व्याय्यं व्य

ने त्यम्भागवित् न्द्राध्यान्यान्।। ने क्षमाण्याक्षेत्राध्येत्राव्यक्ष्याः।। ने क्षमाण्याक्षमान्।। ने क्षमाण्याक्षमान्।।

म्बुर्ध्याने त्यक्षाम् विष्ट्र न्तर्धित् न्तर्धित क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र क्षेत्र न्तर्धित क्षेत्र क्षेत

५८:सॅ.(२६४०)

र्नेन-नरः स्वाधिक से समायानी।

र्देव इस से द सर देवा राज परा

म्बर्ग्न्य प्रत्य प्रत

वन्यायवे में बादी विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

कुंत्याचित्रशास्त्र स्वान्युनाराधित्।

यन्त्रासंते ने त्यक्षेत्रासंते न् त्यक्षेत्रासंते न् त्यक्षेत्रासंते ने त्यक्षेत्रासंते

गहेशपा(हिंद्धर)याग्रुआ

इवःयशःरेगाशःरेवःयाववःयहेवःयःर्गाम थ्वःश्वेवःयर् छेनः यहेवःयःर्गाम छेःरेवःयर्याववःयहेवःयःर्गाम थ्वःश्वेवःयर् छेनः

52.5. (र्व.संश्र. स्वाश स्वाश स्वाववर वहिव.स.र्वावा स.)

र्शे.श्रेग्राश्चर्त्राच्चराष्ट्रीत्।

ने ख्रव सेव सेवाय में व साधिवा।

मिर्नियान्त्रामित्रे के अरुद्या नेया अर्ने दायां विदायां ब्रामित्र में विद्या हिंदी हैं।

रैगार्यारेयर से ह्या से व्यूर विरा।

हगानवराहे सुराक्चेत्र छेत्र धेता।

रेग्रश्रेत्यंविदानेतर्धिः ह्याः व्या य्यायः यात्रिः व्यायिः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय

गहिरामा (इत्सेव वर् हो न वह का मान्य नि

श्रीटाश्चाश्चार्यः वि नगायाः विवः हि ।

> कुष्यति देव स्वास्थान स्वास्थान । वर्ते न स्वास्थान स्वास्थान । कुष्यति स्वास्थान स्वास्थान ।

र्देव श्रे वुरुष य श्रुव य सेवा।

 यदेः लेश्वास्त्र स्त्रीम् नेमात्रया वर्षेत्र पार्ट स्वास्त्र स्वा

इस्राधारित वह ते क्षेत्र के स्वाधार के क्षेत्र के क्षे

त्रवार् ने ते के क्षेत्र प्या की क्षेत्र प्या निष्य के कि न्या के कि न्या कि

ने 'के' सेन 'हिन 'ने प्रथा सेना । ने 'क्षेत्र हिन 'प्रया ने प्रया हिन हिन 'हिन 'त्र क्षेत्र 'हें। । यन सम्मान के सम्मान हिन हिन हिन 'त्र क्षेत्र 'हें । सम्मान हिन हिन 'हिन 'त्र क्षेत्र हिन 'त्र क्षेत्र हिन 'हें । सम्मान हिन हिन 'हें ने 'त्र क्षेत्र हिन 'त्र क्षेत्र क्षेत्र हिन 'त्र क्षेत्र हिन सर्वि श्री मा बुर र्वे व रे त्या मा बुर र्वे व श्री स्था श्री स्था स्था से त्या से त्या

क्यमने ने ने ने न शे भेवा।

ग्रयायविः इसायसान्ने वास्त्रिमः द्वी।

क्यायाने ने मान्या

इव्राचित्रं इस्राचा देवी इव्राचायश इस्राचा द्वा प्रिक्षा देवी इव्राचायश इस्राचा द्वा प्रिक्ष देवी विष्

गावन ग्री अरे निवेद हैं ग्राय प्रमायगुरा।

त्राध्याने स्वावस्थानिक स्वावस्य स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्य स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स्वावस्थानिक स

नन्यात्यःह्याः हुःवर्श्वेत्यःधीत्रः व्या

भ्रेशःतुः नद्याः हेद्राविः वदेः क्युद्राः यः ह्याः हुः धुवः खुवः उवः दुः द्रवेषः नः भ्रेशः त्याव्य क्येशः हेर्गशः ने व्या

नर्हेन्'ग्ररःहेन्य्यायरःश्चे'त्युरःरे|

र्देन इवं मदे इसम्प्रित्ते हैं मुद्दे स्थाय द्वे स्थाय दे से स

रे रे र्या र्र यही या व वि ।

प्रवाधिकात्र्यात्र्यात्र्याः विष्याः विषयः विषय

सळस्य अः श्चित्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्

कृत्वः कर्रायः त्य्युरः र्रा।

बिक्रायः विद्याने विद्यान

गायाने त्रदायशादे गाठिया परा।

श्रुत् भेंत्र

नायाने खायाने नाहे साह्य माना नायाने नाहे साना हेना

धरः श्रुत् प्रदेशा हेव व प्पेन रें ले वा

तकत्रसंस्याहे सूर्यस्य ने स्वित्र स्वार्धित हैं स्वार्धित स्वार्य स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित

इस्रायहरू प्रयाप्त इस्रायहरू प्रायम देव प्रमुप्त विष्ठ । विष्ठ स्थायहरू प्रायम देव प्रमुप्त विष्ठ । विष्ठ स्थायहरू प्रायम विष्ठ । विष्ठ स्थायहरू प्रायम विष्ठ स्थायहरू । विष्ठ स्थायहरू प्रायम विष्ठ स्थायहरू । विष्ठ स्यायहरू । विष्ठ स्थायहरू । व

ध्यानेशनेशनेशन्य विश्वन्य विश्वय विष

हमराश्चितःहमः नियाने प्यतः दी। कः पहिरायः देः नहेतः शुरः न।।

इस्रान्यान्त्रमान्यान्यान्य । विद्यान्यान्य । विद्यान्यान्य । विद्यान्य । विद्

नेतः नेतः नेतः नेतः स्वाधिकः स्वधः स्वाधिकः स्व

यालवर्राने सम्भागवन्यामा

महिस्रायः (क्यायेन्यः भित्रायः भित्रा वित्रायः भित्रा वित्रायः भित्रा । वित्रायः नित्रायः नित्रायः भित्रा । वित्रायः नित्रायः नि

कु: ५८: ख्रुव: डेवा वहें व: यर वशुरा

ने भ्रिम्ह अविदाय र्श्विमश्रम्।

बेर्परम्युवायान्त्रवाधीयम्।

द्युर्ग्यर्विष्यं सें व्याप्य प्रमानिक स्थाप्य स्थाप स्थाप्य स्थाप स्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य

> ह्यन्यस्यान्यस्य नेस्यः स्वी। देवः न्यः यस्य प्याव्यस्य स्वी। यदः नः यस्य प्याव्यस्य स्वी। सक्षे सः स्वाय्यस्य स्वीः स्वी नः स्वी नः स्वी।

न्दःसेंदिःस्दःनविवःगिरुशःसेवःव।।

गिरुशःसदेःस्दःनविवःगिरुशःसेवःवः।।

इसःगिवशःदेशःस्यःदिवःसःधी।।

सेस्रशःश्रेशःदिश्चःस्यःदिवःसःधी।।

सेस्रशःश्रेशःदिश्चःस्यःदिश्चःसःधीव।।

सेस्रशःश्रेशःयःइवःसेशःदिःस्दःविवःदिःवःहवःहसःगिरुगः

गशुस्रामः (र्व्यम्भूषः)त्री

ने भ्रीत्र श्रीत्र श्र

यत्व'व'गव्य'यर'शुर'यदे'र्ह्ये।

र्देवाश्चीयानाउवा।

र्त्ते यहिरायरा वे प्रधीयारा यस प्रधीया

देशवा इवःलेशःशः सद्वान्यावशः सरः वशुरः विदेश्वः विद्यान्यः विश्वः विद्यान्यः विद्यान्यः

स्थानाश्चर नायशान्त्र निष्ठित्ता धुरान्त स्थान स्थान

र्ह्में स्थानिक स्थान

५८:द्री. (ब्रि.क्षेत्वाचाद्वेशायाववारी क्षेत्रायाववारी क्षेत्रायाया विष्याया विषया व

देशःसरःक्वें द्राः द्र्यः ह्याः ह्य

इस्राम् रामेश्वर प्रमुना म्या

ध्याः श्र्रें ते र्सें ते र्सें ति स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

इस-नेश-प्रविधानस्य ज्ञानामित्रम्। सेन-प्रमानन्य सर्वान्य स्थानित्रम्। स्थानिक स्थानम्य स्थानित्रम् स्थानम्य स्थानित्रम् स्थानम्य स्थानम्य स्थानम्य स्थानम्य स्थानम्य स्थानम्य स्थानम्

नेश्वनं ने न्या व न न स्थित।

श्रीत्र न श्रीति देन ने प्रिया का स्वीत्र श्रीति स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वर्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

ने श्री मः भी शास्त्र श्री । में स्वास्त्र स्

भेशासास्त्राक्ष्यास्त्राच्या । देवा श्री मा स्वाप्ता । स्वाप्ता ।

धिः र्ने तः प्रेन् प्रेने श्रुनः चेन प्राप्त सेने प्रेने प्रिने स्थान सेने प्रेने प्र

कैंग'र्नेव'न्र'। इस'रेग'र्यते क्रेव'गशुस'रेंश'ग्राबुर'र्वार्थ। रूर'र्से (क्ष्मार्नेव')वे।

कुःमालवः न्यान्वे व्यान्यः व व्यान्यः ।

नन्द्रांदे हैं इस्य असे न्यंद्रे हैं न्यं

र्श्वेत्वत्त्र्वत्त्र्याः विष्ठ्याः विष्याः विष्ठ्याः विष्याः विष्य

म्बायाने सक्दर्भासाने साम्या ।

याय है नियम धिन धिन ग्राम हैं प्रहें के हुँ ना हैं या सिन है ना स्था सिन हैं ना सिन हैं

गहिरामा (इसम्बन्धित मुक्तामा स्वास्त्र मुक्तामा स्वास्त्र मा स्वास्त्र

र्थे हैं हैर ने निवाक्षे विकाले व निवाक्षे का ने कि स्थान के निवाक के निया के निवाक के निवाक के निवाक के निवाक के निवाक के निवाक के निवाक

व्यून्यते भ्रीन्द्र । विश्वार्श्याश्चारा भ्रम्भून व्यून्य विष्या । विश्वार्श्याश्चारा । विश्वार्था । विश्वर्था । विश्वर्या । विश्वर्या । वि

र्दावा गडिगाः कवरासीः विद्याः स्त्रीत्रः स्त्रीत् । विश्वानित्रः प्राप्तः विव्यानित्रः विद्याः विश्वानित्रः व

ने दी विश्वास्त्राची ह्याची क्षेत्राची ह्याची क्षेत्राची ह्याची ह्याची

विं तें रुवा व्यन्ति विवादि स्थान्ति स्थानि स्यानि स्थानि स्

षादः सदः वी 'दे 'या श्रवा में व 'ददः ह्या वा देवा 'यदे 'क्रें व सें 'दे हें 'वहें व

म्ची प्राप्त के त्र निष्ठ म्चा के त्र प्राप्त का स्वाप्त के त्र के त्र

ह्यनः संभेदः दे। ईवः संप्ति स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स

नेश्वा श्रेमामी नगर में गन्मामित निर्मा श्रेमामित में निर्मा श्रेमामित में निर्मा नेश्वा में निर्मा में निर्म

यहिषान। (अन्यविष्क्रिन्य) प्रयुष्ण हैषा स्विष्ण से प्रयुष्ण स्विष्ण स्विष्ण स्विष्ण से प्रयुष्ण स्विष्ण से प्रयुष्ण स्विष्ण स्विष्ण

यार्चेत्यययंते सुमाञ्चे प्रा

तुःत्रास्थ्यस्यः स्वात्रात्रात्वस्य । तेःत्रदः श्चेः स्वार्त्रस्यः स्वात्रस्यः स्वात्रस्यः स्वात्रस्यः स्वात्रस्यः स्वात्रस्याः स्वात्रस्यः स्वात्रस्य

शर्में द्रायशं श्रुण्यां श्रुण्यां

ने प्यान्य मान्य ने ने ते ते ते ते ते ने ना या नि ना या ना या या ना ना नि ने ने ने ना यो ना या ना या

वायाने। ही दें त्या ही दें द्वा ये द्वा के प्रवास निष्ठा व्या स्वास निष्ठा के प्रवास निष्ठा ही त्या के प्रवास के प्

यादेशस्य (वर्षाम्याम्यामस्य वर्षान्यः भूतःयः)दी

त्राचा से स्थान से स्था से स्थान से स्

वार एक अरे अर सर हैं वा अर सर देशूरा।

यदेवः यत्र श्रीः द्वापुः त्वाप्त स्वाप्त स्वा

व्यक्षःश्वः स्ट्राच्याचे स्ट्राचे स्ट्राच्याचे स्ट्राचे स

विनाधिवार्ते। विवाही नुःश्वरः कुः धिवायः स्था नुः धाः विनाधिवार्ते। विनाधिवार्ते। विनाधिवार्ते। विन्ताः स्थान्य स्थान

शुःग्रान्त्रभूतः निर्मा श्रीत्र स्वायः प्राप्ति । या विष्ट्र स्वायः प्राप्ति । या विष्ट्र स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्य

देशवः ईन्यन्य विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्र विष

देशव र्वेषायम्द्राचमञ्चर विष्य देश्य स्था द्राय्य द्र्या द्राय क्ष्य क्

> ने 'यदर'तु 'तर श्रूद'त्र दे श्रूष्ठा । त्रवा क्ष्या श्राया श्राया श्रद्धा । श्रेद श्रूद 'त' थी 'श्रुद्धा है द' दे । । हैं वा श्रायश्रद्धा से 'हे द 'श्राथी द' दें। ।

सुविश्वर्थायं अथा वाहिवा अथा विश्वे दि देवा ही से प्रे हे । विश्व से प्रे विश्वे प्रे विश्वे स्था है । विश्व से प्रे विश्वे स्था है । विश्व से प्रे विश्वे स्था है । विश्व से प्रे विश्वे से प्र विश्वे से प्रे विश्वे से प्रे विश्वे से से प्रे विश्वे से प्रे विश्

त्त्रश्नाश्वादर्गित्रः स्वाधादानि स्वाधाद्या स्वाधाद्य

द्र्य.श.री.भैं.तर्यश्र.पर्यीर.यत्र्याह्र.के.यी.प्री

श्रेम्प्रेम्प्रेम्प्रम्थः श्रेम्प्रेम्प्रम्थः श्रेम्प्रेम्प्रम्थः श्रेम्प्रम्थः श्रेम्यः श्रेम्प्रम्थः श्रेम्प्रम्यः श्रेम्प्रम्थः श्रेम्प्रम

नेशक्षेत्रश्रम्भानुः नःधिवा।

श्ची दें त्रें से त्रें से त्र से त

नरःश्रूरःनवेःश्चेर। नेवेःह्रशःश्चेःतुःनःनगःगश्रयःविरःनश्चेतः यःनेश्ववेःश्चेर।

ग्रुअपः (र्वन्युःनः)दे।

यप्रश्नाम्यश्नाम्यम् न्यान्यम्

धुःर्रेयायान्ते महेन न्यास्।।

कुंत्य यहिशायहें पाणिव वा ।

होत्। होत्रा होत्र होत्र हात्र हात

न्यरन्।

स्व-डिगार्ड्येट-नदे-देश-धरायान्याना।

क्ष्याचित्रेत्रार्ट्रे त्या क्ष्याची व्याप्याची व्याची व्याप्याची व्याप्याची

व्यायाम् स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया

द्रीति र्वेत्रिंद्रा र्वेत्रिंद्रा र्वेत्रिंद्रित्र स्थायः प्रतिविध्याः स्थायः प्रतिविध्यः स्थायः प्रतिविधः स्थायः स्थायः प्रतिविधः स्थायः प्रतिविधः स्थायः प्रतिविधः स्थायः स्यायः स्थायः स्य

न्नरः विश्वयः यात्र विश्वयः यात्र यात्र विश्वयः यात्र यात्य यात्र य

५८:द्रा. (२४८:७) श.स.विधायायाया महेवावशा ह्रीं ख्यायाहेश श्रायहेश श्रायहेवाया)

रदःचलेवःगडिगाःमःहेदःदुःवशुर्ग।

न्नर-सेंद्रे-छिन्-सर-ग्रीश-माश्रय-न्रा ।

ध्ययामी इसामानियाये दायाया प्यता हे या पाने मान्यू मार्चे वित्र

र्देन त्यानहेन न्या प्रत्या प

र्श्वेद्र'र्स्य राष्ट्र'त्वद्र'र्स्य राष्ट्र'त्वद्र'र्स्स्य विष्ट्र'र्स्य राष्ट्र'य्य राष्ट्र'य

न्मे प्रदे स्थान नहेत्र त्र भागुः या देवे गा त्र गा त् नहेत्र पा प्रेत प्रदा प्रते क्षेत्र का प्रमाद प्रेस प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते । यस प्रते । य

महिराम (विश्ववासावानहेन न्यानश्चनाम) दे।

स्रम्भेति से से स्राप्त स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्भेत्र स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्मेत्र स्रम्भेत्र स्रम्भेति स्रम्भेत्र स्रम्भेति स्रम्भेत्र स्रमेत्र स्रम्भेत्र स

ने 'क्षेत्र' श्रू र 'वा ने 'श्रु 'र्च क्षेत्र' क्षेत्र'

रवःरेवःग्रेशःश्वरश्याश्वरःश्वा। नवदःग्रेशःश्वरःवद्यःश्वरःदेवःदेःशः। वाववःग्रेशःश्वरःवद्यःश्वरःदेवःदेःशः। हेःशःतुरःवःगश्वरःश्वरा

र्यः रेयः ग्रीश्रं श्रीयाः प्रेयः प्रेयः श्रीयः प्रेयः प्रयः प्रयः प्रेयः प्रेयः प्रेयः प्रयः प

> श्वर-द्यदः भीदाशः श्वीदः सः स्वर्धा। यात्ववः वे : याद्याः यो : वृत्रः हिं यात्रः सा। देशः व : याववः वे : श्वः सः भीवा। श्वरः से व : याववः वे : श्वः सः भीवा। श्वरः से व : याववः वे : श्वः सः भीवा।

ने निवर के अप्यक्षियाया ने दे न्या के व्यवस्था ने क्षु व्यवस्था ने दे क्षु व्यवस्था ने दे क्षु व्यवस्था ने दे क्षु व्यवस्था ने क्षु व्यवस्था

विष्णुः न्येवाषाः क्रेत्रः श्रीः वरः श्रूरः वीः सर्देतः यरः श्रूवशः विष्णः विष

यद्गः त्रे । । हिंगान्द्र प्राच्या व्याप्त व्

गहिरागान्याः ग्राम्यः क्रुः साधित्।

मुश्रायविकास्ट्रान्,लूर्यानुस्तुन

महिश्रामा है से प्राचेश्वरामा स्थान है श्राम्य स्थान है श्राम्य स्थान है स

धुःर्रवाशुःर्व्याप्त्राः सुर्वाप्त्राः सुर्वापत्राः सुर्वापत्रा

ध्यावित्रायात्र्यात्रे । श्रुवाश्चर्त्य स्थायात्रे व्याप्त्रे । श्रुवाश्चर्त्य स्थायात्रे व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्ये व्याप्त्रे व्याप्त्ये व्याप्त्

५८:इ. (लेक.रेचर.चर.की.कैर.चष्ठ.विर.चर.की.कथर.रेवीच.च.)

यायाने सूराह्य त्यमाने रावशुरा

यायाने। ध्रायान्य वित्राची इसामित्र वित्राम्य वित्र सम्या वित्र वि

ने ने कें न नम् अर्के न नम्

सर्वेट.रस.स.स.स्ट्रेट्स.सर.दर्भेर।

श्रूरः तमः र्नेतः ते र्केट् रहेटः तश्चेतमः मः धितः तथा वा कें रहेटः सः वश्चेतमः पाद्यां धिः सः श्रूरः त्वा ववा हे रहेटः वाहे सः गाद्यां स्थान्य वा स्थान्य वा स्थान्य वा स्थान्य वा स्थान्य स

न्दःर्ये ख्रुरःत्र त्याची सुरुष्ये विश्वा वरः तृ स्त्रे तः ची वा स्वा शे स्वर्णा वरः तृ स्त्रे तः ची वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे तः ची वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे वा ची वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे वा स्त्रे वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे वा स्वर्णा वरः तृ स्त्रे वा स्त्रे वा स्वर्णा वरः विश्वराण्या वर्णा विश्वराण्या व

यायाहे श्रूटायाश्चायायायाया । दे का श्रास्त्री प्रयादा विवासि । सासर्वेटा दे श्री राज्यायायाया यात्राहे स्वरायदे शित्राच्या स्वराहे यात्राहे य

धुयःग्रयःशेःग्रयः म्प्रयः म्प्रदः न्तः भूरःगेः धुयः ग्रीः क्रायदेः न्तरः ग्रेशःसः धेदः दें वेः द्वा

धुःर्देवःकःसेद्रःचगावाःसस्यःकः वहस्यःग्रद्याचेवास्यस्यः दशुरः वसः वा बुदः इतिःर्देवःदेः स्वासः सदिः कःसेदः वा हेवाः धेवः वसा सः वदिः कःसेदः दुः सः धेवा

> श्चे : र्स्यः र्म्यं त्या श्चेयाः अर्थे द्या । श्चे : स्यः प्मात्यं या प्यात्यं या । श्चे : स्यः प्मात्यं या । श्चे : स्यः प्मात्यं या । श्चे : स्यः प्मात्यं या ।

कुंवानन्त्रान्यान्यायान्यायान्यात्रान्यान्यात्रा

गयाहे श्रूटानामाया से माया

हिन्यर क्रीश क्लें घन्त्र वा

म्यानिक्तान्त्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात

गल्व मन्त्र म्याम्य मन्त्र सेत्।।

यार.जश्राच.रर.सर.सर.पर्वीरा

यदेशःग्रह्मार्चेद्द्रिष्ट्र अद्याद्द्र स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य

शूट न ने प्यट है या से माया

श्चेन भ्रेन स्थान

वनारेट नदे श्रूट न दे । धट कु अळ द के श्री न श्रूप न धित है श प्रश्री न प्रति । श्रूप श्रूप के श्री का श्री का स्वी का स्वी के स्वी का स्वी के स्वी का स्वी के स्वी का स्वी क

"""रे'दर्नर'हेश'स'धेवा।

र्दें त्र दे न्या है न्या दिन् है न्या है न्य

श्रवःश्रेर ।

हे न वस श्रेन ह्या श्रन हेट हुट नवे श्रेन रें बे वा

"""भूर नवर ने भू के ना

गल्व-र्-अनः सेव-प्यॅन-मन्त्र।

यत्राक्षेत्रं वाल्यसं वाल्य द्वार्यस्य विष्ण व्याप्ते विष्ण वि

देवेर्देवर्वे। श्चेनः ह्यः दुः तर्देदः यवेरश्चेषायः गुवः हुः ख्यः व्यान्यः व्याव्यः व्याव्यः व्यायः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्यायः व्याव्यः व्य

नेव फुले प्याञ्चर नावी।

केर'ग्राराय'रे'पर'श्रूर'नर'दशुर।

वश्चरानराष्ट्रमा भेगान्तरायाः भेताः कुरान्य छेरा नामायाः नरास्ट्रानरा

ग्रुअपा (वश्यान्तर व्यानहेत् सदे व्यत्न न्याना सः)त्री

गयानेनेरायरासर्वेरासेराया।

नहेव वर्षामा त्रुमार्था मानव प्रतृत प्रशूत वा

ने नगा इस्र असे अव रहे व न ।

नश्चेन'वयुर''''|

"""रे भ्रेरक्रित्र

श्चेन हो न त्या विवा श्वर त्या न ।

वया है 'सेट द्रश्य ने क्षे नित्र हैं अ 'तु 'हे 'यह अ 'या है अ या अव नित्र क्षे या अव नित्र

दे'स्यञ्जीतस्य दे'र्यायम्बर्द्धन्द्रस्य सञ्जीतस्य स्थित्।

याश्राय प्रमाश्राय स्टामिन स्ट

ठेग्'ठर'ग्रथ्यं याश्रय'श्चीर् अर्बेट'तर'यश्चर'त्रस्ट्रंद्रश'पर'व्या ग्रिश'ग्रथ'ग्डिश'ग्'श' नश्चेत्रश'पर'सर्वेट'रु'प्रेट्'प्रेटे'श्चेर्

""अर्बेट्-सेट्-ग्रीयायहिया-यञ्जीयया।

मांसर्हित्यं से देख्या ग्रीया महिना निष्ठी न्या महिना निष्ठी निष्

यार यो अ र्ने व र र र र ने व र ये व र

वनाके दित्वसान वन्यायायाय विष्टा निर्मे साम् दित्या सामित्र विष्टा निर्मे सामित्र स्था सामित्र सामित्र सामित्र

भ्रान्तित्वर्थः श्रीत्वर्थः विद्यान्ति । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्थः । स्वर्थः विद्यानि । स्वर्यः विद्यानि । स्वर्यः । स्वर्यः

र्दें त्र कु' सर्वेदे सम्बद्ध ने दे कु' भ्रेस सम् हो न सदे हिरे पार्ने न न स्वर्ण स्वर्ण के स्वर्ण स्वर्ण हे न स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण हे न स्वर्ण स्वर्ण हे न स्वर्ण स्वर्ण हे न स्वर्ण स्वर्ण हे न स्वर्ण स्वर्ण है न स्वर्ण

सः मुनः हो। कुः वः पाव रूषः यदेः र्श्वेषाः कपारूः न्यः प्रदः से विदः से प्रदेशः प्रदे

देशिर-देव-नहेव-श्रुश्याश्वर-मद्या । श्वी-ना-हे-श्रिये-श्वी-नविव-तु। । स्या-य-सिव-श्वी-ना-नेव-भीवा। श्वी-य-सिव-श्वी-ना-ना-सिवा।

मशुस्रामारुषामित्रेशःश्च्यामित्रः सेवासामान्वतः मसूत्रः सायामित्रः स्वासामान्वतः मसूत्रः सायामित्रः स्वासामान् स्वासामान्द्रस्य प्रति । प्रतः सें (क्षिम्यामहरूषः) हो।

नियान्य स्थान्य स्थान

क्ष्रियान्त्र श्रीत्र विश्वा देव श्रीत विश्वा विश्व श्रीत श

ग्रथ्यत्रदेवःगुव्यायययः वर्ष्या

शुःवहेव सर्व सुया के भारत्व। शुःहिंद शुःग श्रदा र्

र्मेत्रगुत्रग्वस्थान्य प्रत्यस्था दे हिंद् त्यास्य त्रेत्वास्य स्वेद्रास्य स्वेद्र स

ग्यानेने कुष्यमानेमान्।

नेशलाहेंगायले प्यत्सेन।

श्वानि क्षेत्र क्षेत्

यरात्रश्चारित्र सर्देत्र स्वर्तेत्र स्वर्ते स्वर्ते । स्वर्त्त स्वर्ते स्वर्ते । स्वर्त्त स्वर्ते स्व

नेशः ग्रुशः वेशः शः ने : श्रेनः ग्रुमः । नेतः नुः श्रूमः नः हेनः ग्रीः श्रीमः ।

ने यायायाया लेया यहूँ न प्राधिता।

मिं में रवा में स्वायाया श्रुपेया न्या श्रुपेया न्या स्वाय स

नेशयम्म निस्तान्य विश्वा

इसाचेन्सेन्यायार्थःहे सुरावगुरा।

नेतः मार्चर में तर्ं मार्थया यह स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

नह्रवःगारः हैं हैं हैं से ग्रांशः श्री । देवः प्यतः ग्रांब्वः यः हैं स्रांसे देशे । वर्शे नः ग्रांबः श्रीः भेसः संदी ।

डेगा उर रर हे र हो र यर वशुरा

व्हेन्छन। होन्यान्य प्रमान व्हेन्।

अन् छ्या श्री अस्य याव्य धिव यहें । । अन्य स्थार अस्य स्थाय स्थाय

र्वेत् हैं हे अँग्रां अन् केंग् केंग केंग वित्त द्रां ग्वां वित्त केंग वित्त

क्ष्यामित्रेश्वास्त्राम्ब्रीयाद्याम्ब्राम्यास्त्राम्बर्धाः । विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्यास्य विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्यासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्यास्य विश्वासायाम्बर्धाः विश्वासायाम्बर्यास्य विश्वासायाम्बर्यास्य विश्वासायाम्बर्यास्य विश्वा

प्रिमान्य म्यान्य म्यान्य म्यान्य प्रिमान्य म्यान्य प्रिमान्य म्यान्य स्थान्य स्थान्य

ने नन्या हेन् ग्री अ श्रीं मन्या।

नइन्यायम्यायः व्यानः व्यानः व्यान

र्शेष्ट्रेम् नेश्वायात्र्यात्रियात्र्यात्रियात्र्यात्

ने प्यर प्यर न्या इव त्यम सुन।

र्षे तहे व ने कें व ने वि क्षा प्रते क्षा क्षा प्रते क्षा क्षा प्रते क्षा क्षा प्रते क्षा क्षा प्रते क्षा प्र

म्हार्यस्थित्यः श्री श्री स्थित्यः स्थिति स्थित्यः स्थिति स्थित्यः स्थिति स्याति स्थिति स्याति स्थिति स्य

ग्राच्यायार्यम् । यार्यम् यार्यम् यार्यम् यार्यम् । यार्यम् यार्यम् यार्यम् यार्यम् । यार्यम् यार्यम्यम् यार्यम् यार्य

व्यक्ष श्राश्चित्र विवाद्य स्थाय श्री विवाद्य विवाद्य स्थाय श्री विवाद्य स्थाय श्री विवाद्य स्थाय श्री विवाद्य

व्यापन्ने प्रस्था । व्यापन्ने प्रस्था । व्यापन्ने प्रस्था । व्यापन्ने प्रस्था ।

महिरासराम्य स्वान्य स

५८.स्.(इवकासक्ष्यक्षसम्बद्धनःसः)द्री

ळुषामिश्रमञ्जूनामराजेन्द्रम्भाग्यना। रहासेमास्यमळेरास्युनासाधित।। रहासेम्हेर्न्स्य छुरास्रहाम। ने छे छुटानरासुना छुरार्स्।।

म्बुट्रम्स्याद्द्रप्रहेत्रम्स्याग्ची स्वाया क्षेत्रा श्रुवा स्वराया स्वाया स्वराया स्

ने प्यतः भेशान्य विवाश्या विद्या विद

বাদ্ধিসামা (ইনাশানানান্ত্ৰ শ্ৰীশানশ্ৰুনানা) থা বাদ্ধি সা

श्चिरः हो दः देव । या विष्णु अधिरः या द्याया । या प्राप्तः हिया अः श्चिरः देव । या विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ।

५८.मू.(श्रूट:ब्रेट:द्र्याववर:ब्रीशःश्रूट:बःच्यावायः)यः प्रिश्

श्चरः हुः वर्दे दः याद्या वाद्या । श्चरः हः वर्दे दः याद्या वाद्या ।

र्श्वे स्थान्त्री स्थान्त्र स्थान्य स

न्रस्ति (र्ह्में कृष्ण वहनाराय न्यानाय)य निहेरा

श्चिर्यामान्त्रसे न्युः व्याप्यान्त्र नेति त्यत्र न्यामा सर्वे ।

५८:स्र (श्रूम्प्यामान्यासेन्पुःम्यामा)दे।

र्ट्ट्यासेट्यास्ट्रिट्ट्रिट्सेट्स्स्स्स्रित्युर्ट्हा ध्रेस्युट्ट्योः लेस्स्याल्यस्त्रीस्ट्रिट्ट्रिल्या

ने निर्देश उदा ग्री क्विं भी शादी।

नेयायग्यायाया हे सूर हीं दायाधेता।

द्यायाकात्रात्रे हिन्न् स्वर्धात्रे प्रदेश स्वर्धात्र हिन्द्र स्वर्धात्र स्वर्धात्र हिन्द्र स्वर्य स्वर्धात्र हिन्द्र स्वर्धात्र हिन्द्र स्वर्धात्र हिन्द्र स्वर्धात्र स्वर्य स्वर स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

नेशन्दर्भेन्य श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र श्रीत्र

विश्वश्र श्रिट्स स्था श्रिया स्था स्था ।

र्देन'न्दर'नेश्वायतेष्ठ्रस्य शुं श्रुंदर'न सासुर्याय स्वीयाय प्रस्ति स्वाय क्षेत्राय स्वीयाय स्वीयाय

र्नेन: श्रुटः नः न्दरः श्रुवः नेश्वा देने श्रुः स्वायस्वः श्रुवाशः श्रुटः । र्ह्माः एः नद्याः यः वदः यद्याः श्रुवाशः । ह्याः एः नद्याः यः वदः यद्वः श्रुवाशः ।

श्चित्रः त्रिं त्रिं श्चित्रः त्रिं त्र यत्र श्चित्रः यत्रे त्रिं त्रा त्रिं त्रिं

गहिश्यः (देवे व्यवः द्वावाः वाहिश्यः) याहिशः द्वावाः वाहिशः वितः यवः वाहिश्यः वाहिश्यः वितः यवः वाहिश्यः वाहिशः वाहिश

ध्ययान्यो ने सूर्या

नेशने श्रिम्भे वालेश सदम दर्षिया।

ध्यार्श्वर्धेन र्या मान्या इसामा श्रूमा मान्या समाने मार्थेन र्थेन र्या से मार्थेन र्थेन रथेन र्थेन र्

নাই শ'ব'(ইই'অর'ব্যাবাবা'বা') অ'বা ধ্যুমা

गयाने ने निर्देश्या

श्रीं न मान्य है । पें न है अ । यहें न न ।

दर्-न-नम्भग्राउन्-सन्-स्व-स्व-त्।

श्चित्राम् १ विश्वेताम् १ विश्वेताम् १

निव निर्मेश्या अविश्व में भारत स्वा के प्राप्त के निर्मेश के निर्

गहिरामा (वदान विदासमण्डत कु सळव दु से विश्व मा)दे।

गयाहे क्वें यह हे श्रिंद वा

गयाने। ह्रिंस्युस्यवे यहान्याने ह्या निर्मा वे वा

ने ने प्रमायमा श्रीमा या प्रमायमा

ने'भे'श्चिर'ने'रूर'हेर'ने।। ने'ने'यूर्'नवे'कु'ठन'भेना।

देने विद्या स्था ही द्रा स्था हु स्था स्था है विद्या स्था है विद्या स्था है विद्या स्था है विद्या स्था है स्थ

ठ्रानायमाग्री ह्यामावमामी ।

वरी वी विह्या हेव वा क्रूर वश्चरा

यावव श्री तर्वा के प्रश्री प्रायम स्था । श्री त्र विष्य के प्रायम स्था । श्री त्र विषय के प्री त्र विषय के प्रायम स्था । श्री त्र विषय के प्रायम स्याम स्था । श्री त्र विषय के प्रायम स्य

ने अप्यायश्राह्म्याविष्ठाची यद्या हित् हित्या य्यायश्री देवा हित्य विष्ठा व्यायविष्ठा व्यायविष्ठा व्यायविष्ठा व्यायविष्ठा विष्ठा विष्ठ

र्श्वे स्थान्त्र व्याचित्र विश्वे स्थान्त्र । विश्वे स्थान्त्र विश्वे स्थान्त्र । विश्वे स्थान्य स्थान्त्र । विश्वे स्यान्त्र । विश्वे स्थान्त्र । विश्वे स्थान्त्र । विश्वे स्थान्त्र

र्श्वेप्तिन्त्रीः र्र्हे वे र्श्वेप्ते वाया श्रीः त्रिक्षेप्ते वि र्हे व्या श्रीः त्रिक्षेप्ते व्या श्रीः वि र्हे व्या श्रीः वि रहे व्या श्रीः व्या श्रीः वि रहे व्या श्रीः वि रहे व्या श्रीः वि रहे व्या श्रीः व

र्त्ते विश्वे श्रिम् श्रिम् विश्वे । विश्वे विश्वे श्रिम् विश्वे । विश्वे विश्

र्षे तहे व शे हें ते के के अववा हे स्ट्रिंग हें व से प्राप्त के से से प्राप्त के से प

न्यास्याम्य (वड् नहिन्नहिन्य व्यन्नामासः)दे

यार कें श्रुं र यदे य य या है र वि । यद यदे शुं र यदे या धीव वा । वर्ते ने स्ट हिन् ग्रुव स्थान । विवासिक के स्वास्थान । विवासिक के स्वास्थान ।

> यद्यातः विया यो अः यद्धः स्यादः विद्या । विया या विया यो अः यद्धः स्यादः विद्या । यद्यादः विया यो अः यद्धः स्थादः विद्या

ষমমাত্র রমমাত্র গ্রীমার্ট্র দেকুম।

श्चित्रं स्वाप्त्य विश्वाप्त श्चित्रं स्वाप्त विश्वाप्त स्वाप्त विश्वाप्त विश्वापत विश्वापत

है 'श्रेन श्रे श्रेन श्रे श्रेन । है 'श्रेन श्रे श्रेन श्रेन श्रेन ।

हे सूर्श्यार्थ अंग्रंश स्त्रेश स्त्रेश स्त्रेश स्त्र प्रति । दे प्

मेन क्रें कें नियान निर्देश के का का क्रिया क्रें के निया

ने'नविव'द्रसमार्श्चेरारें'र्नेदे'र्श्चेरा।

ने प्यट देशका शुं शुं ट नर देश ।

र्नेन अवर ने ने म्या ह से ना

र्यतः श्रें प्रहें व श्रें श्रें व श्

र्थेन'स'हेन'ग्रे'कु'र्थेन'न्। र्थेन'स'रेन'रेन'ग्रे'कु'र्थेन'न्। श्चेश्वराद्यात्रः वर्षेत्रं देवे व

र्शेट्टायास्य स्थान

गहिरामा (न्यानः व्यान्यान्य व्यानः वयः व्यानः व्या

याववः प्यानः श्रीयाश्वाः अर्देवः श्रुः अर्देवः त्यानः विश्वः यात्रः विश्वः यात्रः विश्वः यात्रः यात्यः यात्रः यात

न्वित्रम्भ्यं व्यायाः स्वा

दे.ही नगर्भें श्रें ग्रायान्य श्रें ग्राया श्रें व्या स्वार्थ स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

বার্ট্র শ:ম:(বদ্দাশ অ দ্বাবার:) অ বার্ট্র শা

५८:स्.(यश्वा ने रे.वश हश यावय क्षेत्र स र्यायाय) य पहिरा

वह्नेत्राम् म्वयाम् व्याप्ताम् । ध्रियाम् व्याप्ताम् ।

५८:द्री.(लीकाश्चायावान्यः विद्यातः)द्री

ग्वित्र द्रिशाधित्र त्र ग्वाश्याय ते।।

ग्रम्भयास्त्रेत्र हे सूरान्गराग्रम्थायसूर्य।

न्वेशःसःमार्थायःधितःने मार्थायः सित्।।

वियानिक्षयान्य स्थानित्व स्थानिक्षयान्य स्थानिक्षय स्थानिक्

र्ट्सियासयायटानेसाराष्ट्रीसाम्बद्धास्यासयायटाचेट्ट्रेवे वा

व्यायायाययायव्यक्तिम्।

णुयान्यस्य नित्र श्रुन नित्र श्रुन नित्र श्रुम नित्र श्रूम नित्र श्रुम नित्र श्रूम नित्र श्रुम नित्र

गहिराम (ध्याने या महिराम राष्ट्र निर्मा राष्ट्र ने सम्मान) या पहिरा

सर्वेद्यान्य स्थान्य स्थान्य

याहेशन्यायशेषायम् सर्वेदायात्।।

र्नेत्रः भेषानिष्ठः प्रायः प्

यार यो श्रांश्रेष्ट्र प्रांति । श्रेश्रेश्रेष्ट्र विश्वेष्ट्र श्रेष्ट्र श्र

कुः अळं वं नाट नी शः अर्थेट निष्ठा प्राप्त हो वि नाट निष्ठा है । वि अर्थेट निष्ठा क्षेत्र निष्ठ

वर्त्तः व्यक्षः विश्वः व्यवः व्यवः विश्वः वि

र्देन'त्र'त्र'न्यं भं श्रिंद'न'वहेंन'तु अ'य'अ'धेंत'यर'वया वहेंन'तु अ'र्से 'बे अ'यदर'शूर'हे द'ह्र अ'यर'न अव्य'न'धेत'यरे 'श्रेर'

> सर्वेद्यान्याः वे त्यः स्ट्रास्त्र विष्या । देवः वे स्ट्रासर्वेदः स्ट्रास्त्र विष्या । के स्ट्रास्त्र वे सर्वेदः स्ट्रास्त्र ।

वर् न पीत्र पर देश देश वर्ग्य ।

श्चेशःशेः नेशः परेशः श्वेः द्वाराण्यः परिः तेः सर्वेदः वः नगरः विदेन नदः तर्राण्येतः परः देशः परः वश्चरः पर्याः प्रवः परः प्रवः विदः स्वरः सर्वेदः नदः तुश्वः नेशः पर्योदः श्चेतः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः श्चेरः । श्चितः परः प्रवः । स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः । स्वरः स्वरः

> यद्गतः हेत्या स्थानित्या । याद्म थेवादेश्या याहे याद्म से से से द्वा । दे के देवाद्म याद्म याद्

लेश्वास्त्राच्यान्यः विदेश्यात्राच्याः विदेश्याः विद्यान्यः विद्य

गहिरापा (न्याया हो दारा ने प्राप्ता हो दारा के दार्थ का स्वार के दार्थ का स्वार का स

के के स्मान्य प्रत्य प

ग्रुअ'र्ग'(र्द्रिन्थ'र्थर्व'क्'क्र'व्यान')य'ग्रुआ रेग्रथ'र्भ'र्द्रिन्य'र्गेश'ग्रव्य'प्यत्तिम्थ'र्य'त्त्' न्दे'र्श्यम्थ'य' र्द्रिन्य'र्न्द्र्य'म्ब्रिंग्य'र्थ्वेष्य्य'व्यक्ष्यावेष्य्य'र्थेन्य्य'र्थे

तन्यानेयाः भेदायदेः श्रियाशः न्याःया।
देवः गुवः अर्थेनः भेनः यदेः भेशः वे।।
श्रिः वेः अर्थेनः श्रुः अर्थेनः श्रुः या।
यानः भेवः नेः ययनः यवः यहनः वें।।
नेशः यन्याः केनः नेवाः यः अर्थेनः यदेः श्रियाशः न्याः योशः नेशः यशः

र्नेत्रगुत्रसर्वेर् प्रसेत्रसेत्रसेत्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य प्रसेत्रस्य प्रसेत्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य प्रसेत्रस्य स्तित्रस्य स्तित्य स्तित्रस्य स्तित्रस्य स्तित्य स्तित्रस्य स्तित्य स्तित्य स्तित्य

महिश्याः (नदेः श्वाश्याः स्टिश्वाः न्याः विद्याः स्टिश्वाः स्टिश्

ने न्वा के क्विं के न्या के क्वा के क्वा निवा के व्या के व्या

यायह्याम्य उत्र ने प्येत्र मित्र प्रेत्र ने त्र के मुन्न के मित्र के मित्र

५७८ वर्षा प्रति । ५७८ वर्षा प्रति । ५८ में (५७८ वर्षा प्रति ।

"""ग्वन् श्रीश्रास्याधिन न।।

गलव श्रीश श्रामा वे ने श्री न त्या ।

श्रूरः नदे हों रेगा गावन सेन न।

यायाने। यदे स्वादेशायश्चेदायाद्दर देन स्वाद्य स्वादित स्वादित

न्भेग्रायरम् होन्याव्याव्यायम्।।

गहिरायदेगमें दार्था वात्र स्थित।

ठे हे | नि:श्वादे त्यश्चे श्वादे त्यश्चे श्वादे त्यहे हु नादि स्थादे त्यहे हु ना विद्यादे हु ना

ने'स'न इत्ति 'हुं 'न्या'ग्यत्। ।

से'यहें त'ने 'हें 'हुं र 'बन्'ग्यत्। ।

नहें स'से त'ले स'ग्यत् सूर्य 'न 'ने 'हुं या'ने 'स'या बत्र' हैं 'हें स'ठत। यने 'हुं या'ने 'स'या बत्र' हैं 'हें स'ठत। यने 'हुं या'ने 'स'या बत्र'

ते भी मार्च विश्व मार्च के मार्च विश्व मार्च मार्च विश्व मार्च मार्च मार्च विश्व मार्च मा

सर्देव-शुस-५८-दे-न्य-मान्यना

নৰ্বি |

५८:सॅ (नर्बेर:बेर:नर्बेर:नर्वेर:नर्

गयानेने यायहै व हो द ग्या

यर्देन शुया हेन दे सेव ले वा

ग्राया मान्त्र श्री मान्त्र श्री मान्त्र भ्री मान्त्र भ्र

नेशसर्दिन सुसर् पद्दिन प्रशासी दिन वित्र व

र्देव सर्द्ध दर्भ न्न न्दर ने नाद स्था।

सासर्वेटार्ट्रेन्याडेयाः स्वार्थ्या राज्या

यह मार्था यह स्वाप्त में हों हैं हों हों हों हों से स्वाप्त में हैं के मार्थ में स्वाप्त में स्वाप्त में स्वाप में

नायाने श्रिमाना में भाषीताना

यावव वे इसागुव पहें व से प्यूना

श्रॅट्र नवे न्त्रे नवद्य नव्य ने ने विष्

याववर ग्री प्रेया याववर ग्री अः इस्यायः ग्रीवः हितं प्रयः स्थाः वश्चरः याववर ग्री प्रेया याववर ग्री अः इस्यायः ग्रीवः हितं प्रयः स्थाः वश्चरः গ্রিমান্ত্রিমান্ত্রিমান্ত্রিমান্ত্রেমা

यादाद्याः स्थाः यहितः स्थाः स्थाः स्थाः । यात्वतः श्रीः यदे याद्याः स्थाः स्थाः स्थाः । स्थाः दे स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः । दे स्थाः दे स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः ।

क्रम्यत्याप्ता क्रियाम्याचित् क्रियाम्याचित् क्रियाम्याचेत् । क्रम्यत्याप्ता क्रम्यत्याप्ता क्रम्यत्याप्ता क्रम्यत्याप्ता क्रम्यत्याप्ता क्रम्यत्या क्रम्यत्य क्रम्य क्रम्यत्य क

न्यश्चित्रः न्यतः स्वानस्यः दे।।

ने न्यात्य के क्रे के का वा

गयाने। नरें सूगानक्षेत्रायते प्रयोगित्या म्यायवित्रायते प्रवार्था वर्षा अति । वर्षे प्रयोगितक्षेत्रायते प्रयोगितक्षेत्रायते प्रयोगितक्षेत्रायते । इत्यायक्षेत्रायते । वर्षे या वर्षे प्रयोगितक्षेत्राय । वर्षे या वर्ष

स्यानस्य भेगामस्य भेगासस्य भे

यदे न दे स्वा न स्वा व स्वा व स्व व

यार्ट्य प्रस्थायः श्रीत्राक्षात्रः स्थितः । यार्ट्य प्रस्थायः श्रीत्राक्षात्रः स्थितः । यर्भवाश्वास्त्र विद्या प्रमाणक्ष्य क्षेत्र विद्या विद्या

यार कें रह हिन् स्वाप्त स्वाप

र्तिः त्रं प्राप्ता वार्षिः क्षे वार्षे वार

नेश्वान्तेश्वान्त्रम् वर्षा न्रीयाश्चान्त्रम् अत्यान्त्रम् वर्षेत्रम् वर्यम्

महिरामा (रहा क्षेत्रा क्षूरा र प्याप्त र प्राप्त र प्राप

रदः ह्रीं ह्याश्रायशः ह्रियाशाद्वीशाधरात्रायाः ना दे पर्दे दावाशः विष्या

५८:सं (रट.सूँ स्वायाययार्हेवायान्वीयानराम्यानः)दे।

म्बिन्ध्याम्य स्वाम्य स्वाम्य । मुन्दे म्ह्याम्य स्वर्गे स्वाम्य स्वर्गे ।

रटः कुट् त्यः क्षें ह्वां श्रः यशः हिवाशः द्वीं श्रः यरः व्युक्तः यरः वया रटः क्षें त्रः यदे । यदे ।

गहिरामा (दे प्यूर्म व से प्यूष्ट प्या) या गहिरा

र्ट कुर्य क्षित्र विषय विषय क्षेत्र क्

५८.मू.(रटक्टीरकाष्ट्राक्षेत्रम्यकाष्ट्रयोगान्त्रमाम्यक्षान्यन्यक्षान्यन्यक्षान्यन्यक्षान्यन्यम्

स्वायाश्वायाययायावव स्वायाश्वायाययाया प्रायायाययायावव स्वायाश्वायाययायावव स्वायाश्वायाययायाययायावव स्वायाय्याय

५८:म्. (२४८:श्र्योशायशायविष्ठः हेवोशाश्रःश्रः ३८:४.)

गहिरामा (न्यर सँग्या के न्रम्य स्था से न्या निया

न्यायाः पर्ने श्रान्तः । नेतिः त्यवः न्यायाः पर्वे । न्यायाः पर्ने श्रान्ते ।

> ने व्यायव्या से स्प्त्र स्था । ने व्यायव्या से स्प्राचित्र से स्था ।

यान्य प्राचीय स्वायान स्वयान स

भ्रमानीः द्वरासं भ्रम् तुः र्क्ष भारत् । स्टा कु दाया स्वि स्व भारते स्व भा

नाय हे देव नायय ह्नाय धिव पर्मा

वर्ने न

यायाने। र्वेन्संयार्थम्यार्थनेन्द्रं विवा

व्देशन्ते मार्या शुर्त्र द्वाराया ।

र्देव हे मार्थय हे हैं व हे द छै।

हिन् सर त्याय विया धिव पर्ने न वा।

र्वेत्र है। सर ह्रेंदि ह्या शंर्ने त्या श्रेष्य न ने ने हेंद्र है न छे । ह्यन सर प्यापः विया धिद सम प्येत्र हेंद्र है न छे । ह्यन सम प्यापः विया धिद सम प्येत्र है न है न ले हा

श्चे नाम्यान्य विष्यान्य विष्या

र्नेत्रायाष्ट्रन्यस्यायाष्ट्रसेन्।।

धुःर्रेषःग्रीःर्देवःषःश्विद्धः सरःविषयः स्वादः स्वरः स्वरः स्वरः विषः विक्रायः स्वरः स्वर

ने पर्ने न व प्यान के या र्शे से मा

भूत्रियायहेयायर्थयय्यस्य व्या

अत्रिक्षान्त्रेश्व क्षान्त्र व्यक्ष न्त्र क्षान्त्र कष्टित्र क्षान्त्र कष्टित्र क्षान्त्र क्षान्त्र कष्टित्र क्षान्त्र कष्टित्र कष

अन् छेन्। यो अप्यहेना सप्टेन्स स्र अप्यास्य न्यान्य स्य देन स्व के स्व

गाया हे भी या या हमा या धी वा वा

गयाने। क्रम्स्य नेयाने वास्ति में वास्ति में वास्ति में विद्या

नेशम्यराष्ट्रियाशुम्बद्दाक्षेत्रम्।

नेशक्षान्यान्यम्।

स्त्राचीश्रास्त्रीश्राचिश्वाद्यां स्त्राच्या स्त्राच्य

नेशःशुरःहेर्द्राचडर् सेर्ग्यरा।

ने ने के स्वर्गे हो न धेवा।

र्नेत्रवार्ययाने स्वरं स्थाने श्री स्थाने स

सर्वेदःयःसर्वेदःशुरःसेदः ।

यायाते। अर्थेट्यार्थयात्रेयात्यात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्र

শ্বৰ খুব

श्चेशःत्रःग्वतःश्चेशःश्चेरःत्ररःदशुरःत्रेःर्देतःग्रथःररःश्चरःथः श्चेशःत्रःग्वरःहग्रथःप्रःग्वरःप्रःग्वरः ग्रथःत्रःद्वरःश्चेशःश्चरःयरः श्चरः यःश्चेश्चरःप्रदेःहग्रथःपरःद्वागानःविगःदेःवश्चरःश्चरःश्चरःश्चरः श्चेशःश्चरःप्रदेःश्चरः श्चेशःश्चरःप्रदेश्चरः

सर्वटाशुरायगरायाटासर्वेटायशुरासेट्रा

न्न न्यु र न्यु र प्रश्ने र प्रश्ने

छन्। यह स्थान्य स्थान्य स्थान्य । । स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य । । याववरश्चेश्वास्त्रात्त्राद्धः द्वास्त्रात्त्रात्त्र्यः स्वास्त्रात्त्र्यः स्वास्त्रात्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रात्त्रः स्वास्त्रात्त्रः स्वास्त्रात्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रात्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्

दे: धेरः रूटः कें अः खें अः खेटः उद्या । देवः कें अः प्यवः यारः यः यः अः दे। । कें वे: हे अः शुः दर्शयाः अः प्यवः ॥

म्बरम्बरम्यास्य स्वास्य स्वास्य

८८.सू.(धुंदुःइशःश्वःश्वःद्वःधुंदुःकूशःध्वाशःशःशःस्टःयः)द्री

र्ट्रा ह्वि रहें र्श्वा वि स्वा का का का का कि स्वा का का कि स्वा का कि स्व का कि स

र्त्वाश्वास्त्रश्वायाद्येव । ।

कुं अर्द्ध्द्रश्रायात्रश्रम्भेश्रायाते। । कुं अर्द्ध्द्रश्रायात्रश्रम्भेश्रायात्राया

र्त्तें श्रुवायिः ह्वायायदेवं श्रुवादुः त्युवायायादः धिवायः स्टार्त्तें वे रे रे रे स्वायायः विवाययः विवायः व

ग्वितः श्रेशः ने 'प्यदः व्यव्यायः उत्।

र्त्त्र क्षेत्र क्षेत्र विषय क्षेत्र क्षेत्र

याञ्चत्राश्चाश्चाश्चाश्चाश्चात्वत्। । प्रमार्गे प्रमाश्चाश्चाश्चाश्चा । स्रामार्गे वाश्चाश्चाश्चाल्या ।

हे नर सर्वेद राया थी दार्वे।

या त्राम्या व्याप्त स्वाप्त व्याप्त स्वाप्त स

देः श्वाद्याद्याद्याद्यात्रे श्वाद्यात्रे श्वाद्यात्रे श्वाद्यात्रे श्वाद्यात्रे श्वाद्यात्रे श्वाद्यात्र श्वाद्य श्वाद्य

ने भूमः ने श्रास्त्रीत्यामः धितः ने । ।
ह्या श्रास्त्रीत्रास्त्रास्त्रीत्र ।
ने भूमः न्वरः श्रीयाश्वानः धितः ने स्मानः स्वीतः स्वीतः ।
ने भूमः न्वरः श्रीयाशः यादः धितः ने स्मानः स्वीतः स्वीतः ।

स्र मित्र हिन्। स्र मित्र हिन्। स्र मित्र हिन्। स्र मित्र हिन्। स्र मित्र हिन्।

गहिरामा (रहार्क्के मिना पुरावार प्रत्येय प्राचेत स्था से प्राचेत स्था से प्रवास स्था से प्रवास स्था से प्रवास से प्रवास से प्राचेत से स्था से प्रवास से प्रव

द्रवेयःयःदेशः होन् ग्रीः र्र्डन् यायेन् प्राप्ता ने स्रोतः प्रथावावनः सुन् ग्रीः ह्रिं व्यायः प्रत्यावनः स्रोतः प्रयावनः स्राप्तावनः स्रोतः प्रयावनः स्रोतः स्राप्तावनः स्राप्तावनः स्राप्तावनः स्रोतः स्राप्तावनः स्रापतावनः स्राप

५८:से.(वर्षेकासार्द्रभार्त्वेदाश्चे क्वंदासास्रेदासा)दे।

ह्याश्राणित्वाधान्यः नित्तः वे । भूतः वे याः यद्योत्यः याः सर्वे हतः स्रोतः यद्याः । भूतः हियाश्रायद्यात्रः ह्याश्राद्याः वे । । सः सर्वे हतः याः यो याश्रायः चे हतः स्रोता ।

द्वान्त्रःश्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः विवान्यः विवायः विवान्यः विवायः व

हग्रभाने हिन्यमा सूराने दी।

ग्रनमंद्रिन्द्रमहिन्द्रने।।

दरक्रुर्णक्षित्र्व ध्रियः प्रते हिमायः दे छिन्यः या स्वायः स्वयः स्ययः स्वयः स्व

ने स्थाप्य स्थित स्थित । नश्चन श्चित स्थित स्थित । नश्चन श्चित स्थित स्थित ।

र्ट कुट् ये क्षें श्रुवायि ये विषय श्रुवा के दे हिन ये क्षें ये के विषय विषय के कि विषय कि विषय के कि विषय कि

ने श्वेम र्श्वेम या व्याप्त या विकास के त्या व्याप्त या विकास के त्या व

द्रोयः यः देशः होत् : येतः येतः होतः स्वार्यः स्वरं स

ने ग्रुवायाया भेतायाया क्विने प्रदेश हो या क्वा व्याप्त स्टार्च व स्टार्च न स्टार्च न

महिरामा (दे से दारा रामा वाव क्षुत् क्षेत्र क्

नन्गायायन्नेयामासर्वेतासेन्सिम्।

धेन्'ग्रे'र्ब्व्याप्ट्रिन्'श्रेन्'श्रेन्। रन'तृ'ग्रुन'रा'र्थिन्'श्रेन'श्रेन्।।

ह्यन्य म्या हिन्द्र स्था हिन्द

म्थुस्राप्त (क्ष्म्य मानव क्षेत्र क्ष्म्य मानव प्रमाप्त प्रम प्रमाप्त प्रम प्रमाप्त प्रमाप्त प्रमाप्त प्रमाप्त प्रम प्रमाप्त प्रमाप्त प्र

५८:स्. (ध्रु.कं.वु.याभाषाचेत्र्यः क्षे.त्वर्यः)द्री

व्यान्य व्याप्य व्याप

गहेशमा(देखाईद्याक्ष्रामा)दे।

ध्ययंते छे सूर ग्रम्यया न धित्।

र्वे त्राष्ट्री र्ने त्रा की पुरा के श्वर प्यान विश्व का स्वित्र की स्वा की प्राप्त की स्वा की प्राप्त की स्वा

याश्रयायार्ट में प्रसिद्धि सः से । याश्रयादे प्रस्ते ने प्रसिद्धि संस्ते के द्वा । स्रम्भेद्र स्रम् मुज्य स्रम्भेद्या ।

ते भूम क्षेत्र क्षेत्

ने ख्रिस्त क्रिं खे स्वायं क्रिं क्रियं वित्र क्रिं क्रियं क्रिं क्रियं क्रिं खे स्वायं क्रिं क्रियं क्रिं खे स्वायं क्रियं क्र

नेते श्री मानेत ने श्री श्री मानेत ने स्था मानेत मानेत ने स्था मानेत मानेत मानेत मानेत मानेत मानेत

देन् ग्री क्षेत्रम् क्षित्रम् क्षित

त्रः नः भिवाधाः ने । भिवाधाः न

न्येरःश्चित्रगार्ध्वरान्धेरान्त्रभा । त्रुयायान्द्रगायानः नेरान्त्रेत्रात्वर्या । त्रुयायान्द्रगायानः नेरान्त्रेत्रात्वर्या । त्रुयायान्द्रगायानः नेरान्त्रेत्रात्वर्या । वास्त्रुप्त्रनात्रात्त्रस्य । नेरान्द्रम्य । नेरान्त्रम्य ।

न्धेर्यः श्चित्रं से विश्वान्य व्यान्य व्याप्य व्याप्

म्रुस्पः (देशक्रक्रक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्षक्ष्यक्षक्षक्षः

णुव्यन्द्रन्द्रन्द्रस्य अभिन्न । सर्वेद्राच्या स्वया स्वया

कुं ग्राम् यश्वी धुव्यन्त्र से अभिन्न से अप्यानित्र के अप्यानित्र से अप्यानित्र के अप्यानित्र से अप्यानित्र के अप्यानित्र से अप्यानित्य से अप्यानित्र से अप्यानित्य से अप्यानित्र से अप्यानित्र से अप्यानित्र से अप्यानित्र से अप

सर्चर्रः लेश न्या न्या नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्य नित्य

रटः देवा श्रुवः सदेः देवा श्रः सः र्ह्वे ख्यः विहेशः श्रुवः सदेः देवाश्रः सः वनवः विवा हुः वट्रायः श्रायेवः है।

इव्राचायमा ग्राम्य वार्याची ।

इत्राचि ह्मा अप्यायाम् भेषामा या विष्या । या विष्या । या विषया । य

च्याने । व्यानि स्वायायया द्वीत्ता व्यान्त स्वाया व्याने स्वाया व्याने स्वाया स्वया व्याने स्वया स्य

श्चिंद्रानार्थित् देन प्राय्येत् प्रवेश श्चिम् हेर्मा स्वी स्वार्मा स्वर्मा स्वार्मा स्वार्मा

र्या अया अया श्रीता विषय होता विषय हमा अया हम

ने त्या प्राया हो त्या विष्या हो त्या विष्या है त्या है त्या

गल्दारदि तस्य निम्दि स्टारिया मित्र स्टारिया मित्र स्टारिया स्ट्राप्ति स्ट्र

নার মান (ক্রমানপ্র) মানার মা

र्ट्टियाओट्रास्य धियोःस्ट्रियंश्चियाश्वर्द्धियायःस्ट्रियाश्चर्यःस्ट्रियाशः स्ट्रियाओट्रास्य प्रति देश्वर्द्धियास्य स्ट्रियाश्चर्यःस्ट्रियाशः स्ट्रियाओट्रियाओट्रियाओट्रियास्य स्ट्रियाश्चर्यःस्ट्रियाश्चर्याःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाशःस्ट्रियाश्चर्याशेष्ट्याश्चर्याश्चर्यास्ट्रियाश्चर्याशेष्ट्रियाश्चर्यास्ट्रियाश्चर्याश्चर्याश्चर्यास्ट्रियासःस्ट्रियाश्चर्याश्चर्यास्ट्रियास्ट्र

५८:सं (इत्यान प्रमें प्राया) दे।

यायाने। इत्रापित्नवात्राण्येत्राश्चित्रात्रं सञ्जूतात्वा याताः वित्राप्तिः स्वात्राण्येतः स्वात्राः स्वात

नेशमान्त्र श्रीशम्यान्त्र दे।।

देशवा नेशपःश्याम्ययान्ययाः नेशपःश्वान्यः विवाधिरः विवाधि

रेट स्मारायहित पर से प्रशुर है।

ध्यवःस्टायावयायाये दाधे सःस्।

धियोः देट से दिन्दा व्याप्त विद्या क्षेत्र क्

र्देव नश्रुष्ठ । श्रेष्ठ प्रदेश प्रद

यावर्गान्त्र विष्ट्र स्थान विष्ट्र वि

थी'मो'रिस'सेन्'रेट'से'प्रमुन्।

क्रःश्वेःगुवःश्वेशः १३वःश्वेशः भ्रदः हेवाः सः विष्णः न भ्रेतः स्थः भ्रेतिः विष्णः स्थाः विष्णः विष्णः स्थाः स्

सव्यक्ष्वायदे न्यासे न्यासी । धिवा क्षा से साथ्य के स्था स्था से साथे न प्या के सा

थे'मो'सेट'सॅदे'क'रे'द्रमा'कें अ'उदा ठे'सूर्यं क'र्युद्रिते'सेअ'रा' बेर्न्यते'क्रिक्'कें क्रिक्यं के स्थानिक्रिक्यं के स्थानिक्यं के स्थानि

धियोश्चर्या ५ स्था १ स

५८.स. (क.र्म.स.सी.सह.चर.रे.वोष्यान्याचेतान्यः)

श्रृ'स'सम्बद'धे'नर'ग्वर्गाद्र्याद्

गायाने। धोगोरिटार्सिते काश्वास्त्रां स्विते कते प्राप्त स्वास्त्रां गावता गावता की सामित्र की सामि

द्या. र. श्रु. दे तसे वा नर त्युरा

र्वावश्वादित्व क्षात्र्या काष्ट्राया क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र काष्ट्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र काष्ट्र काष्ट्र

क्ष्र-देवा उर-रु सार्वे शासर वयावें।

रेयाधेतायहें वाधेरावायरावे।।

रेस्राध्वार्त्ते प्यरासेन्यरायगुरा।

कः शः स्रमः भी में दें कः मे सः श्वार्तं प्रहेत । प्रहेत । प्रहेत । स्रोतः । स्रमः प्रह्मा । कः श्वस्य । स्रमः स्रमः । स्रमः

ने विया खुव्य दे यात्र रासे न से न

र्त्ते नियम् कित्राम्य विवा

> सरकित्यावस्य सः श्रेसः ग्रामः दे।। भ्रेष्टिया श्रिमः सम्भेतः श्रेमः से।।

दे खुं श्रेव वा धुंश्या ग्राम् १३व वेश दे शे विद्या विद्या श्रेप वा श्रेप विद्या श्या श्रेप विद्या श्रेप विद

थी'मो'नेस'सेन्'हेग्। उर'दे।।

श्चेश्वायायायायाः श्चेत्राय्येत्। यवः हेवाः वहत्यः श्चेत्रः श्चेतः हित्यः व।। श्चेश्वायायायायाः श्चेत्रः श्चेत्रः विवाय।।

श्ची म्ह्रम् राज्यान्य स्वयः विष्यः । । भूकि स्वरं महित्रा श्ची स्वयः स्वयः । ।

गहिरामा (तुःस्र अष्ट्रतः क्वां तुः स्र मास्त्रीत् । स्वीत्र स्वायः महत्वायः स्वायः स्वयः स्य

र्न्न क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्र

प्रम्भ मिन्न स्थानित स्थानित

वन्दि।

५८:सं (ब्रॅट्चेट्ड्याम्बद्यासेयानरःस्रेन्यस्य १६०००)दे

नुःसाधीयाने ने पहीं नाना

१वर्भेश्राक्षेत्रचेत्रभेष्ट्रेत्या विश्व क्षेत्रचेत्रक्षेत्रचेत्रक्षेत्रचेत्रक्षेत्रचेत्रक्षेत्रचेत्रक्षेत्रचेत्र

व्ययदे र्ह्में याद दे र्ह्में द्राया ।

ने प्यम्भिम् स्मिन्यम् विष्यम् ।

नेशव नेरार्के न्वा शेष्युम्।

श्रीम् श

बयानान्वीन्यन्या नेते यस न्याया सर्वे।

८८:म्रा.(वयायान्स्राम्या)द्री

र्त्वे इस्रम्भः सं स्थान्त्रः न्या

र्श्चेन्त्र ।।

धीयोवेरकःवहें दायवेरह्में इससार्थे से मान्द्र हुँ दा होता हु सामान्द्र हो सार्थे वायसार्थे हुँ दार्थ हो समान्य

र्श्वे र्या से त्रा स

ण्याने क्षेत्र ने शामिश्वान्य क्ष्या प्रस्ति विदार्भे शामिश्वा पास्ति प्रस्ति क्ष्या प्रस्ति क्ष्या प्रस्ति विदार्भे शामिश्वा विद्या विद

নম্বেলুম্নম্প্রমা ইমামান্টেমান্তুম্বির্জ্বর্ন্নান্ত্র্যা

न्नरःक्षेयःग्रेशःसळ्स्यःश्वरः नःशेःत्वन्। धेरःक्षेयःग्रेशः सळ्स्यःश्वरः नःशेःत्वन्। निहेयःगःत्र्यःस्यःश्वरः धेतःसःशेःत्वन् सर्वे। । न्रःसः (न्नरःक्ष्यःग्रेयःसळ्स्यःश्वरः नःशेःत्वन् सः)हे।

शृष्ठी ह्यू र नमा निराधित हैं स्वा क्षेत्र के स्व क्षेत्र क्ष

न्नरःसँ शक्त्यः वह स्थान् । । न्नरःसँ त्या शक्तः स्थान् । । स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । । स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । । स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । । स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । । स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । । स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान

त्रवासिः न्वरासितः विश्वास्याधः विश्वास्य । व्यासितः विश्वास्य । विश

धि'मोदे'नन्ग'हेन्'गुन'समद'णन्।।

श्रेनायह्रस्य स्ट्रिंग्या व्याप्त स्ट्रिंग्या । ने प्याप्त स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र स्यास्त्र

ह्याम्डिमानञ्जेषात्राकुरामणी।

सवर व्या रुष ग्यार भूर हेवा वर्रेता।

म्यायान्य विवार्गी स्थाय विवार्गि वर्ग स्थाय स्

र्त्ते त्याने स्थाने स्

धि'वो'रेअ'ग्रेअ'ह्वाअ'यर'वगुरा।

 अन् देना संधित संने धी ही म

ने श्री मा श्

धे मो से र ब्रुट प्र म् ब्रुव श्र श्रे म् श्रे प्र श्रे

यादाद्या भी यो के कि स्व के स

 श्चिर होत् ह्र भागविष श्चेया व भा श्चे न प्यत्य प्या में स्टार्श यह व न मां भा स्टार्श यह व न मां स्टार्श यह व

> न्तरःसदिःयन्त्रयःसःयशःमान्तरःन्।। न्रस्थःसं क्ष्यश्चःते श्चितःस।। शन्दासर्वे कासे दःस्वायःसः उत्।। इतःधे व दे दे ते क्ष्यः हिंगा उत्।।

शृश्ची न्यर केंद्र ग्राट न्यर स्था कर्त नुः श्वर न्या ने द्वर सेंदि लेश सदि विद्या साथ स्था विद्या साथ स्था कर्त क्षेत्र स्था स्था क्षेत्र स्था स्था क्षेत्र स्य

महिन्द्रहेशयहोयादेखि। मार्थयान्य सुद्रहेद्यायाविमा। प्रमाने स्थान सुद्राकेद्या सुर्ह्ण स्थान सुद्रहेद्या सुर्ह्ण सुर्ह्ण सुर्ह्ण सुर्

र्श्वर्ग्या देन्द्रम्य श्री स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्णे स्वर्ण स्वर्णे स्वर्ण्य स्वर्णे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्णे स्वर्ये स्वर्णे

न्नरःसँशःकेँन्यः अर्वेदः वः प्यरः।।

गयाने हेंगायश श्रुर हो र वा ।

न्नर सेंदे भी अप्यश्चनर केंन्यर अर्घेट स्वर्णा ग्राय है हैंगा प्रश्च न्यर अक्टर दुर्श्वेर न्यर हो दर्शिता

क्रॅन्यालेशाम्या

धी'गोदे'र्न्द्रन्यदे'तेश्वेशं निश्चां प्रत्ना केशं साने 'धी' श्चें द्रान्य स्त्रेन्त स्त्रेन स्त्रेन्त स्

यायाहे ह्वा वुरुष्टेरा मध्य हिस्

बेब न

"" ने ने नि नि त्यका वर्ने ना

ठेगाउर र्ह्से अर्बेट सेट सेट सेट

रे रे किंत्र क्रे निरं तुरु सर देश सर युन र्ने ले त्

ने छेन वने छूम नग्रन ग्राम्य

> त्रम्यरादेशायराश्चरायाधेत। । त्रापादेशायराश्चरायाधेत। ।

वर्रे क्ष्रराह्म अभाग रेसाम्रीसारम्बर्गान्या ।

इस्र नेश्र श्र स्र दे द्वस्य रिवास्य स्वत प्रदे द्वस्य प्र मे में विं व हिन यान्द्रभाशुः सवायवे वृषायादेशायर विश्वराता धवाने। वदे सूरा इया धराहेंगाधाह्मस्राभारेसाग्रीभावगुरावराष्पराद्याधराहेंग्राभाग्री। क्रीभाग्रा यदिवानी कुन्त्यःहेवा यः इश्वान्त्रः तुरुषा विवा कुर्से वासे सेन्यिः धेरा दरे द्या यो देव वे ये दर् चन्त्र वे वे वि

गहिरामा (देशमान्य प्यत्राचेनारामा) दे।

वर्ष्णेयार विगासर्वेर रेव या। रें ने या हो दाय दें हैं वा या दवा। বাপণ্যব্দ:শ্বুদ:বশ:মইব:শ্বুম:ব্যা

ह्निनामाने प्यम्यम्यम्य

इस्र नेस देवास समुद्र र् स हैवा हर से भ्रे नर नसूद र पदि स दे कैंश ठवा श्रुॅं न याया पान विषा सर्वे र शुसा ग्री सास हैन पाने में विषय प्रति हैं। वेशर्रे नेशसर होत् संदे हैंगा सन्गा धुवा नश्य नर श्रूट नशत्वर र्येदे अर्दे त्र सुस्र दु : पर्दे द : पर्दे : द्व : पर्दे : हैं ना : स : दे : प्याद : या स्वार : पे व : हे। इस्र ने सरी मारास बुद र सारे ना उर से भ्रे नर न सूद रादे हि र

त्रा के स्ट्रिन्द्री से वा त्राविष्ण स्वाविष्ण के स्वाविष्ण स्वाव

ने भिन्दे ने याना यया दी।

धीवाःश्रवाश्वाविवाः तुःहेश्वाः स्थित्।

यदिवा हिन्देश या हेवा हिन्देश या देश विश्व व्यवस्था विश्व वि

र्श्वार्श्वरायम् ने प्याः के मा । र्श्वराश्वरायम् ने प्याः के ना । र्श्वराश्वरायम् ने मामा के ना । ने प्यर हे सुर नगर क्षेत्र प्येत्।

स्राण्डित स्रित्ति विश्वास्ति स्रित्ति स्रिति स्रित्ति स्रित्ति स्रित्ति स्रित्ति स्रिति स्

गहिराम (इवाउर क्षे नाम्वाया) या महिरा

नियानुद्धान्य व्याप्य प्रमान्य विष्य विषय स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

75.51. (124.324.22.32)

र्षिः विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस

र्नेत्रपहें त्र प्राप्त क्षेत्रप्त प्रेत्रप्त होत् ह्र श्राण्य वित्र हेण हर नुष्त हुत्रप्त हो प्रवित्रप्त प्राप्त वित्रपत्र होत् ह्र श्राण्य वित्र हेण हरू

र्देन'दर'ने याया श्रीटान'द्या।

ठेगारुमायगुमायम्यम् ।

र्नेतः र्श्वरमें प्रदेव पर प्राप्त र र्श्वर के र्यापा श्वेर प्रति श्वेर पर स्था

म्बित्र न्या क्षेत्र क्षेत्र

र्नेन'न्दर'लेश'यदे श्रूट'न'न्या । शंश्रीर'हेग्राश'यदर'लेन्'स'जेन्।

र्नेतः श्र्वार्यः श्रूपः विश्वारः विश्वरः विश्वारः विश्वरः विश्व

र्त्तुं न्याहेश र्वेन्या स्थान स्था

ने'गिहेश'गिडेग'ह'बेद'रा'र्क्ट'रा'श्रेद'द्र| र्ह्वे'यहिय'राश्रागिडेग'ह' ग्राह्मप्पट'र्क्ट्र'श्रश्राच'ट्र'नेश'या र्क्ट्र'श'र्थेद'र्दे'बे'द्रा

र्देन'तु'श्वर'नवे'ह्रस'नेश'न्दा।

श्वे'र्स्य'श्वे'ते'र्देन'यनय'वेग।

श्वें'ह्रस'गठिग'गेश'गड़्द्रस्थेन'ते।।

श्वाद्द्रसेन'स्य'श्वेर'र्द्रन'ह्रस्य'श्वेर'र्द्रन'ह्रस्य'श्वे'र्द्रन'ह्रस्य'नेश'न्द्रशेर्ट्रन'ह्रस्य'श्वे'र्द्रन'ह्रस्य'नेश'न्द्रशेर्ट्रन'ह्रस्य'श्वे'र्द्रन'ह्रस्य'नेश'न्द्रशेर्ट्रन'ह्रस्य'श्वे'र्द्रन'ह्रस्य'नेश'न्द्रशेर्ट्रन'ह्रस्य'श्वे'र्द्रन'

यनवः विमान्यः महित्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्त स्वान्तः स्वान्तः

> येग्रायम्हिग्रायम्हिग्रायम् श्री । श्रीत्रायम् ग्रायम् हिग्रायम् स्वी । स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वी । स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् । श्रीत्रायम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् । श्रीत्रायम् स्वयम् स्वयम् ।

र्देनःश्वेनः संनित्तः र्देनः ने श्वान्य ने स्वान्य ने स्वान्धः स्वान्य ने स्वान्धः स्वान्य ने स्वान्धः स्वान्य स्वान्य ने स्वान्धः स्वान्य स्

र्श्वाचे प्रत्राक्ष स्वाचित्र विश्वाचित्र विश्वाचित्र स्वाचित्र स

र्नेन'र्न्न'र्नेन'री।

श्रीत्रानित्रः श्रीत्रात्रात्रः वित्रः श्रीत्रः वित्रः श्रीत्रः वित्रः श्रीत्रः वित्रः श्रीत्रः वित्रः वित

देते कु अळव प्रदेश्वरा वार्ण्ये प्रदेश में स्थान विव स्थान स्थान

वया न्नन्ते अर्थे अर्थे वर्षे वर्षे

महिराप्तः (२६६५७) मिल्हः वह मार्याप्तः विद्वस्वस्व विद्वस्व विद्यस्व विद्वस्व विद्वस्वस्व विद्वस्वस्व विद्वस्व विद्वस्व विद्वस्य

न्दःसँ (श्वास्त्र व्यास्त्र व्यास्त

नेश्वामान्व श्री शहे शहें हिंदि । वशुरान ने श्वामान्य शहें हिंदी । ने ने जार में शहें हिंदी ।

र्श्वे त्र हो ने स्थान ने स्थान हो साह सं पावत हो साह सा सु हिंदा हो त्र त्र हो त्र स्था हो साह स्था पावत हो साह सा सु हो त्र साह सा सु हो साह सा सु हो त्र साह सा सु हो साह सा सु हो साह सा सु हो साह सु हो सा है सा सु हो सु हो सा है सा सु हो सु हो सा है सा सु हो सु हो सु हो सा है सा सु हो सु हो सु है सा है सा सु हो सु है सा है सा सु हो सु है सा है सु है सह सु है सा है सा सु है सा है

यायाने ने प्याप्तावित श्री शात्रा । यायाने क्षें श्री साने प्याप्त श्री माल्य स्थापाल्य श्री शासी माल्य स्थापाल्य श्री शासी माल्य स्थापाल्य स्यापाल्य स्थापाल्य स्यापाल्य स्थापाल्य स्थाप

विश्वासीत्र विश्वासीत्य विश्वासीत्य विश्वासीत्य विश्वासीत्य विश्वासीत्य विश्वासीत्य विष्व विश्वासीत्य विश्वासीत्य

गयफें श्रः हैं 'दे 'हे दा

गयाने। क्रेन् चेन्यार स्येये क्रें में में क्रिन्च ने हिन्ये कर्ते ले वा

ध्ययाव्यव्यावे वर्षे से वर्षे मा

गहेशःमः(देवः वित्रः विश्वतः वि

ग्राबुद्दान्यदेश्यळ्द्दाःहेत्।ग्रीदाशुद्दान्।।

के'नरःक्षेत्रचेत्रःक्षेत्रंते'नगा

ठे सूर ग्वव्द दे त्रहें द पर शुरा

र्श्रे.बैट.जेश्र.स.ही.श.ट्र.क्र्या.श्रीटा श्रीट.वी.ध्री.कं.य.ट्र.ट्रेया.श.पह्रंय.

या नेशमोग्राश्चर्यश्चर्यं स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र

र्श्वास्त्र स्थान स्थान

धैःर्रवःर्देवःवेःवेःत्रःनश्यामः। देःवःगोग्राशःचेदःवुश्यःश्याधीव।। ग्राववःदःध्यवःवेःवेःत्रःगव।। वर्गश्रागुरार्ह्में हुँदाक्षे वर्गुरार्दे।

नाव्य प्यानिश्चि र्स्या श्री र्स्य है। स्वानिश्च स्वानि

र्नेत्र-देश्वत्यविश्वान्यः भूत्रव्याद्याः । व्यत्र-क्षेत्र-देश्वत्यः यात्रव्याद्याः । व्यत्र-क्षेत्र-व्यत्यः यात्रव्याद्याः । व्यत्र-क्षेत्र-व्यत्यः यात्रव्याद्याः । व्यत्र-क्षेत्र-व्यत्यः यात्रव्याद्याः ।

धिःर्रवाक्षेत्रं त्रिः वर्षेत्रं वर्षेत्यं वर्षेत्रं वर्षेत्रं वर्षेत्रं वर्षेत्रं वर्षेत्रं वर्षेत्रं वर

त्रम्भः श्रीम्थः स्थाः हिमाम्याः प्रमायाः प्रमायः प्

र्नेन या न श्री न या श्री न या न

त्रभागवे भुःश्वीम् । यद्द्रम् विद्याः भ्रित्यः भ्रित्यः

বা ধ্রুঅ'ম'(देवे অব দ্বাবাদা) আ'বা ধ্রুমা

धेःर्रेयःर्देवःयःवर्धः नवेःकुयः ग्रीःयवः न्याया र्देवः न्टः इसः वेशः श्रः सः ठेयाः ठरः वर्धेवः पवेः यवः न्यायाः पर्वे।

५८.स.(म्रे.स्व.स्व.व.व.स.चव.क्व.मी.वव.र्याचा.स.)य.यहेश

न्यायात्म अत्यस्य भन्ता न्वायस्य वर्षे ।

८८मू (रवावात्त्रक्ष्यत्त्रम्वन्त्रः) याष्ट्रम्या

₹

भ्रेन्थ्य अस्त्रिः स्वायाः स्व

५८:में (क्वें स्याम द्वें साम क्वें न प्रति कुमाया वन प्रमाया माना प्राप्त किया

चयः नर्गे न्यः न्यः हिन्यः श्रूनः नर्गे । न्यः में (चयः नर्गे न्यः) दे।

> व्यायाने स्वर्गाया ने साञ्चे सामदी। व्यायाने साची साचन साम

ध्ययःगविवःयःवे त्ये त्यु र व्या

र्म्न क्षेत्र ने ने नियम विष्य ।

र्नेत्रायादर्श्वरायति क्षेत्राचित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्या त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षे

चयाःस्।

म्दायादि। विशेषाक्त स्त्री विशेषाक्ष्य स्त्री विशेषा स्त्री स्त्री विशेषा स्त्री स्त्

र्यः त्यात्रः मिलियः इस्यान्यः विश्वान्यः विश्वाः मिलियः विश्वाः मिलियः स्थाः विश्वाः स्थाः स्थाः

ग्रवाबितः इस्रायम् भेरान्यावस्य स्वावन्य स्ववन्य स्वावन्य स्वावन्य स्वावन्य स्वावन्य स्वावन्य स्वावन्य स्ववन्य स्वव

म्बर्यान्तरे सेस्यान्तिम्। व्ययम्पन्तरे सेस्यान्तिम्।

यदेन्द्री गुद्राचिदेन्द्रस्यायम् भेसान्यायेद्राचे प्रदेशम्य विकासम् विकास्य विकासि स्वित्ता स्वता स्व

ने भ्रामान्य प्रमानित भ्रामानित भ्रामा । अकुर या या प्रमानित भ्रामानित भ्रामानित भ्रामानित भ्रामा । भ्रामानित भ्राम

णिन् श्रू-र्याण्याची त्रह्मां संस्कृत्या संस्कृत्या संस्कृत्या संस्कृत्या स्वाप्त स्य

महिश्रासं(देश्याईन्ध्राः)दे। धिन्याहेगाधिव्यद्धिन्यावव्यत्यदि। क्याश्रास्यावव्यत्थाक्षेय्वेदिः द्येन्। भेश्रामावव्यक्षे क्षेय्वेद्याः

है ज्ञान पंत्र में भेट हुय ख्रव रंब है जे जि मान है ने भित्र है मान प्राप्त है मान प्त है मान प्राप्त है मान प्त है मान प्राप्त है मान प्राप

यायम् हेगाउम् यज्ञूम् श्रेम् विमा

वस्रशं उर् के पाव्य हैं ग्राशं शे दशुरा

सक्द्रमान्यते भ्रेम्।

स्वायान्यत्र स्वायान्य विष्यान्य स्वयाः विष्यान्य स्वयाः विष्यान्य स्वयाः विष्यान्य स्वयाः विष्यान्य स्वयाः विषयः स्वयाः स्वयाः विषयः स्वयः स्वय

मन्याधिनःध्वारम् अस्य स्वान्य ।

ख्र-न्द्र-व्याप्तः भ्रेम् व्याप्तः भ्रेम् व्यापतः भ्रेम व्यापतः

गठिगायश्चा ज्ञानायिवायीत्रवदरा।

होत्रप्राधित्रपाठियात्यश्चात्रपाठियाः धित्रप्रश्चात्रेश्चात्रप्राधित्रप्रश्चात्रेश्चात्रप्राधित्रप्रश्चात्रेश्च श्चेष्ठात्रप्राधित्रच्चा वित्र

> डे'क्ट्र-'सर'से'नु'स्या सर्वेन्।। देस'ग्रीक'ग्रट'नुक्र'सेन्'वश्चर'ने।। डेक'ग्रट'ग्रे'त्वप'सेन्'हेन्द्री।

डेन्द्रम्म्यम् अग्वेन्न् अग्वः त्रुं स्यायाः स्यायः स्

वर्देशासुशास्त्रेशासुगान्वन्याधित्।।

धेन् ह्या प्राचित्रा विश्व श्री श्री न्या प्राचित्र विश्व श्री व्या प्राचित्र विश्व श्री क्ष्र प्राचित्र प्राचित्र

मायाने तर् हो रायमाणा

रेग्रथं राज्य राज्य रो ग्राय है। यह ग्रामी र्थे व रहत राज्य रोज्य राज्य रोज्य राज्य राज्य

ने अ'वे 'वज्ञ अ'तु 'च श्री द्रा 'द्रा दे 'च्रा दे 'च्री द्रा दे 'च्री दे

ने भी या प्राप्त के स्वाप्त के स

ব্যুদ্রেশ্ব

क्रुंग्नाराययाञ्चे यादेयापया

वे व

र्त्ते.कं.कंट्र.जंश्यश्चर्या

.....थेव ॲं ५ वर्ने ५ र छेना।

नेश्वासी स्रित्ते नेश्वासी स्थान स्

गहिरामा (क्षु व्यवस्य विद्यास्य से स्य प्राची क्षिया विद्यास्य स्था विद्यास्य से स्य प्राची क्षिया विद्यास्य से स्य प्राची क्षिया से स्य प्राची क्षिया से स्य प्राची क्षिया से स्था क्ष्य क्षिया से स्था क्षिय से स्था क्ष्य से स्था स्था से स्था क्ष्य से स्था स्था स्था क्ष्य से स्था स्था स्था से स्था स्था से स्था से स्था स्था से स्था स्था से स्था स्था स्था स्य

ह्यें स्थाय हो स्था हो स्थाय हो स्था हो स्थाय ह

गाब्द था गाब्द के दा भे दा भी दा भी

श्रूरः न मा बुरः न स प्येत से दि ।

क्रसेन्यथास्र स्वायासेन्।

णुषान्तरात्र श्री सूरानार्र वहें वान्तर सेंदे सरें वास्त्र श्रुस श्री

या बुदः निर्दे ने साधित निर्दे ने स्त्री स्

महिरामा (देवे यह द्वावाय)दे।

म्बेट्स्ट्रिंग्यं केट्स्य विष्ट्रिंग्यं विष्

म्यानि विश्वास्थायां तुश्वासामित्रश्वास्य विश्वासाधीः स्रितः म्यानितः विश्वासाधीः स्रितः म्यानितः विश्वासाधीः स्रितः म्यानितः म्

नेश्वराष्ट्राया के शास्त्र विश्वराय है। यह स्वराय है। यह

भेश्रास्त्र प्रहेत् होत् प्राम्बेत्र महित्र महित्र

नेशम्भार्थिक्षात्रक्ष्र्याच्या नेशम्भार्धिः स्वत्रम्बर्मित्रम्भारे

रहित्राचे त्रित्राचे त्रित्राचे

र्वे ज्ञान्त्र कुन् ग्री ने ना पाइता वर्षे प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्रापत प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त

याञ्चयाश्वर्शयाश्वर्षः स्थाप्यत्ते। ।
याञ्चरः त्रवेदः स्थाप्यत्वः स्थाप्यत्ते। ।
स्थाप्यत्ते स्रित्रं स्थाप्यत्यस्य स्थाप्यत्ते स्यत्यत्यत्यत्ते स्थाप्यत्ते स्था

यदी भी देव न निष्य ने श्वर में स्थान हैं स्था

श्रुंते देव देव श्रुंत भी देश हो देश सम्देव श्रुंत श्रूंत श्रुंत श्रूंत श्रूंत श्रूंत श्रूंत श्रूंत

भ्रम्। व्याप्त स्त्राच्या स्त्रा

गाञ्चनारु से गाञ्च स्थान स

ध्रेशः भ्रेशः यादे छे विया प्रिमा

गहेशमः(६वनक्षानः)दे।

ने श्री र र र त्रिं त्र हैं व त्र श्रु र त्र । ने श्रा श्रमा र परि श्री हैं परि श्री र त्र । मार प्येव र ने श्रिन पर हैं व प्रश्री र र ता । ने श्रा व र ने व गावव हैं मा श्रा श्री प्रश्री ।

र्त्तुर्भः स्थाः त्रिः श्रीत्रा देशः विद्याः विद्याः

ग्राह्म म्राह्म स्थान स्

धिर्-र्रे बे'वा चिर्-र्रे बे'वा

यत्रभात्रः वियागाठेया यश्याठेया।

त्रायाधेत्र प्रत्याव्य प्रस्था व्रायाधित । या स्था क्षेत्र प्रत्याव्य विषय । या स्था विषय । या

यगुरायदेग्। यग्रमागुःसयाकेरास्यामे कु.मेवानुःसाकेषा

र्दे त है भूर गडिया यश रु स यहुर वेश न हैं र डे ता

याठेया'ग्रदःकेंयायायातेयातेयात्र्यः हो । दे'वे'त्'या होद'ठेयायाहेंद्रा ।

त्रभायः उत्तायश्चित्रं व्यावितः प्रते व्यावितः प्रते प्रत्या वित्रं प्रत्य वित्रं वित्

यायाने हिंगान्त दें तार दें।

इसानेशक्षायहित्यत्युरात्।

यायाते। र्हे श्री सायावदाश्चित्रा श्री में या श्री में त्रा मित्रा स्था से स्

शृष्ठिमःश्वरः वाउवारेतः विद्या । नश्चिमःश्वरः वाउवार्याः । ह्याः तुः से स्राची श्वरः विद्याः । नश्चिमः से स्राची श्वरः विद्याः । नश्चिमः से स्राची श्वरः विद्याः ।

याडेया'ग्रह'योडेश'याडेश'श्रह'यह'द्याह्य ।

अया डेमा सुं में अं सदे छे। या डेमा ग्राम्य स्वतं मिहेश महिश्य सुः श्रूमः नमः त्र गुमः नमः मया अया निष्ठित । यो डेमा ग्राम्य स्वतः स्वेश स्वयः मिहेश महिश्य सुः श्रूमः स्वयः स

गहेशःसः(देवाशःसःवाववःवश्रृवःसः)द्री

गयाने ध्ययान्त्र वर्षे नात्रा

न्यात्रस्य श्राश्चित्रं सेवावा

मायाने। ध्ययामान्न भ्री में यायाय वर्षा नाया ने स्त्री मायाये हैं। यायाने स्त्री स्वायाये स्वायाये स्त्री स्वायाये स्वाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वाये स्वायाये स्वाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वायाये स्वाये स्वये स्वाये स्वाये स्वये स्वये

यावव मी अरहस्य शुं श्री द्वा प्राप्त विद्या

यालवःश्रीशःश्रीमः सम्बन्धः साधिवः वा ।

ग्याने। र्रा रेपाये ग्यानिव क्षेत्र क

म्या म्या म्या म्यान्या स्वत्या स्वत्य स

धेरा

देश्यम् वित्व स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

নাপন, ফ্রি.প.রীব.মՀ.৫রীՀ.গ্রী

ग्रयान्य प्रत्येत्र प्रत्ये प्रायान्य स्रित्।

स्टाम्बर्यायम् वितासम्बर्या स्टाम्बर्यायम् वितासम्बर्या स्टाम्बर्यायम् वितासम्बर्या स्टाम्बर्यायम् वितासम्बर्या स्टाम्बर्यायम् वितासम्बर्यायम् वितासम्बर्यायम् वितासम्बर्धाः वितासमानित्रं वितासमानित

नायाने नाययानरायान्याना ग्राम्या

ग्रयान्यस्य वर्षे वर्षे वर्षे व्यक्षयान्य वर्षे राष्ट्री

ळॅट्र अ.ली.च्यूच्य च्यूच्य च्

बर्ट्स्स्यास्यात्र्येत्रास्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः स्वत्रात्र्यात्र्

भेगार्ते र-५८-छन् भूगार्भेन छे प्रदोष नग्न प्रत्न प्रत्न प्रत्न स्थान है प्रति प्रत